Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी प्रचार–प्रसार सोसायटी का उपक्रम

साहित्यिक त्रैमासिक
दिसम्बर 2018

एक प्रयोग

बरोह

संपादन:
शुभदर्शन

सच्चाई से टकराती कल्पना

राज कुमार कुंभज
चंद्र भार्गव
डॉ. धर्मपाल साहिल
सिद्धेश्वर
डॉ. रमेश ''मयंक''
रुपेन्द्र पटेल
राजेन्द्र उपाध्याय
उपेन्द्र कुमार मिश्र
सुशांत सुप्रिय
डॉ. सुरेश नायक
रामबहादुर चौधरी 'चंदन'
सलीम अंसारी

संस्कृति

डॉ. विनोद तनेजा

सच्चाई का दर्शन

प्रो. डॉ. सुधा जितेंद्र
डॉ. अतुला भास्कर
डॉ. पंकज साहा
डॉ. रजनीकान्त एस. शाह
डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

खिड़की के पिछवाड़े से

पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'
डॉ. राहुल मिश्र

भावनाएं अछूती रहीं

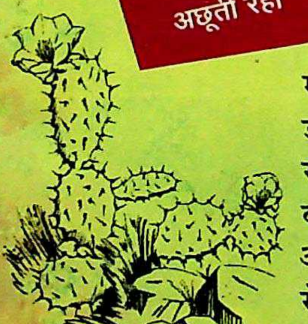

महेश शर्मा
डॉ. मनोज प्रीत
रजनी शर्मा बस्तरिया
वीना विज
आनंद बिलथरे
रोहित यादव

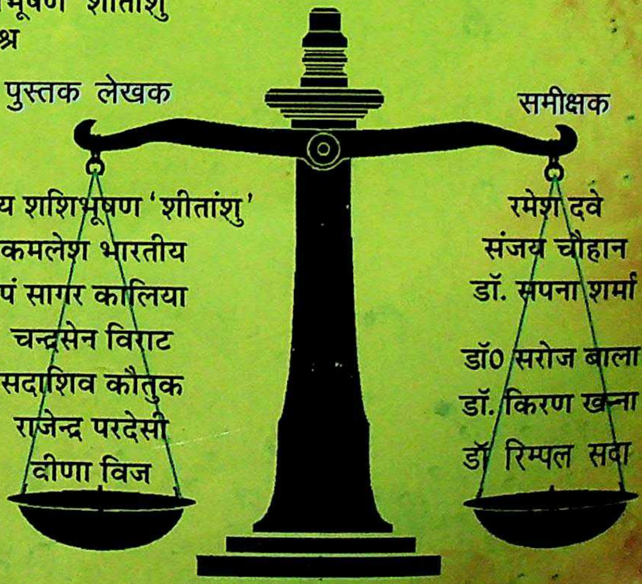

पुस्तक लेखक	समीक्षक
पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'	रमेश दवे
कमलेश भारतीय	संजय चौहान
पं सागर कालिया	डॉ. सपना शर्मा
चन्द्रसेन विराट	डॉ0 सरोज बाला
सदाशिव कौतुक	डॉ. किरण खन्ना
राजेन्द्र परदेसी	डॉ रिम्पल सदा
वीणा विज	

प्रेषक:
7– फ्रेंडस कॉलोनी, पीछे सेक्रेड हार्ट स्कूल,
मजीठा रोड, अमृतसर-143001

Book Post
Printed Books

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Manoj Bansal
9888753921

BANSAL® BAKERS

Gift Packs

Dry Fruit

Special Arrangement For Kitty Parties Birthdays & Other Small Functions

Home Made Chocolate

Outdoor Bakery Counter also Available

14-C, Lawrance Road, Amritsar-143 001
: 97807-53921, 98889-73921
e-mail : bansal_bakers@yahoo.com www.bansalbakers.in

श्रद्धांजलि

विख्यात गीतकार
गोपाल दास नीरज

सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार
चन्द्रसेन विराट

अपने अपने क्षेत्र में अमूल्य योगदान देने वाली ये विभूतियां अब हमारे बीच नही रहीं। हिन्दी प्रचार प्रसार सोसायटी इनके योगदान को याद करते हुए इन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी प्रचार–प्रसार सोसायटी का उपक्रम

एक प्रयोग

बरोह

साहित्यिक त्रैमासिकी
दिसम्बर 2018

Book Donated By Agnishekhar & Kshama Kaul

सम्पादन : शुभदर्शन
मो: 9417290544
सहयोग : बलविंदर अत्री

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.... 3980
Dated 9.12.2023

सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 200 रूपये
पांच वर्षीय : 1000
आजीवन : 2000
संरक्षक 5000
Hindi Parchar Prasar Society (Reg.)
Canara Bank, Majitha Road, Amritsar
A/c No. : 2082201002920
IFSC Code : CNRB0002082

शब्द संयोजनः
देवेन्द्र शर्मा, विजय शर्मा

मुद्रक :
द डॉन प्रैस,
कटड़ा शेर सिंह, हाल बजार, अमृतसर

रचनाएं, फोटो, परिचय भेजने का पताः
7- फ्रैंडस कॉलोनी, पीछे सेक्रेड हार्ट स्कूल,
मजीठा रोड, अमृतसर-143001
E-mail : barohhindi@gmail.com

इस अंक में — पेज नंबर

संपादकीय

स्वार्थ के हमले में छटपटाता साहित्य — 5-6

सच्चाई से टकराती कल्पना — 7-28

मोहन भारतीय — 8
राज कुमार कुंभज — 9-10
चंद्र भार्गव — 11-12
डॉ. धर्मपाल साहिल — 13-14
सिद्धेश्वर — 15
डॉ. रमेश ''मयंक'' — 16-17
रुपेन्द्र पटेल — 18
राजेन्द्र उपाध्याय — 19-20
उपेन्द्र कुमार मिश्र — 21
सुशांत सुप्रिय — 22
डॉ. सुरेश नायक — 23-24
रामबहादुर चौधरी 'चंदन' — 25
सलीम अंसारी — 26
जितेन्द्र श्रीवास्तव — 27-28

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच्चाई का दर्शन **29-60**

प्रो. डॉ. सुधा जितेंद्र 31-33

भावना सरोहा 34-40

डॉ. अतुला भास्कर 41-44

डॉ. पंकज साहा 45-49

डॉ. रजनीकान्त एस. शाह. 50-54

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी 55-58

स्वाति श्वेता 59-60

भावनाएं अछूती रहीं **61-80**

महेश शर्मा 63-69

डॉ. मनोज प्रीत 70-72

रजनी शर्मा बस्तरिया 73-75

वीना विज 75

आनंद बिलथरे 76-78

रोहित यादव 78-79

जगदीश राय कुलरियाँ 49

खिड़की के पिछवाड़े से **81-94**

पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' 83-88

डॉ. राहुल मिश्र 89-94

संस्कृति **95-101**

डॉ. विनोद तनेजा 97-101

पैमाना **103-122**

कथा कहो उर्वशी : राजी सेठ का कथाकर्म (पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु)

यादों की धरोहर (कमलेश भारतीय)

कतरा-कतरा सागर (सागर पंडित)

साजिश के चलते (सदाशिव कौतुक)

इस जिन्दगी की जय (चन्द्रसेन विराट)

हिंदी की विश्वयात्रा (राजेन्द्र परदेसी)

सन्नाटों के पहरेदार (श्रीमति वीणा विज)

Book Donated By Agnishekhar & Kshama Kaul

बरोह में प्रकाशित सभी रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनसे सम्पादक, प्रबन्धन का सहमत होना आवश्यक नहीं। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र अमृतसर रहेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Book Donated
By
Agnishekhar & Kshama Kaul

स्वार्थ के हमले में छटपटाता साहित्य

आज साहित्य छटपटा रहा है। साहित्यकार बेचैन, महत्वाकांक्षी या निराशा में है। यह बैचेनी है कोई कालजयी रचना नहीं दे पाने की, सम्मानित पुरस्कृत होने की। जिस रचना का आधार ही महत्वकांक्षा हो वह कालजयी हो भी नहीं सकती। ऐसी रचनाओं में दर्द तो स्पष्ट दिखाई देता है लेकिन वह आन्तरिक, आत्मिक, बहुजन हिताय, जन कल्याण के लिए उपजा न होकर भौतिक सुख सुविधा पाने का है। होड़ लगी है, एक भीड़ है जो अंधानुकरण में लिप्त है। नाम, शोहरत के लिए भी साहित्यिक वाटिका में नकल चोरी की गंदगी फैलाते हुए, पिछलग्गुओं की जमात खड़ी करके सत्ता की सीढ़ी से 'मठ के मचान' पर चढ़ कर मठाधीश बनने में विशेषज्ञता हासिल करने की दौड़ में हैं। ये लोग आगामी पीढ़ी को विषाक्त कर रहे हैं। जैसे एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है, वैसे ही ये कोढ़ के कीटाणु, फूलों के पराग में मिला कर वातावरण को दूषित कर रहे हैं। हालांकि साहित्य में निराशा, परकीयाकरण, खिन्नता कोई नया विषय नहीं। आदिकाल से ही ये सब साहित्य के उपादान रहे हैं। बल्कि यूं कहें कि साहित्य के आंतरिक जनक रहे हैं। घुटन, चीत्कार ही संवेदना की सीढ़ी चढ़ कर साहित्य में परिवर्तित हुई है। क्रौंच-वध की पीड़ा महर्षि वाल्मीकि की अन्तचेतना को झकझोरती हुई उनसे महाकाव्य की रचना करवाती है तो सत्ता से उपेक्षित और पत्नी प्रेम से उदासीन तुलसीदास से महान् ग्रंथ राम चरित मानस लिखवाती है। अभाव तो शुरू से ही रहा। उसकी पुष्टि तुलसीदास ने की। उन्होंने लिखा है, कौआ मोती चुग रहा है जबकि हंस... । यह स्थिति आज भी है। बहुत से साहित्यकार आज भी भूख में मर रहे हैं। सरकारी अनुदान, सुविधाएं उनसे कोसों दूर हैं जबकि चापलूस किस्म का 'माफ़िया' उन पर काबिज़ है। सभी ऐसे नहीं पर जब ऐसे लोगों का प्रतिशत बढ़ जाता है तो पूरा कुनबा बदनाम होता है। वर्तमान में स्थिति कुछ ऐसी ही है। यही छटपटाहट लेखकों को बेचैन कर रही है। जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट है। लेखक, समाज में एक आदर्श स्थापित करते हैं परंतु स्थिति विपरीत है। आज वे आदर्श नहीं खुद को स्थापित करने के 'जुगाड़' में हैं। समय-समय पर आए आंदोलन इसका उदाहरण हैं वरना इनके दौरान कालजयी रचनाएं पाठकों के सम्मुख आतीं। मेले के शोर-शराबे में अपनी-अपनी डफली बजा कर अलोप हो गए। अपने समय में एक गुट बनाया, साहित्य पर हमला किया और उसके अवशेष छोड़, इतिहास के पन्नों की संख्या बढ़ा दी। इस दौरान अच्छे लेखक भी प्रभावित हुए। अच्छी रचनाएं तो दीं लेकिन एक आंदोलन विशेष का ठप्पा लगवा लिया। हश्र वही हुआ जो होना था। विपक्षी या किसी अन्य गुट ने न तो उनको मान्यता दी और न ही संबंधित रचना को सम्मान मिला जिसकी वह हकदार थी। राजनीति में साहित्य जाए या साहित्य में राजनीति, दोनों तरह साहित्य का नुकसान है। कालजयी साहित्य आज भी नैतिक मूल्यों पर टिका है जबकि राजनीति ने इन मूल्यों का जो खात्मा किया है, वह किसी से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छिपा नही। विडंबना है कि जिन्हें राजनीति ने अपने आगोश में लिया वे कुछ समय के लिए तो हवा में उछले परंतु शीघ्र आत्मिक रूप से धरा पर गिर खुद धूल चाटने वालों में महसूस करने लगे। कालीदास ने स्वयं स्वीकारा, उन्हें राजनीति रास नहीं आई।

पत्थर युग में लोग कबीलों में रहते थे। शिकार, कंद-मूल और एक दूसरे पर हमला कर हराने, यहां तक की इंसान को भी मार कर खा जाने का चलन था। असभ्य थे लोग, लेकिन धीरे- धीरे उनमें संवेदनाएं परिवर्तित हुई। एक-दूसरे में सहयोग शुरू हुआ। आपस में लड़ने -झगड़ने के स्थान पर कुछ नियम बने, उनमें बंधना शुरू किया। एक लंबी प्रक्रिया के बाद सभ्य समाज का रूप सामने आया। अब प्रकृति का यह चक्कर फिर से उल्टी दिशा में घूमता प्रतीत हो रहा है। पत्थर-युग में लोगों का स्वार्थ केवल पेट भरने तक का था जिसके लिए मानव भी उनका भोजन बन जाता था। स्वार्थ आज भी अपनी चरम सीमा पर है। विज्ञान ने उसे बहुत-सी समझ दी है। सभ्य कहलाते हुए उसे अब किसी विपक्षी/विरोधी या स्वार्थहित किसी शरीर भक्षण की जरूरत नहीं। अवधारणाएं बदल गई हैं। अपनी हुकूमत, अपने झंडे तले अन्य को लाने, मानसिक शोषण करने के बहुत हथियार विकसित कर लिए हैं। गुरु-शिष्य परंपरा हो या कोई अन्य सामाजिक व्यवस्था, सब अपने अनुरूप चलाने की सोच बलवती है। समाज के दर्पण साहित्य में ये बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहा है। मठाधीशों की अपनी सीमाएं हैं और शरणागतों एवं किसी न किसी की शरण में जाने वालों की अपनी, पर छटपटाहट हर एक में है। जरूरत है इस छटपटाहट को सार्थकता की ओर मोड़ने की। सवाल यह है कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे? वर्तमान परिस्थिति के हमाम में नंगों की संख्या बढ़ती जा रही है। सरकारी संस्थान पहल कर सकते हैं, यदि उनसे चापलूसों, राजनैतिक दबाव का जाल हटाया जाए। फिलहाल तो ऐसे संस्थानों में कार्यरत लोग या तो भाई -भतीजावाद में जकड़े हैं या लगातार बढ़ते राजनैतिक दबाव में अपनी नौकरियां बचाने में लगे हैं। सभी ओर अंधेरा हो, ऐसा भी नहीं है। कुछ सार्थक लिखने की छटपटाहट से भी साहित्य सूना नही है। 'होड़' में संलिप्त रचनाकारों को वैसे साहित्यकारों को आदर्श बना लेखन करना होगा। अपनी आन्तरिक छटपटाहट को सतही स्वार्थ के लिए सौदेबाजी में न उलझा कर सही दिशा में और समाज में आदर्श स्थापित करने की ओर लगाना होगा। पत्थर-युग की ओर जा रहे स्वार्थ के अंधे कथित साहित्यकारों के चंगुल से तार-तार हो रही साहित्यिक मर्यादा को बचाना होगा।

समय कोई भी हो वस्तु-स्थिति समान है। आज़ादी से पूर्व और बाद तक गुजरात की दो महान विभूतियां महात्मा गांधी और सरदार पटेल हिंदी की वकालत करते रहे। हुआ क्या ? वही ढाक के तीन पात और हिन्दू-हिंदी-हिन्दोस्तान के नाम पर लोगों को गुमराह किया राजनीतिज्ञों ने। हिन्दी-हिन्दू के लिए कट्टर मानी जा रही पार्टी के हाथ में सत्ता है। बहुत दावे-वादे किए जाते हैं--सच्चाई से कोसों दूर।

नरेंद्र मोदी जो करीब 15 वर्ष तक महात्मा गांधी और सरदार पटेल के प्रांत गुजरात के मुख्यमंत्री भी रहे, आज प्रधानमंत्री हैं लेकिन गुजरात में भी हिन्दी को वह सम्मान नहीं मिल पाया। गुजरात के एक अध्यापक हस मुखभाई वी.परमार जो श्री आर.पी गर्ल्स हाई स्कूल में हैं, का हिन्दी के लिए उमड़ा दर्द आप से सांझा करना चाहूंगा: ''मैं 28 साल से कक्षा 12में हिन्दी विषय पढ़ा रहा हूँ ... अंग्रेजी ही अनिवार्य विषय के तौर पढ़ाई जा रही है। जहाँ मातृभाषा और राष्ट्रभाषा पढ़ने-लिखने में छात्रों को दिक्कत हो रही हो ऐसे गुजरात के शिक्षा माहौल में अंग्रेजी की अनिवार्यता कितनी योग्य? भारत के प्रधानमंत्री गुजरात के होते हुए भी कक्षा 5 से कॉलेज तक हिन्दी गौण विषय के रूप में पढ़ाई जा रही है और अंग्रेजी को अनिवार्य विषय के रूप में। ये गुजरात की वास्तविकता है।

कुछ ऐसी ही कम या अधिक यह स्थिति अधिकांश अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में है। हिन्दी भाषी क्षेत्रों पर तो चल रही मठाधीश परम्परा की चर्चा पूर्व के अंकों में कर ही चुके हैं।

— शुभदर्शन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच्चाई से टकराती कल्पना

राज कुमार कुंभज
चंद्र भार्गव
डॉ. धर्मपाल साहिल
सिद्धेश्वर
डॉ. रमेश ''मयंक''
रुपेन्द्र पटेल

राजेन्द्र उपाध्याय
उपेन्द्र कुमार मिश्र
सुशांत सुप्रिय
डॉ. सुरेश नायक
रामबहादुर चौधरी 'चंदन'
सलीम अंसारी
जितेन्द्र श्रीवास्तव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्लाट नं.17, सड़क5ए, मैत्री नगर
भिलाई, जिला दुर्ग (छ.ग) 490006

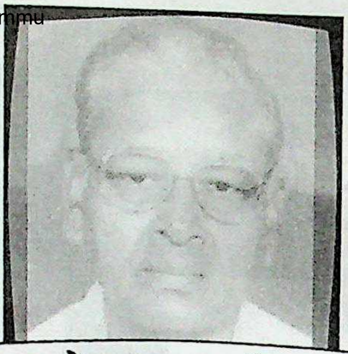

मोहन भारतीय

गीत

मैंने सारे अंधियारे को पीने का संकल्प लिया है
मुझको यदि मिल गई सुबह तो पहली किरण तुम्हें दे दूंगा
मां उन सबके लिए लडूंगा
जिनको नहीं मिला उजियारा।
तूफानों से जीत गये पर
तट ने जिन्हें नहीं स्वीकारा।
मैंने जीवन भर पतझर से पगपग पर विद्रोह किया है
मुझको यदि मिल गई बहारें, सारा चमन तुम्हें दे दूंगा।
मेरे युग के लक्ष्मण को अब
बहकाना आसान नहीं है।
मेरे आदर्शों के आगे अब
कोई बलवान नहीं है।
मैंने जग के हर रावण से लड़ने का संकल्प लिया है
जीत गया तो, एक नई मैं तुझको रामायण दे दूंगा।
मैंने कभी किसी से कुछ भी
अपने लिए नहीं मांगा है।
मैंने अभिमन्यु बनकर के
दुखों का सागर लांघा है
मैंने दुखों के कौरव से आजीवन संघर्ष किया है,
मैं यदि सफल हुआ तो अपने बढ़ते चरण तुम्हें दे दूंगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'चौथा सप्तक' के प्रमुख कवि। पहली कविता कब लिखी कुछ याद नहीं। सामाजिक और व्यवस्था के जड़ मूल्यों में कोई विश्वास नहीं। छात्र राजनीति में सक्रिय भाग लेने के कारण पुलिस द्वारा त्रस्त रहे। आपातकाल में भी पुलिस परेशान करती रही। सामयिक विषयों पर लगातार लिखते आ रहे हैं। पत्र पत्रिकाओं, विभिन्न संकलनों में कविताएं छपती आ रही है।

331, जवाहर मार्ग, इन्दौर 4052002

फोन 07312543380

राज कुमार कुंभज

प्रेमजल

प्रेम-जल हूं टकराऊंगा
थप-थप चीरते हुए सीना चट्टान का
इस पार से उस पार चला जाऊंगा
कि जिस पार लहलहाना है मुझे
और गुनगुनाना है खेतों में
हरे के लिए
हर किसी भी भूख के विरुद्ध
और हमेशा हमेशा बिखरते हुए
अपना हृदयस्थ प्रेमजल

सबसे कठिन प्रश्न है प्रेम

सबसे कठिन प्रश्न है प्रेम
लेकिन अगर सबसे सरल है कुछ भी
और इस दुनिया में तो प्रेम ही
प्रेम मज़ा नहीं सज़ा है किंतु कोमल
काटोगे तो जानोगे
वर्ना जिंदगी भर पछताओगे
इसीलिए सोच रहा होता है ईश्वर
कि उसने क्यों नहीं किया प्रेम
क्यों नहीं पाई सज़ा?

प्रेम के बंदे हज़ार

प्रेम के बंदे हजार
इधर-उधर देखो तो हत्यारे चार
चार लाचार ये, वे, वे और वे भी
जो करते रहे दावा कि नहीं शामिल
किसी भी साज़िश में
उठाते रहे धर्मग्रंथ
अपने-अपने गंदे इरादों के साथ
मुश्किल की घड़ी थी
मुश्किल बेहद बड़ी थी
बीच में कानून-कायदों की छड़ी थी
फिर भी थी हिम्मतें कि लड़ी थी
हों हिम्मतें तो हारती हैं क्रूरताएं
क्रूरताओं के हारने से
हर हाल लहलहाती हैं पृथ्वी की अनंतताएं
पृथ्वी की अनंतताएं बची रहें,
बचा रहे प्रेम
प्रेम के बंदे हज़ार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरा है जंगल

हरा है जंगल
हरे जंगल में हरी है आग
आग की अनुगूंजों में गूंजता है प्रेम
प्रेम में कुलाचें भर रहे हैं मृगछौने
मदमस्त है शराबियों की टोली
प्रधानमंत्री का सुनते हुए भाषण
चमक रही है स्वार्थ की चांदी
और चांदनी और चौपाल
ज़रूरतमंदों की फैली-पसरी
ज़रूरी चीज़ों के विरुद्ध
इस सबके विरुद्ध हूं मैं भी
पता नहीं कब से
अपनी आत्मा के कोनों में समेटे
और हर कहीं एक महायुद्ध जबकि बाज़ार में
बिक रही है बंदूकें, बैंगन के संगसंग
ऐसे में सपनों की ग़रज है कविता में
सपनों को चमकाने की गरज़ लिए
मैं चलता हूं, तो चलता हूं
किसी ख़ास परिदृश्य की तरफ़
बाहर पानी, मंदिर ज्वालाएं
नमक और रोटी की तरह प्रेम
अपनीअपनी धुन में बरस रहे हैं बादल
लोग ताने हैं रंगबिरंगी छतरियां
हरा है जंगल

था जो प्रेम-आकांक्षी

था जो प्रेम-आकांक्षी
बुद्धिमतों की मूर्खताओं से मारा गया
राहों पर ज़ख़्म नहीं रह गया था कोई भी
राहों पर ज़ख़्म नहीं रह पाता है कोई भी
पदचाप सैंकड़ों, परेशानियां सैकड़ों
और सैकड़ोंहज़ारों सोच-विचार वग़ैरह
रौंद ही देते हैं वह सब कुछ जो असहाय
किंतु असहाय कब हुआ प्रेम ?
और प्रेम वह जो रौंदता नहीं, रोपता है
अच्छे भरोसे की तरह जनमता है सभी में
सभी के लिए था जो प्रेम-आकांक्षी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चंद्र भार्गव

तीन साल इंजीनियरिंग कॉलेज लुधियाना में प्राध्यापन के बाद चंद्र भार्गव जीवन बीमा निगम के कर्यकारी निदेशक पद से सेवा मुक्त, किस लौ प्रीत करें (उपन्यास), चंदोवा, छन्न-छन्न बरसती चांदनी के कमल, कुछ कदम आपके साथ (काव्य-संग्रह) साहित्य को दे चुके हैं।

721, सेक्टर 8, पंचकूला (हरियाणा) 134109

ज़िदगी का अभिशाप

होता रहा है,
हो रहा है,
हो भी सकता है-
तुम भी गुज़रे हो,
उन हालातों से-।
तुम न भी सही,
तुम्हारे बाप-दादा भी
हो सकते हैं-
जो गुज़रे हों-
चक्की के पुड़ों के
नीचे से...
पलपल जीने मरने का
फ़ासिला,
तय, करते-करते-
जीए, तो केवल

जिजीविषा के बल पर।
और आज..हम..
खड़े हैं, विशाल
समुद्र तट पर
लहरों को लीलती लहरें
देख-देख कर।

-एक दूसरे को-
सर्द हवाओं के
थपेड़े, सह-सह कर
अपने ही कर्म फल की
माला फेर-फेर कर।

ज़िंदगी के अभिशाप को
ढोते हुए औरतें
दिन भर
जूठन साफ़ कर
या झाड़ू-पोंछे से
तुम्हें, सहूलतें
प्रदान कर।
और, रात को-
सिकुड़ती हैं-
बर्फानी हवाओं में
बस शेल्टर या पेवमेंट
के सहारे पड़ कर।
और चाट रही हैं सुबह शाम
वोट का अधिकार
आधार-कार्ड बनवाकर।

डेढ़ सौ रूपये किलो की
दालें देखकर
बच्चियों से बलात्कार का
दंश सहकर
सुबह-शाम थानों के
चक्कर लगाकर
यहीं हैं हमारे
मानवाधिकार के कर्णधार
और बेबाक बोलते शिशुपाल
जो कुर्सी के इलावा
या टीवी पर बहस कर
कुछ करेंगे नहीं ठांस
और प्रशासन
करते रहेंगे जोड़-तोड़
वोटगणित का फेर बनाकर

हरेक में, अपने आप में
रोष है विक्षोभ है
रोज़गार की चोट है
अपनी ही असमर्थता का जुआ
अपनी ही पीठ पर
करता है
घाव का वार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाकी सब
क्या, अधिकारी, व्यापारी
उद्योगपति
या सरकारी प्रभारी
सोते हैं-पांव पसार।

मरता, पिसता रहेगा
हमेशा की तरह
खुले में
सहमा-सा सहकता
आम इंसान
बस अनाम इंसान।।

बांधों में बंधे-हम

मुझे लगता है कई बार
मैं ही तो हूं सतलुज
जिस पर बंधा है-भाखड़ा डैम
या गया है बांध कर मुझे कारावास में
बंद
घोंट कर मेरे समस्त अरमान
एक अनेक सरिताओं का मिलन
और कर अवरुद्ध-मेरी ढ़लक
सिन्धु में मिलने की-मेरी ललक।
और हम रहते हैं-जीवन पर्यन्त
पावन, मर्यादापरक
लड़ते अनवरत भीतरी द्वन्द्व

पावन क्या है, पार्थिव क्या है
मात्र एक ओढ़न:
जिसे रहते हैं ओढ़े
रात दिन, आठों याम
और नहीं लांघ पाते
वो ऊंचे-ऊंचे बांध
और रोके रहते हैं
वो घुटन, घुमड़न
जो पनपती है अंदर
जीवन भर।

क्या परिधियों में
बांधों में बंधे रहना ही
जीवन है, जीवन सार है।
और पीते रहें-वो गरल
जो निकलती है निरंतर
मन्थन के बाद।
भीतर जो उठती है
दावानल, विकराल
और रहते हैं जलते
उसमें लगातार
कब तक?
शायद, जीवन पर्यन्त।
क्योंकि हम हैं-पराधीन
स्थितियों, परिस्थितियों, परिधियों के
और, अक्षम हैं
तोड़ने को यह बंधन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समझौता एक्सप्रैस, बॉयस्कोप, बेटी हूं ना, लिखने से पहले, ककुन (उपन्यास), नीलकंठ, किसी भी शहर में (कहानी संग्रह) नर्गिस, खुलती गांठे (लघु कथा संग्रह), अहसासों की अंजुरी में, मेरे अंदर एक समन्दर, पंखों पर उगती भौर (कविता संग्रह) के अलावा 31 पुस्तकों के अनुवादक धर्मपाल साहिल कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं।

पंचवटी, एकता एन्कलेव, लेन 2
(बूलो बाड़ी) होशियारपुर (पंजाब) 146001
मो. 9876156964, 8054001936

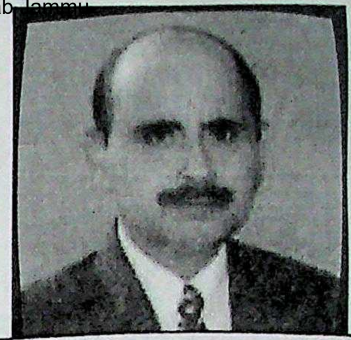

डॉ. धर्मपाल साहिल

अनचाहा पा कर भी

अगर हमें नहीं मिले वैसे पति
जैसे हम चाहती थीं
फिर भी हमने
उन्हीं के साथ बिताया जीवन
उन्हीं से पैदा किए बच्चे
मान कर उन्हें पति परमेश्वर
उनकी लंबी आयु के लिए
रखे करवा चौथ के व्रत
उनके पेट से हो कर ही ढूंढा
उनके दिल तक पहुंचने का रास्ता
हाथ पकड़ कर गंगा में डुबकी लगाते
जन्म जन्मांतर तक मांगा उन्हीं का
साथ
उन्हीं के साथ खिंचवाई तस्वीरें
हाथों में लेकर हाथ, होकर बग़लगीर
कभी भी, कहीं भी किसी से भी
कभी ज़ाहिर नहीं की अपनी
नापसंदगी
जो मिला, जैसा मिला कर लिया
खिले माथे कबूल
समझ कर किस्मत की भूल
हमने कभी नहीं टपकाई लार
दूसरों के खूबसूरत पति देखकर
न ईर्ष्या की, न की भाग्य से रार
हमें मालूम है
रंग, नैन नक्श
कद-काठ जैसा भी हो
पर होता है हाथों, होठों, आलिंगनों
के स्पर्श का एक सा स्वाद
हमने पतियों की आदतों में
ढूंढ ली खूबसूरती
यह मानकर कि
हर चमकती चीज़ सोना नहीं होती
गुण ही होते हैं इंसान के असली गहने
हमने उन गहनों से करके श्रृंगार
कर ली अपने ज़ीवन की
वैतरणी पार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी में भला

मां कहती है
जुबान सी ले
आंखें मीट कर
ज़हर का घूंट पी ले
धीरे-धीरे मिट जाएंगे
तेरी देह से दांतों, नाखूनों के खरोचों
के निशान
ये ज़ख़्म भी भर जाएंगे
धीरे-धीरे
भूल जाएगा सभी कुछ
आहिस्ता-आहिस्ता
चल उठ नहा धो ले
मार कर गंगाजल के छींटे
हो जा पवित्र
जब किसी ने देखा ही नहीं
किसी को पता ही नहीं
क्या हुआ है तेरे साथ
तो इसी में भला है हम सभी का
कि भनक तक न निकले
इस बात की
रही बात उन दरिंदों की
उसको तो सबक सिखाएगा वक्त
बस अब तू रहना सतर्क
तूं दोबारा धोखा मत खाना
उन्हें ऐसा करने का मौका मत देना।

होगा ही

खिल रही कली की खुश्बू
तो बिखरेगी ही
शबनम में नहा कर
उसकी सूरत तो निखरेगी ही
नज़रों के भंवरे उस पर
तो मंडराएंगे ही
मस्त हो कर प्रेमगीत तो गुनगुनाएंगे ही
कौन रोक सकता है
कुदरत की इस रास लीला को
कौन दबा सकता है
देह की इस काम लीला को
कौन खदेड़ सकता है
इस उमड़ते एहसास को
कौन दिखा सकता है अंगूठा
प्रकृति के इस प्रयास को।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धेश्वर

'सिद्धेश सदन'
(किड्स कार्मल स्कूल के बाएं)
द्वारिका पुरी, रोड नं.2 हनुमान नगर
कंकड़बाग, पटना-26

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार जब बन जाता है
भ्रष्टाचारियों में व्यापार...
नेता, खिलाड़ी हो या अधिकारी
उस पर जमाने लगते हैं वे
अपना अधिकार...।

तब/वह कांटों के बीच
गुलाब की तरह खिलने लगता है,
भाड़ में जाए जनता / यह व्यवसाय तो
'न्यायालय' के आंगन में पनाह पाकर
दफ्तरों, कार्यालयों से लेकर
सदन तक फलनेफूलने लगता है...।

लेकिन छोटे-मोटे चोर-उचक्को
हो जाओ तुम सावधान!
भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने के नाम पर
तुम्हारे ऊपर ही गिरेगा गाज!!
अपनी चुटकी में मसल कर रख देगा
भ्रष्टाचारियों का बाप!
'समाजवाद' के नाम पर पहले 'जनता' के सामने घड़ियाली
आंसू बहाएगा
बड़ीबड़ी मछलियों को छोड़कर तुम्हें कच्चा निगल जाएगा...
ताकि/उनका व्यवसाय फलता-फूलता रहे
भ्रष्टाचार मिटाने के नाम पर
छोटा-मोटा शिकार बनता रहे...!!!

यह कैसा गणतंत्र

यह लोकतंत्र है? प्रजातंत्र है यह
यह गणतंत्र है या है ये नेता तंत्र?
जहां/राजतंत्र की तरह
'नेता' अपनी मनमानी करते हैं
भूखों मरती रहे जनता
अभाव में चिल्लाता रहे जन
मगर/वे सिर्फ़ अपने घर भरते हैं...!

यह समाजवाद है?
मानवतावाद है, यह मार्क्सवाद है
जनवाद है यह या है यह शोषणवाद...
जहां/वाद सिर्फ़ वाद फलता है
रंग-बिरंगे वायदों से कान फटते हैं
भ्रष्ट और शोषक वर्गों में जब
अहम का रंग चढ़ता है
ग़रीब और ग़रीब अमीर और अमीर बनता है...!

सत्ता के इस खेल को
देख रहा गणतंत्र हाथ मलता है
सिर्फ़ हाथ मलता है...!!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बी8 मीरा नगर चितौड़गढ़ (राज.) 312001
मो. 09461189254

डॉ. रमेश "मयंक"

पहाड़ी जिंदगी

उधर-उस धरती पर
बर्फ़ के पहाड़ हैं,
जगह-जगह घाटियां घुटन की,
बंद मुट्ठियों में ख़ामोश जकड़न,
चुप्पी के लंबे पेड़
दुःखों की छाया बहुतायत में
और-सुखों की थोड़ी सी धूप
मजबूरियों के बीच
ढूंढने पर शायद कहीं मिले राहत।

कितना अजीब होता है-भाव
सुविधाओं के विस्तार का अभाव
जटिलताओं के जंगल
सैलानी आएंगे
विवशताओं के विस्मय के भाव दर्शाएंगे
घूम-फिर कर, मौज मस्ती के बाद
अपनी-अपनी जगह लौट जाएंगे,
आगन्तुक-पर्यटक जाते समय
अच्छा-अलविदा कहने के बाद
साहब जी, फिर कभी इधर आना,
सुनेंगे और आगे बढ़ जाएंगे।

क्या वो लेकर गए-उनके साथ
आंखों में ठहरी हुई रिक्तता
सपनों की रंगीन तस्वीर?
काश! वे देख पाते
बदहाल बदरंग जिंदगी
और अर्थाभाव के कारण तंगी।

मित्रता

प्रेत आएगा
हृदयों से निकाल कर ले जाएगा-मित्रता
दुष्ट उसे स्वार्थ के धरातल पर
खंडित कर चूरचूर कर देंगे।

चालाक आएंगे तो दोस्ती तोड़ेंगे
ख़ुदगर्ज़ दोस्ती को दाँव पर लगाएंगे
बहुरूपिए-हितैषी का स्वाँग रचकर
मांग ही लेंगे मित्रता को
दानदक्षिणा स्वरूप
डाकू मित्रवत् व्यवहार को लूट ले जाएंगे
बली राजा देवताओं द्वारा ठगे जाएंगे।

छोटे-छोटे स्वार्थ
मित्रता में मन मुटाव पैदा करने

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिलकर साथ चलने वाले
अलग-अलग दिशाओं में
अपने-अपने कदम धरेंगे
फिर-
हवाएं दूरियां बढ़ाएंगी
रूखापन व्यवहारों में
नीरसता आकर मतभेदों को
अधिक चौड़े गहरे बनाएगी
एकलव्यी निष्ठा
अंगूठा काटकर देने के बाद नहीं
पहले गुरु-गरिमा पर
प्रश्न वाचक लगा पएगी ?
बेरुख़े व्यवहार मित्रता को काटेंगे
शिष्टाचार के शब्द मित्रता को डांटेंगे
ख़लनायक नायक का मुखौटा पहनकर
कलुषित-कलंकित कर देंगे
मित्रता का इतिहास
तब भी आप करे विश्वास,

कोई हनुमान-अपने बाहुबल पर
सुग्रीव-सुदामा के पास रखे
मित्रता के बीज बचाकर हवा हो जाएगा
और शब्द साधक मित्रता को रचेंगे
कहीं कोई बिरले ही बचेंगे
जो
आदर्श मित्रों के नाम की माला जपेंगे
मैं अकेला-बचाऊंगा हमारी मित्रता को
मानव के मन-मस्तिष्क-व्यवहार में
शब्दहीन संवेदना अव्यक्त पुकार में

समय लगेगा

समय लगेगा
तह तक जाने में,
सत्य को सभी के सामने लाने में,
जो नहीं जानते, नहीं सोचते,
नहीं समझते
उन्हें प्रत्येक पक्ष खोलकर समझाने में।

समय लगेगा-
लागत-टैक्स जोड़ने के बाद भी
उतना ही जोड़कर
उपभोक्ता की जेब
किसने हल्की कराई ?

पैंतीस रुपए प्रति लीटर
पेट्रोल की कीमत
सत्तर रुपया वसूलने की योजना
किसने बनाई ?

सवाल तो खड़ा है
परंतु-उपभोक्ता अभी तक नहीं अड़ा है
समय लगेगा
जंग लगे ताले को खोल पाने में
तह तक जाने में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पारिजात भवन के पीछे,
चेरीताल, जबलपुर
मो. 9826231749

रुपेन्द्र पटेल

खेतों पर ताले

किसी दिन किसान ने भी कह दिया अगर
कि लगेंगे देश के खेतों में ताले।

अनाज-बाज़ार रहेंगे बंद,
चूल्हे सुलगने को तरसेंगे,
मंडियां रोएंगी ज़ार-ज़ार

उस दिन क्या होगा?
किसानों की दशा सुधर जायेगी?
हल हो जाएंगी समस्याएं तमाम।

नहीं! नहीं!
हो जाएगा सरकार का गिरना
आम चुनावों का होना तय।

पार्टियां आएंगी खेतों में
खुलवाने ताले
संसद में नया बिल लाने का वादा करेंगी।

अगर खेतिहरों ने कर लिया भरोसा
दे दिए वोट तो जीतने के बाद वे
वादों को जुमला बताएंगे।

ताले लगेंगे जब ऐसे नेताओं की जुबानों पर
उनकी अदृश्य कमानों पर
तब खुलेंगे किसानों की तकदीर के
खुलेंगे बच्चों के भविष्य पर पड़े ताले

"ग़रीब के बच्चे"

ग़रीब के बच्चे भी
मनाते दीवाली का त्यौहार

पूरे मोहल्ले में घूम-घूम
देखते किसने चलाए
पटाखे, अनार, चकरी,बाण,
कितने...

घर आकर बताते आपस में
ख़ूब फोड़े पटाख़े
ख़ूब चलाए चकरी, बाण...

दीवाली के त्यौहार को
यह बच्चे चिढ़ाते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्तियों की अज्ञात स्वरलिपि में, सिर्फ पेड़ ही नहीं कटते हैं, खिड़की के टूटे हुए शीशे में, लोग जानते हैं, पानी के कई नाम हैं, मोबाइल पर ईश्वर कविता संग्रहों सहित कुल 19 पुस्तके हिंदी साहित्य को अर्पित कर चुके हैं।

420, सिविटेक संपृत्ति सेक्टर 77
नोएडा 201301
rajendra.upadhyaya58@gmail.com

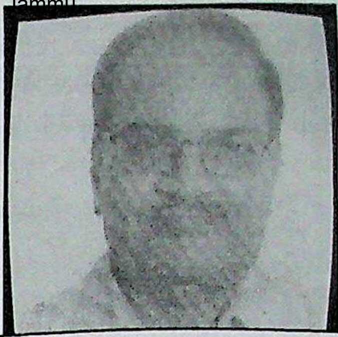

राजेन्द्र उपाध्याय

खोई हुई चीजें

मेरे पास जितनी चीजें हैं
उनसे ज्यादा मैंने खोई
उनको मैं गिन भी नहीं सकता
उनके नाम भी मैं नहीं जानता।
उनकी धुंधली सी याद अब बस बची है
मेरे मन से अब भी वे रची है।

इतने बरस हो गए उनके गए
कि अब अगर वे मेरे पास आकर बैठ भी जाएं
तो भी मैं उन्हें पहचान नहीं पाऊंगा।

बहुत हिफाज़त से रखा था उन्हें
मुझे क्या मालूम था
कि एक दिन वे इस तरह साथ छोड़ जाएंगी!

कुछ चीजें घर से इस तरह गायब हुई
जैसे घर ही उन्हें खा गया हो
जैसे वे इस संसार से ही चली गई
एक दिन वे मेरे इतने पास थीं
कि मैं उन्हें छू सकता था
अब इतनी दूर चली गई है
कि सपने में भी मैं उन्हें देख नहीं पाता।

वे मेरे इतने पास होने का दावा करती थीं
एक दिन मुझसे इतनी दूर चली गई
कि चाहकर भी मैं उन्हें पास बुला नहीं पाता।

वे दिन रात कसमें खाती थी
कि कभी कहीं नहीं जाएंगी
वे ही सबसे पहले साथ छोड़कर गई

कुछ तालों को उनकी चाबियां छोड़ गई
कुछ चाबियों को उनके ताले छोड़ गए

कुछ किताबों के पन्ने
किसी और किताब के पास चले गए
कुछ पन्ने अभी भी इस शहर में
अपनी किताबों को ढूंढते फड़फड़ाते हैं
कुछ चिट्ठियां अपने पते ढूंढती भटकती हैं।

उनके खोने के बाद ही पता चला
कि वे कितनी कीमती थीं
कि उनकी कोई और चीज
कभी भरपाई नहीं कर पाती।

एक दिन मेरे पास लौट आएंगी
मेरी खोई हुई चीजें...
इस उम्मीद में जीता हूं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो अभी मेरे पास
वे चीजें एक दिन मुझसे दूर चली जाएंगी
इसी डर में मरता हूं रोज़।

खीर

जब घर में कोई खीर नहीं ख़ाता है
तब तुम किसके लिए खीर बना रही हो ?

घर में कोई नहीं खाता
न खाए
कोई और है जो खीर खाता है
मैं उसके लिए खीर बनाती हूं

उसके लिए मैं चावल के दाने जुटाती हूं,
बीनती हूं, धोती हूं
दूध दुहती हूं
फिर एक चौड़े भगौने में चढ़ाती हूं
फिर मैं आग जलाती हूं
धीमे-धीमे आंच पर देर तक उबलने देती हूं
फिर कहीं बचाकर रखे बादाम के दो चार दाने दो
चार किशमिश डालती हूं।

दुनिया भर का शहद लाकर मैं डालती हूं
कश्मीर का केसर और कन्याकुमारी की इलायची
भी।

चांदनी रात में रात भर छत पर रहने देती हूं
उसके परोसने से पहले मैं चखती हूं चम्मच लेकर
न वह ज्यादा मीठी होनी चाहिए
न वह ज्यादा फीकी होनी चाहिए

न तो उसमें पानी ही पानी हो
न दूध ही दूध
न तो वह पतली हो न ज्यादा गाढ़ी हो।

न तो अमृत हो न रस हो
बस खीर हो
जिसमें कश्मीर से लाए केसर की
और कन्याकुमारी की इलायची की बास हो।

घर जिस पर ताला लगा है

जिस घर में यह ताला लगा है
उस घर में मेरा बचपन बीता था

उन्होंने मेरे बचपन पर ताला जड़ दिया है

मेरी दादी की लोरियों पर
मेरे दादा की कहानियों पर
मेरे भूत-प्रेतों पर
मेरे भूले-बिसरे सपनों पर
मेरी हरियाली पर
मेरी धूप पर
ताला जड़ दिया है

कोर्ट का आदेश है
उसकी अनुमति के बगैर
यह ताला न खोला जाए!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपेन्द्र कुमार मिश्र

संपादक समकालीन अभिव्यक्ति
फ्लैट नं. 5, तृतीय तल 984, वार्ड नं. 7, महरौली
नई दिल्ली110030
फोन नं. 9350899583

एक नया घोंसला

भूकंप से तबाह बस्ती में
केवल मकान ही बर्बाद नहीं हुए थे
बर्बाद हुआ था
चिड़िया का घोंसला भी
मातम और कोहराम के बीच
वह कभी
जीवित बच्चे को
पंखों में समेट लेती
तो कभी टटोलने लगती
मरे पड़े बच्चों के जिस्म में ज़िंदगी
और निराश हो
लौट जाती फिर
जिंदा बच्चे के पास
उसे चिपकाकर सीने से
निहारती रहती
मरे बच्चों को एकटक
भागती रहती यहां से वहां
बदहवास हो,
अंदर
टूट चुका था सब्र का बांध
लेकिन
बाहर नहीं निकल पा रही थी
भग्नावशेष ममता की चीख़
क्योंकि
वह नहीं चाहती थी
अपने क्रंदन से
जीवित बचे बच्चे के दुःख को
और बढ़ाना।

उन पर नहीं पड़ी
किसी बचाव दल की नज़र
कभी नहीं छपी
किसी अख़बार में उनकी ख़बर
जबकि महीनों तक मौत, आंसू और चीख़ से
भरे रहे सभी अख़बार
जब मदद न मिलने की शिकायत ले
लोग कर रहे थे धरना-प्रदर्शन
लगा रहे थे आक्रोशित हो
सरकार के विरुद्ध नारे
तब चिड़िया बना रही थी
तिनका-तिनका जोड़कर
जिंदगी के मलबे पर फिर से एक नया घोंसला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हत्यारे, हेराम, दलदल, गौरतलब क़हानियां और पिता के नाम पांच कथा संग्रह, इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं और अयोध्या से गुजरात तक दो काव्य संग्रह, विश्व की चर्चित कहानियां, विश्व की श्रेष्ठ कहानियां, दो अनूदित कथा संग्रह हिंदी समाज को दे चुके हैं। देश की कई यूनिवर्सिटीयों में इनकी कविताएं व कहानियां पाठ्यक्रमों में शामिल है और अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी, उड़िया, मराठी, असमिया, कन्नड़, तेलुगू व मलयालम भाषा में अनूदित व प्रकाशित।

सुशांत सुप्रिय

ए5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड
इंदिरापुरम, ग़ाज़ियाबाद201014

कोख़

एक दलित के आंसू देखकर
पहाड़ का हृदय पसीज गया
झरने हो गए रक्तिमसे
हवा विलाप करने लगी
नदी का जल हो गया कुछ और मैला
पेड़ों से झरने लगीं कोंपलें भी
एक कली जो खिलने वाली थी
मुरझा गई काली पड़ कर
कोख़ में ही

चश्मा

चश्मा पहने हुए मैं
खोज रहा था अपना चश्मा

संशय का नम्बर बढ़ जाने पर
जब धुंधले हो जाते हैं विश्वास
तब कहां यक़ीन हो पाता है कि
हमने चश्मा अब भी पहना हुआ है

पीड़

पीड़ा इतनी थी उसके जीवन में कि
मुस्कान में भी पीड़ा थी

उसके मन में पीड़ा
नदी के बर्फ़ से जमे जल की तरह थी

उसे पुकारना चाहा तो
उसका नाम पीड़ा का पर्याय बन गया

उसे स्नेह देना चाहा
तो उस पर पीड़ा के इतने निशान दिखे
जिन्हें मिटाना असम्भव था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिंदी विभाग
पटेल मेमोरियल नेशनल कॉलेज,
राजपुरा (पंजाब)
सम्पर्क 9501024253

डॉ. सुरेश नायक

रोशनी हो तुम

घर-आंगन
दीवारों में
फूलदान में
खाना पकने की सुगंध में
एक संसार रचाये रहती हो
फ़िक्रों में, ज़िक्रों में
मेहमाननवाज़ी में
बजटसाज़ी में
मन लगाये रहती हो

क्या होता है एकाकीपन
भूल कर
बसा लेती हो चारदीवारी
उसे घर बना कर
हमें दे देती हो

तुम देवी तो नहीं हो
पर हो वैसी ही
बिलकुल ईश्वर के वरदान सी

कविता का देश

ज़रूरी तो नहीं
कविता केवल चुनिंदा लोगों का
सरमाया हो

ये भी नहीं
कि हिसाब-किताब वालों के लिए
कविता का देश पराया हो

कविता पढ़ने और पढ़ाने वाले
लिखने और लिखाने वाले भी
हो सकते हैं कविता से बहुत दूर

क्योंकि कविता सुगंध है
स्नेह का अनुबंध है

कुछ लोग कविता लिखते हैं
कुछ कविता जीते हैं कुछ दोनों करते हैं

जो दोनों करते हैं
उनसे जग सुन्दर बनता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देखना कभी

सत्य को
महसूस करके देखना कभी
यह लकीर के इस पार
या उस पार नहीं होता

सत्य हैं शब्द
मौन भी सत्य है
संघर्ष है जीवन
तो विश्रांति क्यों है ?
कुछ भी निराधार नहीं होता ...

हाँ, सत्य को
जब होता है
लपलपाती जीभों का स्पर्श
तो इसका पहले-सा
आकार नहीं होता !

हैं बाज़ार हर ओर
हर बात शोर
बाज़ार से गुज़रा हर शख़्स
ख़रीदार नहीं होता
हर शब्द की नियति
सत्य की प्रतीति है
वो शब्द नहीं
जिसका अर्थ
उस पार नहीं होता ।

परिभाषा

क्या है जीवन
कुछ इच्छाओं की पूर्ति
या फिर जग से मिले
धन-मान-कीर्ति ?

क्या जीवन नाम है केवल दिवास्वप्न के
पीछे भागने का
या बेहोशी से
जागने का ?

क्या है ज़िंदगानी
इसकी यथार्थ कहानी ?

प्रतिस्पर्धा की निर्मम रणभेरी या कि करुणा
की चेरी ?

प्रतिघात-प्रत्यारोपण
अथवा प्रेम का दर्पण ?

स्वार्थ ?
परार्थ ?
या परमार्थ ?

क्या...
आख़िर है क्या
जीवन !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फुलकिया, बरियारपुर,
मुंगेर बिहार811211
मो. 9204636510

रामबहादुर चौधरी
'चंदन'

ग़ज़ल

हरकतसी हो रही है, जमाने की लाश में,
करवट बदल रही है वो, जीने की आस में

खोदा कुआं जो उम्रभर, पानी के वास्ते,
प्यासा मरा मिला है वो, कुएं के पास में

तरसा किए हैं हम सदा, इक बूंद के लिए,
आई नहीं कमी कभी, सागर की प्यास में

दुनिया बदल गई है यों नज़रों के सामने,
जब ज़िंदगी ने ख़ुद को ही देखा उजास में

आंखें खुलीं तो देखते ही भोर की किरण,
गूंगे निकल पड़े हैं, ज़ुबां की तलाश में

ग़ज़ल

किया कुछ और जाता है,
बताया और जाता है

अगल होता है यों किस्सा,
सुनाया और जाता है

अगल हैं दांत खाने के,
दिखाया और जाता है

जरूरत दाल-रोटी की,
खिलाया और जाता है

लिया कुछ और है लेकिन
दिया कुछ और जाता है

फटा तो दिल हमारा है,
सिया कुछ और जाता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पेशे से इंजीनियर जनाब सलीम अंसारी समकालीन ज़िन्दगी के सरोकारों को आधुनिक लबओलहजे में बख़ूबी बयान करने वाले शायर हैं। जालन्धर में रहने वाले ये शायर अपनी पारिवारिक, सामाजिक व नौकरी की तमाम व्यस्तताओं के बावजूद अध्ययन, लेखन और साहित्यिक सरगर्मियों को बदस्तूर जारी रखे हैं।

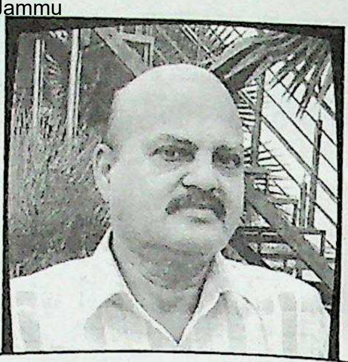

सलीम अंसारी

ग़ज़ल

1.

अनगिनत चेहरों की ताबानी से मर जाते हैं हम
आईनाख़ाने में हैरानी से मर जाते हैं हम।
बेज़मीरी का समन्दर पार कर लेने के बाद,
अपनी आंखों में बचे पानी से मर जाते हैं हम।
ढूंढते रहते हैं दिनभर अपने होने का जवाज़,
शाम होते ही पशेमानी से मर जाते हैं हम।
दश्त को गुलज़ार करते थे, मगर अब शहर में,
बाग़्बां तेरी निगहबानी से मर जाते हैं हम।
सौंप देते हैं अधूरे ख़्वाब बच्चों को 'सलीम',
और उसके बाद आसानी से मर जाते हैं हम।

2.

ज़िन्दगी कम है न जीने की तमन्ना कम है .
ख़ुद में गुम हूं कि मुझे ख़्वाहिश-ए-दुनिया कम है।
नामुकम्मिल हैं मेरे गर ख़द-ओ-ख़ाल तो क्या,
मेरे आज़र ने अभी मुझ को तराशा कम है।
चीखता है जो सर-ए-शाम शजर आंगन का,
इसकी शाख़ों में अभी एक परिन्दा कम है।
छोड़ दे साथ मेरा और किसी की हो जा,
ज़िन्दगी तुझ को अगर मुझ पे भरोसा कम है।
मेरे मरने की अजब शर्त लगा दी गई है,
टूटना मुझ को ज़्यादा है, बिखरना कम है।
ख़्वाब-ओ-ताबीर से क्या मेरा सरोकार 'सलीम',
सच तो यह है कि मेरा नींद से रिश्ता कम है।

3.

मिट्टी ही तेरे पाँव अगर बाँधे हुए है ;
फिर किसलिए सामानेसफ़र बाँधे हुए है।
लिख दी किस्मत में अजब ख़ानाबदोशी ,
एक नस्ल यहाँ पीठ पर घर बाँधे हुए है।
तूफ़ान से टकराने की हिम्मत कहाँ हम में !
हम को तो बिखर जाने का डर बाँधे हुए है।
मैंने तो हथेली पे बस एक सिक्का रखा था ,
बच्चा मेरा मुट्ठी में गुहर बाँधे हुए है।
मैं टूट के बिखरा हूं बहुत जिस्म के अन्दर ,
बाहर से कोई मुझ को मगर बाँधे हुए है।

4.

तमाम शहर को हैरत में डाल सकता हूं
मैं ख़ुद को जिस्म से बाहर निकाल सकता हूं।
मुझे अज़ीज़ है सहरा की तिश्नगी वरना,
रगड़ कर एड़ियां पानी निकाल सकता हूं।
मैं आज अपने लिए भी कहां मयस्सर हूं!
मैं कल के वादे पे दुनिया निकाल सकता हूं।
कशीद करके मैं ज़ख़्मों से रोशनी एक दिन,
ऐ ज़िंदगी तेरा चेहरा उजाल सकता हूं।
मेरा जो नींद से रिश्ता बहाल हो जाए,
तो मैं भी रोज़ नए ख़्वाब पाल सकता हूं।
'सलीम' अम्न की कोशिश में ये भी क्या कम है!
फ़िज़ा में एक कबूतर उछाल सकता हूं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रजिस्ट्रार,
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त वि.वि
दिल्ली

जितेन्द्र श्रीवास्तव

माँ का सुख

आज हल्दी है
कल विवाह होगा छोटे भाई का

छोटा-सा था कब जवान हुआ
पता ही नहीं चला
इस अवधि में हमारा घर खूब फूला-फला
पर इसी अवधि में एक दिन
चुपचाप चले गए पिता
हम सबको अनाथ कर
माँ का साथ बीच राह में छोड़कर

जो घर हँसता था हर पल
उदास रहा कई बरस

आज वही घर सजा है
उसमें गीत-गवनई है
रौनक है चेहरों पर
गजब का उत्साह है माँ में
परसों उतारेगी वह बहू
पाँव जमीन पर नहीं हैं उसके
सब खुश हैं उसके उल्लास में

आज रात जब वह सोएगी थक कर
उसके सपने में जरूर आएंगे पिता
उसको बधाई देने,
उसका सुख निहारने।

धोखा एक अदृश्य घुन है

असफलताएं तोड़ती हैं आदमी को
कुछ समय के लिए
पर धोखे तोड़ देते हैं बाहर-भीतर
सब कुछ

असफलताओं से उबर जाता है आदमी
एक न एक दिन मिल ही जाती है
सफलता की कोई पुष्प वाटिका
पर धोखे का अंधेरा
गहरा होता है किसी भी अंधेरे से
धोखा एक अदृश्य घुन है
जो पल-पल चाटता है विश्वास!

जैसे मुझे ही पुकार रहे हैं पिता

जब पिता गए
न जाने कहाँ से डरता हुआ
आ खड़ा हुआ बचपन सिरहाने

याद आया पिता का कोमल-कठोर स्पर्श
गिरते-गिरते उठा लिया जाना गोद में
कुछ फटकारें भी याद आईं

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त्वचा में सनसनाती हुई
याद आईं वे सीखें
जो अच्छी नहीं लगी थीं तब
पर जाने कब-कैसे
वे सारी की सारी समा गईं मेरे जीवन में

पिता को गए
अठारह वर्ष बीत गए धीरे-धीरे

धीरे-धीरे मैं भी
आ खड़ा हुआ
उम्र की दोपहरी में

अब मैं पुकारता हूँ अपनी बेटियों को
तो जाने क्यों लगता है
जैसे मुझे ही पुकार रहे हैं पिता
मेरी आवाज में समा कर।

किसी दिन मलय समीर की तरह

कहाँ के लिए चले थे
कहाँ पहुँचे!
पलट कर देखा
दूर कहीं धुंधलके में खड़ा था इच्छा-मार्ग

तिश्नगी किस चीज की थी
बुझी किस चीज से!
जब सोचा
याद आए पानी के कई चेहरे
बदलते मौसमों के रंग
वे जरुरतें भी याद आईं जिन्हें लाँघ न सका

यूँ ही चलते-गुजरते
जब-जब मिला कुछ
ठहर कर देखा-स्वीकारा उसे
याद आई साथ-साथ
खेत-खलिहानों में छूट गईं कुछ विह्वल इच्छाएं

अजब-गजब है यह जीवन का जादू
कभी न रुकता चलता जाता
थाह नहीं इसका
जो छूट गया
आ न सका संग-साथ हमारे
नहीं रहेगा हरदम छूटा
उठेगा किसी दिन
मलय समीर की तरह अपनी जगह से
और समा जाएगा किसी की पुतलियों में!

घर प्रतीक्षा करेगा

जो नहीं लौटे
घर उनकी प्रतीक्षा करेगा

यह सच बार-बार
झांकेगा पुतलियों में
जो समा गए धरती में
जिन्हें पी लिया पानी ने
जो विलीन हो गए धूप और हवा में
वे लौटेंगे कैसे कहाँ से
फिर भी घर उनकी प्रतीक्षा करेगा

सृष्टि में किसी के पास नहीं
घर जैसी स्मृति

घर कुछ नहीं भूलता
लोग भूल जाते हैं घर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच्चाई का दर्शन

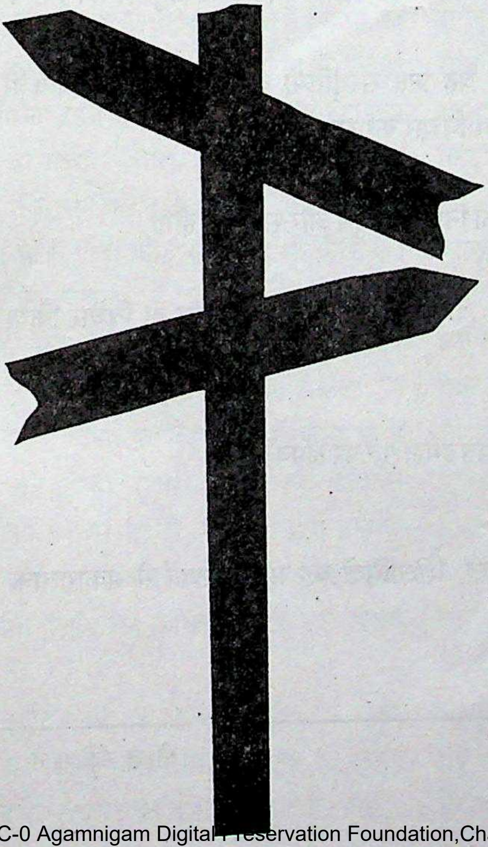

प्रो. डॉ. सुधा जितेंद्र

भावना सरोहा

डॉ. अतुला भास्कर

डॉ. पंकज साहा

डॉ. रजनीकान्त एस. शाह

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

स्वाति श्वेता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री सतपाल शकुंतला डावर स्मृति सम्मान

* पंजाब प्रदेश में रचनारत हिन्दी कवियों को दिए जाने वाले ''श्री सतपाल शकुंतला डावर स्मृतिसम्मान'' के लिए विभिन्न साहित्यकारों, शिक्षाविदों, आलोचकों व सुधी पाठकों से 20 फरवरी, 2019 तक पंजाब के रचनारत कवियों के नामों की संस्तुतियां आमंत्रित की जा रही हैं।

* पुरस्कार के रूप में 5,100/ सौ रुपए नकद, प्रशस्तिपत्र और शाल भेट किया जाता है ?।

* उपर्युक्त पुरस्कार पंजाब के वासी/अधिवासी रचनाकार के उत्कृष्ट कविकर्म को ध्यान में रखते हुए दिया जाता है।

* पुरस्कार के लिए निर्धारित चयनसमिति/निर्णायकमंडल अपने विवेकानुसार कवियों के नामों की प्राप्त संस्तुतियों पर निर्णय लेगा।
यह निर्णायकमंडल का अधिकार है कि वह प्राप्त संस्तुतियों के अतिरिक्त भी पंजाब में रचनारत किसी अन्य कवि हिन्दी के नाम पर विचार कर सकता है।

* पुरस्कार चयनसमिति/निर्णायकमंडल का निर्णय अंतिम और सर्वोपरि होगा।

* उपर्युक्त पुरस्कार के लिए 20 फरवरी, 2019 तक प्राप्त संस्तुतियों पर ही विचार किया जाएगा।

* एतदर्थ संस्तुति भेजने के लिए अधोलिखित इमेल पते पर संपर्क करें:
hispunjab@gmail.com

* पंजाब के सभी साहित्यकारों, आलोचकों, शिक्षाविदों वह सुधी पाठकों से सकारात्मक सहयोग अपेक्षित है।

सोशल मीडिया से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुधा जितेंद्र के नाम 12 पीएचडी, 50 एमफिल, 22 पुस्तकें, जीएनडीयू हिंदी विभाग की रेफर्ड शोध पत्रिका प्राधिकृत का संपादन।

अध्यक्ष हिंदी विभाग
डीन भाषा संकाय
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, (पंजाब)

प्रो. डॉ. सुधा जितेंद्र

विश्वीकरण के दौर में देव नागरी

सूचना प्रोद्यौगिकी ने आज जिस चमत्कारिक ढंग से पूरे विश्व को एक गांव में परिवर्तित कर दिया है उससे 'ग्लोबल विलेज', 'ग्लोबल संस्कृति', 'ग्लोबल मुद्रा' और ग्लोबल सिटीजन की अवधारणाओं के साथ 'ग्लोबल भाषा' की संकल्पना भी बहुचर्चित है। भाषा को केवल संप्रेषण का माध्यम समझने वाले भाषा के सतही अर्थ तक ही सीमित रहते हैं जबकि भाषा और साहित्य किसी भी राष्ट्र के भावों-विचारों, अनुभवों, सांस्कृतिक मूल्यों की समूह विरासत को न केवल सहेजते हैं बल्कि उसे राष्ट्रहित में भावी पीढ़ी को हस्तांतरित भी करते हैं। मानव सभ्यता के विकास में भाषा के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण कला लेखन ही है। मानव, शेष जगत से इसी लिए विचारों को दूसरों तक संप्रेषित कर सकता है। इतिहास साक्षी है कि मानव का बहुपक्षीय विकास भाषा को लिपिबद्ध करके ही हुआ। भाषा की उत्पत्ति मनोभावों को जहां तक संभव हो, ध्वनियों द्वारा उसको चित्रों अथवा चिह्नों द्वारा प्रकट करने के लिए हुई। इसी क्रम में भाषा और लिपि का अस्तित्व और सह संबंध स्पष्ट होता है।

भाषा और लिपि के परस्पर संबंध पर नज़र डालें तो दोनों का रिश्ता पारस्परिक है। एक ही लिपि विभिन्न भाषाओं के लिए प्रयुक्त की जा सकती है। इसी प्रकार एक भाषा किसी भी लिपि में लिखी जा सकती है किंतु किसी भाषा द्वारा जब एक बार कोई लिपि अपना ली जाती है तो उसे छोड़कर कोई दूसरी लिपि अपनाना सुगम नहीं होता। इससे उस भाषा विशेष की ज्ञान-विज्ञान, साहित्य संस्कृति की संचित राशि भावी पीढ़ियों के लिए राख़ का ढेर साबित होती है और ऐसा भाषा-भाषी समुदाय अपनी परंपरा तथा जीवन मूल्यों से हमेशा के लिए कट जाता है।

भारत की भाषा हिंदी अपने उत्पत्ति काल से ही देवनागरी लिपि में अत्यन्त सरल, सुबोध, स्पष्ट एवं वैज्ञानिक ढंग से लिखी जा रही है। दूसरे शब्दों में नागरी लिपि हिंदी भाषा की पहचान है। हिंदी भाषा की लगभग एक हजार वर्ष से अधिक की समृद्ध, समुन्नत एवं समलंकृत धरोहर नागरी लिपि में सुरक्षित है। भूमंडलीकरण के आज के दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के धड़ल्ले से आगमन, टी.वी, केबल टी.वी में परिवर्द्धन और विज्ञापन की जादुई दुनिया ने भारतवर्ष में एक अजीब सा वातावरण सृजित कर दिया है। भारत विश्व के लिए आज सबसे बड़ा बाज़ार है। विदेशी वस्तुएं, विदेशी संस्कृति जिस प्रकार डब होकर भारत के बाज़ारों पर छा गई है, उससे सबसे अधिक ख़तरा नागरी लिपि के लिए पैदा हो गया है। विज्ञापनों की बाढ़ में नागरी असहाय सी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहती हुई नज़र आ रही है और उसके स्थान पर रोमन लिपि ने अंग्रेजी भाषा की तरह ही अपने पांव पसारने शुरु कर दिए हैं।

हिंदी भाषा को रोमन लिपि में प्रस्तुत करने की साजिशों में भी बहुराष्ट्रीय कंपनियां सबसे आगे हैं। अपनी लुभावनी एवं आकर्षक बातों में जहां कंपनियां स्वदेशी के नारे को बिल्कुल निर्मूल सिद्ध कर रही हैं वहीं भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं भाषा के क्षेत्र में भी चुनौती दे रही हैं। विदेशी वस्तुओं के पीछे भारतीयों की ललक को इन कंपनियों ने बख़ूबी पहचाना है और हमारे घर में हमारे ही विरुद्ध षडयंत्रों का पिटारा खोल दिया है जिसमें स्वयं हमारी अपनी निजी कंपनियां भी भरपूर सहयोग दे रही हैं। देवनागरी के स्थान पर हिंदी भाषा के लिए रोमन लिपि के ज्वलंत उदाहरण देखिए

'yehi hey right choie Baby - Ahha'
'yeh dil Mangey More'
'Aisi Azadi Aur kahan'

आज तो भारतीय कंपनियों का दावा है

'kar lo Duniya Muthi Mein'
'Mujhme hai woh baat'
'Jago Grahak Jago'
'Khul Ke Kharido' (सैमसंग मोबाइल की)
'Khul ke suno'
'Khul Ke Dekho'

अंग्रेजी भाषा को और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए हिंदी में धड़ल्ले से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी हिंदी भाषा एवं देवनागरी लिपि के मानक रूप के लिए बहुत बड़ा संकट एवं चुनौती है।

भारत में रोमन लिपि का प्रयोग अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कंपनी की पकड़ मजबूत करने के लिए किया विशेषकर सैनिकों के लिए और सरकारी नौकरियां पाने के लिए अंग्रेजी भाषा और रोमन लिपि को अनिवार्य बना दिया गया। किंतु आज स्थिति अलग है। आज दुनिया का हर दूसरा व्यक्ति हिंदीभाषी है। विदेशों में 250 से ऊपर विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में हिंदी पढ़ाई जा रही है। 70 करोड़ लोगों द्वारा हिंदी पढ़ी, बोली, लिखी व समझी जाती है। राष्ट्रसंघ की संस्थाओं में हिंदी का प्रवेश मिल चुका है, वह यूनेस्को की अधिकारिक भाषा है। देश के समस्त उद्योगों में सिनेमा का द्वितीय स्थान है जोकि हिंदी भाषा में चल रहा है। भारत की भाषाओं में सर्वाधिक प्रकाशन हिंदी में ही होता है। आज अमेरिका में भारतीय पाकिस्तानी, लंकाई, बंग्लादेशी और कुछ हद तक अफ़गानिस्तानी लोगों की आपसी बोलचाल की भाषा हिंदी ही बन गई है। वहां सामान्य विषयों में आधे ग्रेड्स का प्रश्न पत्र प्रायः हिंदी में होता है। अमेरिका में आकाशवाणी और दूरर्शन में पचास कार्यक्रम हिंदी में होते हैं। वहां से 'भारत समाचार' साप्ताहिक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन 26 जनवरी 1985 से हो रहा है। 'स्टार स्पोर्टस' ने इसी नज़ाकत को देखते हुए अपने प्रसारण में क्रिकेट मैच हिंदी में शुरू किया है।

सूचना क्रांति के आज के युग में कंप्यूटर में नागरी लिपि बिल्कुल ख़री उतरी है। इंटरनेट पर नागरी की संभावनाओं पर गंभीरता से विचार आरंभ हो चुका है। 'जिस्ट प्रोद्यौगिकी' ने नागरी लिपि के प्रयोग की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। आई.आई.टी कानपुर के इंजीनियरों ने भारतीय लिपियों की अंतर्निहित समानता के आधार पर 'इस्की' नामक ऐसी मानक कोडिंग प्रणाली विकसित कर ली है जिसमें सभी भारतीय भाषाओं तथा रोमन पर आधारित यूरोप की भी भाषाओं को सम्मिलित कर लिया है। 'अक्षर' के माध्यम से रोमंगटन, ध्वन्यात्मक, रोमन किसी भी विधि से नागरीटंकित कर सकते हैं। आईलीप सॉफ्टवेअर द्वारा तेरह भाषाओं में ई मेल भेजना संभव है जिसमें वह रोमन लिपि लिखने पर भी नागरी लिपि में प्रस्तुत होगा। भारत में आई.टी.सी (इंडियन टोबैकोकंपनी) ने ईचौपाल नाम से किसानों के लिए एक वेबसाइट बनाई है जो भारतीय किसानों को अंतरराष्ट्रीय कृषि जगत से जोड़कर उन्हें मौसम, बाज़ार, फसलों का जानकारी देगी। इसी प्रकार मध्य प्रदेश में भी ज्ञानदूत नाम की वेबसाइट तैयार की गई है।

भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय)ने सीडैक , पुणे की सहायता से लीलाप्रबोध, लीला हिंदी प्रवीण तथा लीला हिंदी प्राज्ञ तैयार कर लिए हैं। एक कंप्यूटर कंपनी ने 'आओ हिंदी पढ़ें' में संज्ञा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्वनाम, विशेषण आदि प्रोग्रामों के साथ 'अनुवादक' भी प्रस्तुत किया है। जिसके माध्यम से मूलपाठ को हिंदी में प्रस्तुत किया जा सकता है। विश्व का प्रथम देवनागरी हिंदी पोर्टल। विश्व की प्रथम बहुभाषीय ईमेल सेवा। विश्व का प्रथम देवनागरी हिंदी सर्च इंजन।

विश्व की प्रथम बहुभाषीय ई-ग्रीटिंग सेवा। इंटरनेट में देवनागरी हिंदी के प्रवेश से ईमेल सेवा के बाद अब ई-चैट, ई-बैंकिंग, ई-वणिज्य, ई-प्रशासक आदि अनेक सेवायें आ गई हैं। माईक्रोसोफ्ट का office xp अद्यतन तकनीक लेकर आया है जिसके फलस्वरूप संसार की 48 भाषाओं में हिंदी सम्मिलित है। इस समय इंटरनेट पर हिंदी वेब पोर्टल 47 हैं, हिंदी साहित्य वेबसाइट लगभग 35 हैं, पत्रिकाओं, समाचार, शिक्षा, हिंदी निर्देशिका, हिंदी वर्तनी संशोधक, देवनागरी फॉण्ट, लिपि परिवर्तन और हिंदी शब्दकोश सहित भारत सरकार की हिंदी से संबंधित लगभग 150 वेबसाइट उपलब्ध हैं। 80 करोड़ हिंदी जानने वालों के लिए सी-डैक, पुणे, आर के कंप्यूटर रिसर्च फांऊडेशन नई दिल्ली, आई.आई.टी कानपुर ने मल्टी मीडिया स्वयं शिक्षण पैकेज हैं। इसके अतिरिक्त भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा विशेषकर शिक्षा से जुड़े मंत्रालयों में अनेक वेबसाइट विकसित की गई हैं जो देवनागरी लिपि में सर्वोत्तम सामग्री उपलब्ध करवा रही हैं, किंतु समस्या यूज़र द्वारा इनका कम प्रयोग किए जाने की है।

हिंदी में पारिभाषिकों के निर्माण ने तो हिंदी की वैज्ञानिकता और सार्थकता को और भी सुदृढ़ किया है। इस दिशा में केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा वैज्ञानिक/तकनीक शब्दावली आयोग ने बड़ा काम किया है। इस पूरे परिदृश्य में यह वह लिपि है जिसे सूर, तुलसी, प्रेमचंद, हरीशचंद्र, अज्ञेय, मुक्तिबोध, प्रसाद, पंत, निराला ने बदलती परिस्थितियों में अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के बूते जनाकांक्षाओं पर खरा उतरने का मार्ग प्रशस्त किया। हिंदी भाषा-भाषी के अतिरिक्त मराठी तथा संस्कृत के द्वारा भी नागरी का प्रयोग होता रहा। नागरी सरल एवं वैज्ञानिक तथा समृद्ध प्राचीन साहित्य की धरोहर समेटे हुए है। नागरी प्राचीन भारतीय भाषाओं का मूलाधार है। इतनी साधन संपन्न लिपि को उसी के घर में विदेशी लिपियों द्वारा घुसपैठ करके निरस्त करने की कुचालों के प्रति हमें सजग होना है। संचार माध्यमों का कार्य केवल सूचना प्रदान करना ही नहीं अपितु समाज को दिशा प्रदान करना भी है। सूचना प्रोद्यौगिकी से जुड़े संस्थानों का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि अपनी भाषा एवं लिपि के प्रति सम्मानजनक दृष्टिकोण रखें। अगर मीडिया ऐसा नहीं करता तो एक माल विक्रेता और उसमें कोई अंतर नहीं रह जायेगा।

किंतु हिंदी इंटरनेट में सबसे बड़ी मुश्किल इस समय हिंदी फॉण्ट को लेकर बनी हुई है। सर्च इंजन थोड़ी दूर तक साथ देता है, फिर अंग्रेज़ी का सहारा लेना पड़ता है। लेकिन वेब दुनियां का अपना सर्च इंजन है इस लिए वह उनकी ही साइट में खोजबीन करता है जो वेब दुनिया से संबंधित हैं। कंप्यूटर का आविष्कार तो सूचना विज्ञान एवं टैक्नॉलॉजी में बहुत आगे रहने वाले देशों द्वारा किया गया। लेकिन अब हमारा कर्तव्य है कि उस प्रोद्यौगिकी को राजभाषा एवं नागरी लिपि में विकसित करते हुए अन्य भारतीय भाषाओं के लिए आधार तैयार करें। जिस प्रकार सरहदों की रक्षा के लिए सरकारें बचनबद्ध होती हैं, जिस प्रकार सभ्यता और संस्कृति की रक्षा किसी राष्ट्र का प्राणाधार होती हैं उसी प्रकार भाषा, लिपि और साहित्य को सुरक्षित रखना भी किसी राष्ट्र का नैतिक एवं सामूहिक कर्त्तव्य बनता है। वह राष्ट्र और कौमे अपनी मौत स्वयं मर जाती है जो अपनी संस्कृति, सरहद और साहित्य (भाषालिपि) को नहीं बचा पाती। इसलिए सरकार का दायित्व है कि इस दिशा में नियमावाली तय करे और उसे कड़ाई से पालन करवाये, तभी भारत जैसे सामासिक संस्कृति, वाले राष्ट्र की अस्मिता को विदेशी प्रहारों से बचाया जा सकता है।

विश्व जनसंख्या में दूसरे नंबर पर होने पर भी इंटरनेट पर हिंदी में सर्च करने वालों की संख्या विश्व की अन्य भाषाओं के मुकाबले में बहुत कम है। आज

शेष पृष्ठ 80 पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिंदी संकाय
मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली110068

भावना सरोहा

वृद्धों के आत्मविश्वास को कुरेदता
कृष्णा सोबती का उपन्यास 'समय सरगम'

हिंदी की प्रतिष्ठित कथाकार कृष्णा सोबती (जन्म 18फरवरी,1925,पंजाब जिला गुजरात/अभी पाकिस्तान में) ने अपनी कलम के माध्यम से साहित्य जगत में अभूतपूर्व योगदान दिया है। कृष्णा सोबती ने महत्वपूर्ण कहानियां, उपन्यास, संस्मरण आदि का लेखन किया है। कृष्णा जी को साहित्य अकादमी और मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान की भांति कई महत्वपूर्ण सम्मानों से नवाज़ा गया है। और हाल ही में उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है। कृष्णा जी की दृष्टि सीमित नहीं बल्कि व्यापक रूप से उल्लेखनीय है, वह कई दिशाओं में पाठक का ध्यान खींचती है। इन्होंने अपने लेखन में मध्यवर्ग की वृद्ध स्त्री, महानगरों के उच्चमध्यवर्ग के वृद्ध, देश के विभाजन का यथार्थ, पंजाबी पृष्ठभूमि, स्त्रीपुरुष की सेक्स सम्बंधित समस्या, दिल्ली के सरकारी दफ्तरों के बिगड़े माहौल, प्रेम, महानगरीय जीवन, दिल्ली की मिलीजुली संस्कृति आदि को जगह दी है।

आज़ादी के बाद भारत एक गणतांत्रिक राज्य बना। इसके साथ ही भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक स्तरों पर परिवर्तनों का दौर शुरू हुआ। इसका सीधा प्रभाव भारतीय पारिवारिक ढांचों पर भी पड़ा। संयुक्त परिवार टूटने लगे और एकल परिवारों की संख्या बढ़ने लगी। समाज में मध्य वर्ग की स्थिति भी मजबूत हो रही थी। पारिवारिक उथल-पुथल का सबसे ज्यादा खामियाजा बुजुर्गों को भुगतना पड़ा। बुजुर्ग भारतीय परिवारों के केंद्र बिन्दु रहे हैं लेकिन उनका वह स्थान और मान-सम्मान अब खिसकने लगा था। नई पीढ़ी के साथ उनके तालमेल की कमी ने भी परिस्थितियों को और ज्यादा जटिल बनाया। परिवर्तन के इन सारे घटनाचक्रों से हिंदी कथा साहित्य अछूता नहीं था। खासकर उपन्यासों ने इन समस्याओं और हलचलों को गंभीरतापूर्वक उठाया। आजादी के बाद के हिंदी उपन्यासों में बुजुर्ग पात्र अपनी पूरी विविधता के साथ उपस्थित दिखते हैं। इन बुजुर्ग पात्रों के सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन के माध्यम से हम तत्कालीन समय और उसके परिवार, समाज और देशकाल की नब्ज़ टटोल सकते हैं। कृष्णा सोबती के चर्चित उपन्यासों में 'समय सरगम' एक सशक्त स्तम्भ है जो वृद्धों की अंतरात्मा में भीतर तक झांकता है. 'समय सरगम' (2000) उच्चमध्यवर्ग के वृद्ध जीवन को बयाँ करता एक उपन्यास है. उपन्यास में महानगरों के उच्च मध्यवर्गी वृद्ध पात्रों के माध्यम से जीवन के विविध आयामों में झांका गया है और उसी से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्बंधित उनकी समस्याएँ प्रदर्शित की गयी हैं। औद्योगीकरण और भूमंडलीकरण के साथ जैसे-जैसे बाज़ार का विस्तार हुआ रिश्ते-नाते कई हद तक पीछे छूटते चले गए। रिश्तों में बदलाव के कारण जो दुष्प्रभाव वृद्धों पर पड़े वह हमें 'समय सरगम' में दिखते हैं । उपन्यास केवल समस्याएँ ही नहीं बल्कि जीवन में समस्याएँ सुलझाने के लिए विकल्प भी देता है। 'समय सरगम' सभी के लिए एक मार्गदर्शक की तरह है। यह एक उम्र के बाद आए बदलाव का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। उपन्यास के केंद्र में ईशान और आरण्या हैं और इन्हीं से जुड़े कई अन्य पात्र भी हैं, ये सभी उम्र के आखिरी पड़ाव की ओर अग्रसर हो चुके हैं। उपन्यास में बुजुर्गों के लिए वरिष्ठ, पुराने नागरिक, सयानी पीढ़ी जैसे सम्मानजनक शब्दों का प्रयोग किया गया है किन्तु यह शब्द युवा पीढ़ी के मुंह पर शायद ही कभी आते होंगे। उनके लिए इसी पीढ़ी के लिए बूढ़ा, सठियाया हुआ आदि कहना अधिक सरल होता है। उपन्यास के यदि सभी पात्रों पर नज़र डाली जाए तो केवल आरण्या ऐसी पात्र है जो अपना जीवन अपने शर्तों पर जीती है । बाकी पात्र अपनी परिस्थिति के अनुकूल ढल गए हैं। मैथिलीशरण गुप्त ने प्रस्तुत पंक्तियाँ उम्र के एक पड़ाव को सोचकर बड़े ही दुखी मन से लिखी हैं :-

अब वे वारस बीत गये
मन तो भरा-भरा है लेकिन तन के सब रस रीत गये
चमक छोड़ चौमासे बीते, कंव छोड़कर शीत गये
लेकर मधु की ऊष्मा सारी, मेरे मन के पीत गये
अब तो केवल गूँज बची है जीवन के सब गीत गये
इस राम जाने जीवन में, हम हारे या जीत गये।
(पृ.20,जनवरी-मार्च 2010,कथाक्रम).

उपन्यास में आरण्या ऐसी पंक्तियों को चुनौती देती हुई नज़र आई है। वह अपने हर पंल को गहराई से उत्साहित हो कर जीती है। उसके भीतर सकारात्मक सोच इस कदर भरी है कि निराशा के भाव जल्द ही उसके भीतर प्रवेश करने की हिम्मत नहीं करते हैं। वह अपने उम्र के लोगों से ज्यादा स्वस्थ है तथा वह इसका शुक्र मनाती है। अक्सर व्यक्ति अपने साथ वालों का सोचकर जो इस दुनियां में नहीं है, निराश हो जाता है कि इस दुनियां से विदा लेने की अब उसकी बारी है किन्तु आरण्या की सकारात्मक सोच प्रस्तुत पंक्ति में मिलती है- ''हवा पी रही हूँ। आत्मा तक खींच रही हूँ ऑक्सीजन! खुश हूँ कि जीवित हूँ। अपने साथ के तो कब के जा चुके।'' (समय सरगम, पृष्ठ.5)

आरण्या उपन्यास में प्रकृति से काफी जुड़ी नज़र आयी है। कहीं वो उससे विचार विमर्श करती है तो कहीं यह उसको अपने अन्दर अनुभव करती है तो कहीं वह उसमें जीती नज़र आयी है। आरण्या मनमौजी स्वभाव की है अपनी ख्वाइश के लिए वह बिना अपनी तबियत की फ़िक्र किए छाता लेकर घर से बाहर बारिश में घूमने निकल जाती है और घूमते हुए सड़क पर झुग्गी में से बच्चे की रोती आवाज़ सुनकर उस पर गंभीर विचार करती है कि यह बच्चा इस परिवेश में रहते हुए अपने जीवन में तमाम चीजों को लेकर संतुष्ट रहेगा ? और बड़े होकर देश के लिए नायक बनेगा या खलनायक। इसी जगह ईशान उसे अपनी तबियत का ख्याल रखने के लिए हिदायत देते है। ईशान का मानना है कि बारिश में इस प्रकार घूमना यह सिर्फ एक लापरवाही है। हालांकि ईशान और आरण्या आत्मनिर्भर पात्र हैं फिर भी आरण्या ईशान से अधिक मजबूत नज़र आयी है। आरण्या के भीतर जीने की इच्छा शक्ति अधिक है और यही उसकी सोच को सकारात्मक बना देती है। वह कभी भी अपनी उम्र को लेकर चिंतित नहीं होती है। उसको यह एहसास है कि वह उपनी उम्र से अधिक जवान है ''याद रखें, मैं आपकी उम्र की नहीं हूँ, छोटी हूँ। जन्म-तारीख में जरूर कुछ गड़बड़ होगी'' (समय सरगम, पृष्ठ 36)

यदि व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ तथा सशक्त हो तो शरीर से अपने आप मजबूत हो जाता है। यही जीने की सही कला है। बुजुर्गों के लिए यह मानसिकता रामबाण की तरह काम करती है।

आरण्या में जन्मदिन को लेकर भी उत्साह दिखता है जो सकारात्मक सोच का प्रतीक है किन्तु ईशान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में निराशा के भाव दिखते हैं। ईशान के नकारात्मक विचार से उम्र में एक साल और कम हो गया है और बुढ़ापा और नज़दीक खिसक आया है। आरण्या में जन्मदिन को लेकर जितना उत्साह होता है उतना ही जन्मदिन ठीक से न मनाने पर ईशान को नाराज़गी भी दिखाती है। दोनों लोग एक ही उम्र के हैं, दोस्ताना सम्बन्ध है और एक ही दिन उनका जन्मदिन आता है। आरण्या ईशान के जन्मदिन के प्रति नीरस भाव देखकर कहती है :-

''मैं अपने को उम्र में इतना बड़ा महसूस नहीं करती जितना आप मान रहे हैं। मेरे आसपास मेरा परिवार नहीं फैला हुआ कि मैं अपने में मां, नानी, दादी की बूढ़ी छवि ही देखने लगूं। ईशान, मुझे मेरा अपनापन निरंतरता का अहसास देता है।'' (समय सरगम, पृष्ठ 80)

उपन्यास में जगह-जगह इस सयानी पीढ़ी के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए अरण्या और ईशान के माध्यम से लेखिका ने हिदायतें दी हैं। कहीं सुबह की सैर, योग, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए घरेलू उपाय, पौष्टिक आहार आदि का जिक्र आया है तो कहीं कृष्णा जी ने बुजुर्गों को अपनी सुरक्षा के प्रति सजग रहने की हिदायत भी दी है ''अख़बार तो हम रोज़ पढ़ते हैं न ! दरवाजे को खुला रखने की लापरवाही ठीक नहीं। जो भी दरवाजे पर है, इंतजार कर सकता है।'' (पेज 58)

शारीरिक समस्या एक ऐसी समस्या है जो सभी बुजुर्गों को झेलनी पड़ती है। उपन्यास के 11वें खंड में बुजुर्गों के जीवन का विवरण दिया गया है। वे भिन्न-भिन्न शारीरिक समस्याएँ भी झेल रहे हैं जैसे, चिंताएं, रक्तचाप ऊँचानीचा, नब्ज कभी तेज कभी धीरे, सी.जी.एच.एस की दवाइयों और उनके भुगतान में परेशानी, अकेलेपन से मायूसी और इसके साथ ही पार्क में उनका हमउम्र लोगों के बीच वार्तालाप के माध्यम से दुखी जीवन को भी प्रदर्शित किया है।

जहाँ पहले बुजुर्ग खुले गाँव में घूमते थे, घर के बड़े आंगन में बैठते थे, खेतों और बागों में समय व्यतीत करते थे, अब शहरों में उनकी खुशी ज़िन्दगी सिमट गयी है। खेतों, बागों का आनंद वे सोसाइटी के छोटे से पार्क में ढूँढ़ते हैं। अब छोटे से पार्क में सब हम उम्र लोग मिलते हैं और अपने अकेलेपन, उपेक्षा, शिकायतों को तिलांजलि देते हैं।

''न होता यह सुहावना टुकड़ा तो देखती रहतीं यह आँखें सीमेंट के अपार्टमेंट-जंगल को। कम से कम यहाँ हवा तो ताज़ी है। घास में लगे बेल-बूटों की तरह छोटे -छोटे फूल जंगल को सुख देते हैं। हर शाम सुखकर लगती हैं।'' जिस समाज में सबसे मजबूत कड़ी बुजुर्गों की बुद्धि व अनुभव को सर्वोपरि रखा जाता था, लोग बड़े बूढ़ों के साथ निरादर करने का जल्दी से साहस नहीं रखते थे, आज वही सबसे मजबूत पीढ़ी समाज में उपेक्षित और कमजोर मानी जाती है। आए दिन समाचारों में बुजुर्गों के साथ अपनों और परायों द्वारा होती वारदातें इसका उदाहरण है। हाल ही में राजकोट की खबर ने पूरे समाज को शर्मसार कर दिया है कि प्रोफ़ेसर बेटे ने अपनी बीमार बूढ़ी मां को छत से नीचे ढकेल दिया। बुजुर्गों के साथ लूटपाट की वारदातों की घटनाओं का चित्रण उपन्यास में भी आरण्या के साथ हुई अनहोनी के माध्यम से दिखाया है। (समय सरगम, पृष्ठ 44)

कृष्णा जी ने परिवार को लेकर दो बुजुर्गों की मानसिकता और विचारों की बहस दिखाई है। एक मानसिकता उस व्यक्ति की है जिसका परिवार दुर्घटना में ख़त्म हो गया है और अब जीवन में अकेला है और दूसरी मानसिकता उसकी है जिसका परिवार तो है किन्तु वह अलग रहती है और अपने पसंद का जीवन जीती है। ईशान संयुक्त परिवार को पसंद करता है। उसको परिवार की लालसा है जिसमें वो कभी रहा नहीं। इसी के कारण वह कुछ सालों के लिए दो बच्चियों को भी गोद लेता है। आरण्या परिवार से अलग रहना पसंद करती है वह सिर्फ इसीलिए क्योंकि उसका मानना है कि परिवार में बुजुर्ग को कमजोर समझकर उसकी उपेक्षा की जाती है। वह परिवार को झेल चुकी है। उसके आत्मानुभव थोड़े कड़वे है कि घर में हर बिगड़े काम का जिम्मेवार घर के बुजुर्ग को ही समझा जाता है।

''परीक्षा में बच्चे के नंबर कम आए, आप दोषी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं क्योंकि परीक्षा के लिए जाते हुए आगे से आप मिल गए थे। बेटे को मनचाहे स्कूल में दाखिला नहीं मिला, आपकी जिज्ञासाएं आड़े आ गईं, कम्पीटीशन में पिछड़ गए बच्चा या बच्ची को तो जरूर आपकी नज़र लगी है। जो त्रिशंकु है, न इधर का न उधर का, बीच में लटका हुआ, किसी की नौकरी का जिक्र कर दिया और वह सफल न हुआ, तो गुनाह उसी के मत्थे जो कहीं का नहीं!'' (समय सरगम, पृष्ठ 65)

किन्तु हर बुजुर्ग आरण्या की भांति आर्थिक व शारीरिक रूप से सशक्त नहीं होते और न ही वे मानसिक रूप से इतने तैयार हो पाते हैं कि मौजूद परिवार के बहार भी उनकी दुनिया हो सकती है। कई बुजुर्गों की अपने ही घर में उपेक्षा होती है, अपने बच्चे उन्हें नज़र अन्दाज करते हैं, उनकी जरूरतों का ख्याल नहीं रखते हैं। फिर भी सयानी पीढ़ी अपने पोता-पोती को देखकर सारे ग़मों को खत्म कर देती है, ''बहू-बेटों की आना-कानी, आँखें चुराना, हमारी भूली-बिसरी गलतियाँ जताना सब कुछ है गृहस्थी में, पर अपने पिछले वक्त अपने पोता-पोतियों से दादू, दद्दा, दादाजी सुनना भी कितना भला!''(समय सरगम, पृष्ठ 90)

बुजुर्गों को घर में जो सम्मान मिलना चाहिए वह नहीं मिलता है। इसीलिए अपने स्वाभिमान की फ़िक्र करते हुए आरण्या अकेला रहना पसंद करती है। अकसर यह भी देखा जाता है कि बुजुर्ग क्योंकि उम्र के आखिरी पड़ाव पर अपना संरक्षण चाहते हैं इसलिए घर में रहना पसंद करते हैं किन्तु इसका सबसे भारी नुकसान है कि बुजुर्गों का अपना 'आत्मविश्वास खो देना' है। क्योंकि उन्हें हर बात पर टोका जाता है। उपन्यास में आरण्या कहती है, ''ईशान जी, संरक्षण आत्मविश्वास को कुरेदता चले, उसे सराहने में क्या तुक है भला!'' (समय सरगम, पृष्ठ 65)

उपन्यास में दमयंती, कामिनी और प्रभुदयाल भी ऐसे वृद्ध पात्र हैं जिनकी मृत्यु उन्हीं के घरवालों द्वारा की जाती है। घर में रह रहे बुजुर्गों के आत्मविश्वास को घर में रह रही युवा पीढ़ी कुरेदती तो है ही साथ ही उनमें भय भी पैदा करती है। इसके कारण वे असहाय महसूस करते हैं। दमयंती के माध्यम से युवा पीढ़ी में अपने जन्मदाता के लिए प्रेम का अभाव और स्वार्थ की भावना के कारण बूढ़ी मां का मार्मिक चित्रण किया है कि बच्चे स्वार्थ के लिए अपनी माँ को ही मार देते है। पति के रहते पूरा घर उसके हाथ में था, वह स्वामिनी थी, खूब पैसे वाली, नखरे वाली किन्तु पति की मृत्यु के पश्चात् ही बच्चों द्वारा लाचार बना दी गयी। दमयंती के बुलाने पर उससे मिलने आरण्या और ईशान उसके घर जाते हैं। अतिथि कक्ष में जब अपने मित्रों के साथ वहां बैठी होती है तो उसका बेटा अपने दोस्तों के साथ वहां आ जाता है और अपनी बूढ़ी मां को अपने बूढ़े मित्रों समेत वहां से जाने के लिए कहता है। नौकर के हाथ में पकोड़ों की प्लेट देख नीचे फेंक देता है। प्लेट नीचे फेंकना युवा पीढ़ी की झुंझुलाहट और गुस्सा दर्शाता है जो वृद्धों को उन्हीं की सत्ता व संपत्ति से दूर देखना चाहते हैं। उपेक्षित बूढ़ी मां(दमयंती) अपने दोस्तों का साथ पाकर थोड़ा हौंसला महसूस करती है और घर में अपने वजूद को दर्शाती है। वह अपने बेटे को डांटती है, उसे घर से निकल जाने के लिए कहती है और बताती है कि इस घर की मालिक तुम नहीं हो बल्कि मैं हूँ। किन्तु दोस्तों के जाने के बाद उसे डर भी है कि अब बेटा उसके साथ क्या सुलूक करेगा। ''दमयंती ने सिर हिलाया और अपना बेजान ठंडा हाथ ईशान की ओर बढ़ा दिया । क्या किसी मदद के लिए ! क्या सचमुच कोई किसी में गर्माहट बाकी है! नए बच्चों का सामना करने की हिम्मत भी है?'' (समय सरगम, पृष्ठ 76) नतीजा यह होता है कि कुछ दिनों के भीतर उसकी रहस्मय तरीके से मौत हो जाती है।

इसी प्रकार उपन्यास के खंड बारह में एक बूढ़े व्यापारी पिता प्रभुदयाल का ज़िक्र है जो आर्थिक रूप से सशक्त है। अपने तीनों बेटों को तीन फैक्ट्री खोल कर दे चुके हैं। वे पूर्णरूप से आत्मनिर्भर हैं। पत्नी की मृत्यु के बाद वे अकेलेपन से घिर जाते हैं और कलावती नाम की अन्य स्त्री से भावात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। बेटों को डर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सताने लगता है कि पिता कहीं बाकी की संपत्ति उस औरत के नाम न कर दें, इसीलिए एक दिन वे बूढ़े पिता को गला घोंटकर मार डालते हैं। यहाँ बेटों के लिए पिता आदरणीय नहीं बल्कि धन का स्रोत है।

उपन्यास में कामिनी का बुढ़ापा बहुत ही दयनीय दिखाया गया है। अपनी युवावस्था में जितनी खुशमिजाज और खुले विचारों की थी। जितना उसने अपना जीवन जिया था अब उसका बुढ़ापा उतना ही कष्टदायक है। सगे भाई ही उसे मारना चाहते हैं जिसके लिए उसे गलत दवाई दी जा रही है। वह दिन पे दिन इन दवाइयों के कारण बीमार और याददाश्त खोती जा रही है। यह सारा खेल सिर्फ संपत्ति के लिए हो रहा है। ईशान और आरण्या यह सब जान रहे हैं, समझ रहे हैं कि उन्हें मदद की आवश्यकता है किन्तु कुछ कर नहीं पाते क्योंकि वे भी अकेले ही हैं। उपन्यास में वे केवल इतने ही समर्थ दिखाए गए हैं कि अपनी मदद या किसी दूसरे की छोटी मोटी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। कामिनी का बुढ़ापा प्रस्तुत पंक्तियाँ दर्शाती हैं :-

''ऑक्सीजन जैसे किसी सिलैंडर में बंद थी!
बंद दरवाजे पर बाहर से ताला।
मेहनत से नौकरी की पैसे की कमी नहीं ।
नहीं, धन-संपत्ति है और कारगर नहीं''

पेंशन अर्जित किए हुए, अकेली कामिनी की यह हालत क्यों! बदन पर बीमारी सांकल और अन्दर आत्मा छटपटा रही है। जल्दी ही पहुँच जाएगी नर्सिंग होम में और कोठी उठ जाएगी नई इमारत। आरण्या लेटी-लेटी सोचती है, ''कामिनी, तुमने अपना भविष्य भी क्यों न देख लिया ! तुम तो बनारस से ज्योतिष पढ़कर आई थीं! '' (समय सरगम, पृष्ठ 102)

बच्चों द्वारा संपत्ति के लालच में अपने माँ-बाप की हत्या हृदयहीन युवापीढ़ी की ओर संकेत करती है। ऐसी ही स्थिति कर्नल स्वामी की चित्रा मुद्गल ने अपने उपन्यास 'गिलिगडु' में दिखाई है। संपत्ति बंटवारे के बावजूद बेटा अपने पिता को इसीलिए पीट-पीट कर मार डालता है कि जिससे पिता के पास एकमात्र फ्लैट को भी हथियाया जा सके। पंकज बिष्ट के उपन्यास 'उस चिड़िया का नाम' में भी पिता अपने आखिरी दिनों में बच्चों से दूर शांति से मृत्यु स्वीकारना अधिक पसंद करते हैं। माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम, 2007 पूरे देश में लागू है। यदि बच्चे अपने मां-बाप की जिम्मेदारी ठीक से नहीं उठा रहे हैं तो यह अपराध की श्रेणी में रखा जाता है किन्तु हमारे समाज में बहुत कम ही वृद्ध हैं जो इसका प्रयोग करते हैं। इसी कारण से युवा पीढ़ी में अपने मां-बाप का अधिक डर नहीं रहता है और संपत्ति हड़पने के बाद जो मन में आता है वैसा व्यवहार करते हैं। गैर सरकारी संगठन Helpage India के द्वारा भारत में सर्वे किया गया जिसके मुताबिक

— 23 प्रतिशत बुजुर्ग घरेलू अत्याचार के शिकार।

— बुजुर्गों पर अत्याचार सबसे ज्यादा बहुओं द्वारा हैं । 39प्रतिशत बुजुर्गों ने अपने ऊपर किये गए शोषण का आरोप बहुओं पर लगाया।

— बुजुर्गों को सताने का दूसरा नंबर उनके बेटे हैं। 38 प्रतिशत बेटों को अपने बूढ़े मां-बाप को सताने का दोषी पाया गया है ।

— महानगरों में 17 प्रतिशत खुद की बेटियां भी बुजुर्ग मां बाप पर जुल्म करतीं हैं।

— 35 प्रतिशत बुजुर्गों को परिवार वालों की पिटाई का शिकार होना पड़ता हैं।

— 79 प्रतिशत बुजुर्गों के अनुसार उन्हें लगातार अपमानित किया जाता है।

— 76 प्रतिशत बुजुर्गों को अकसर गालियां और अभद्र भाषा सुनाई जाती हैं।

— सर्वे में शामिल 69 प्रतिशत बुजुर्गों का कहना है कि उनको और उनकी जरूरतों को नज़रंदाज़ किया जाता है।

(First Published: Tuesday, January 12, 2016 http://zeenews.india.com/hindi/india/zee-jankari-torture-cases-of-the-old-are-increasing-in-india280803)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'समय सरगम' में बुजुर्गों की एक और समस्या की ओर संकेत किया गया है कि यदि बुज़ुर्ग अकेला हो और यदि किराए पर घर लेना चाहे, धन होने के बावजूद उसे कोई जल्दी से घर नहीं देना चाहता है। मकान मालिक को डर रहता है कि अकेले रहने वाले बुज़ुर्ग को यदि कोई बीमारी नहीं है तब भी वृद्धावस्था के कारण कोई जल्दी ही घेर जरूर लेगी तो इसकी जिम्मेवारी उसे ही लेनी पड़ सकती है। यदि मृत्यु हो जाती है तो क्रियाक्रम की सरदर्दी उसके अलावा कौन उठाएगा। चाहे मकान मालिक बुज़ुर्ग ही क्यों न हो जैसे कि उपन्यास में भी है। आज के प्रोफेशनल रिलेशनशिप के दौर में हर कोई अपने साथ लम्बी रेस का घोड़ा रखना चाहता है ताकि यदि उसको जरुरत पड़े तो कोई उसकी मदद के लिए मौजूद हो। इस प्रैक्टिकल डिमांड को समझते हुए दलाल भी बुजुर्गों को कम नहीं सताते हैं। उपन्यास में ऐसा दिखता है कि एजेंट के साथ खड़े बुज़ुर्ग ने पूछा ''यह बताइए आपकी जिम्मेदारी कौन लेगा ? जिम्मेदारी ? क्या मतलब !

आप अकेली रहेंगी कि कोई और भी साथ होगा ?

मैं रहूंगी और मैं ही अपने लिए जिम्मेदार हूँ।

आपकी जन्म तारीख किस सन की है ?

यह क्यूँ पूछ रहे हैं आप ?

इसलिए कि हमें पूछना चाहिए ।

कल को चली-चलाई का कुछ चक्कर हो तो हम झमेले में क्यों पड़ें '' (समय सरगम, पृष्ठ 122)

'समय सरगम' वृद्धों की तमाम कठिनाइयों को प्रदर्शित करते हुए मार्गदर्शन भी देता है। यह निराश, असहाय, उपेक्षित उम्रदराज को सिखाता है कि किस प्रकार मुश्किलों के बीच अपनी दुनियां खुद बनाकर सुकून के पल जिए जा सकते हैं। परिवार में जीवन जीना यदि कठिन हो तो आरण्य और ईशान की तरह अकेले रह कर भी जी सकते हैं। काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में भी ऐसा विहार भी दिखाया गया है जिसमें ज्यादातर वृद्ध ही रहते हैं। यह विहार वृद्धों, अपंगों, विकलांगों की सुरक्षा और सुविधा को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

उपन्यास में अकेलेपन का एक विकल्प भी दिया गया है। यदि आर्थिक रूप से आप सशक्त हैं तो कुछ सालों के लिए अनाथ बच्चों को गोद ले सकते हैं जिसका खर्चा आपको उठाना पड़ता है और वे आपको अपने माता पिता मानते हैं। उतने समय के लिए आपका अकेलापन भी दूर हो जाता है। जिसका इस जीवन में कोई नहीं है उसके लिए यह एक अच्छा विकल्प है। किन्तु यदि आप अपने परिवार से उपेक्षित हैं और अकेलेपन से ग्रसित हैं तो अन्य बच्चा गोद लेना समाज में स्वार्थी युवावस्था के ऊपर तमाचा है। ये उनके लिए डूब मरने की बात है। उपन्यास में ईशान और आरण्या की ज़िन्दगी को देखकर लगता है जैसे वे अपने रोजमर्रा के कामों में व्यस्त रहते हैं। उनके उठने से सोने तक सब नियमबद्ध तरीके से होता है। जब उन्हें समय मिलता है तो आपस में मिल लेते हैं। किन्तु जब ईशान से मिलने उसके द्वारा गोद ली हुई दो बेटियां आने वाली ही होती हैं तभी से पूरा घर भरा हुआ महसूस होता है। साथ ही जब आरण्या अपने घर में उन बेटियों के लिए खाने का सामान तैयार कर रही होती है तो उसे भी यही महसूस होता है कि उसका घर भी उन बेटियों की गूँज से भर गया है ।इसका मतलब ऐसा नहीं है कि जो वे ज़िन्दगी जी रहे हैं, वही उनकी ख्वाइश थी, बल्कि वे भी भरा-पूरा परिवार पसंद करते हैं। एक संवाद से पता चलता है कि ईशान तो संयुक्त परिवार को पसंद करता है और जिस दुनियां में वह जी रहा है वह दुनियां उसकी खुद की बनाई हुई है।

इसी प्रकार उपन्यास में सयानी नागरिक की समझदारी और काबिलियत को दर्शाती एक सामूहिक बैठक जिसमें अलग-अलग वरिष्ठ नागरिक हैं जो अपने जीवन से अन्य वरिष्ठ नागरिकों को एक प्रकार से मार्गदर्शन दे रहे हैं :-

सरदार साहिब हैं जो अपने बड़े बेटे और छोटे बेटे के पास बारी-बारी रहते हैं। इसके अलावा वह अपने जीवन में [illegible] हैं वह स्कूलों संस्थानों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सलाह-सम्मति देते रहे हैं। सयानों की सेहत पर लेख लिखते हैं एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए पत्रिका भी निकालने की तैयारी में हैं। एक और वैवाहित सयाना जोड़ा है श्रीमती और श्री सुन्दरम का जो एक दूसरे से असीम प्रेम करता है। श्रीमती सुन्दरम शास्त्रीय संगीत में पारंगत है। हफ्ते में तीन दिन बच्चों की कक्षा लेती हैं। तीसरे श्रीमती विक्रमराज हैं, ये बहु-बेटे से अलग होकर अकेलापन महसूस करती थी। अब उसी अकेलेपन को वे खुशी से जीती हैं। ''अकेले रहते-रहते जान लेंगी कि यह स्थिति भी कम अच्छी नहीं है। अकेले होने पर आप अपने से दूर नहीं होते। अपने में खोजते हैं उन संभावनाओं को जो मूल्यवान हैं। आप अपने नजदीक होते जाते हैं। ''
(समय सरगम, पृष्ठ 82)

इसी जगह श्रीमती भट्टाचार्य हैं जो 'पीढ़ीगत अंतर' को अच्छी तरह समझ गयी है कि बच्चों की ज़िन्दगी उनसे बिलकुल अलग है। वहीं प्रसाद जी का मानना है कि बच्चों और पोता-पोती के परिवेश के अनुसार उन्हें भी बदलने की अत्यंत जरुरत है। क्योंकि समय हमेशा परिवर्तनशील रहा है और पीढ़ियों की विचारधारा का अलगाव हमेशा रहा है। इसी वजह से दोनों पीढ़ियां हमेशा प्रताड़ित होती आयीं हैं। यदि साथ रहना है तो दोनों पीढ़ी को समझने की जरुरत है, खास तौर पर पुरानी पीढ़ी को। रंगाचारी और उनकी पत्नी एक दूसरे के प्रति सेवाभाव से प्रतिबद्ध हैं और इसी वजह से उनकी उम्र आसानी से आगे बढ़ रही है ।

इला और अलोक देसाई दोनों ही अपने अनुशासन के तहत रोज सैर और यौगिक क्रियाएँ करते हैं। अपने आप को अन्य कार्यों में व्यस्त रखते हैं। एक बनारस के पढ़े द्विवेदी हैं जो आर्थिक रूप से सशक्त तथा सभी सुविधाओं से संपन्न हैं। हारी-बीमारी का सब बेटे ख्याल रखते हैं।

'समय सरगम' में वृद्धों के जीवन के साथ ही समाज के अहम् मुद्दों को भी महत्ता दी गयी है। कथा के मध्य में आरण्या पितृसत्ता को चुनौती देती नज़र आयी है। इसके साथ ही उपन्यास में विभिन्न पात्र, स्त्री अधिकारों की बात व काला-गोरा, ऊँच-नीच जाति आदि पर कटाक्ष करते दिखाए गये हैं ।

आरण्या और ईशान मंदिर-मठ, पूजा-पाठ, आश्रम आदि से दूर यदि खाली समय हो तो कहीं रेस्टोरंट में खाना खाना ज्यादा पसंद करते हैं। आरण्या का मानना है कि किसी वृद्ध या वृद्धाश्रम में सेवा करना किसी मंदिर में पूजा पाठ करने से ज्यादा बड़ा काम है। आरण्या तो परिवार के चक्कर से भी दूर है। वृद्ध जीवन की एक बेजोड़ पात्र है। लोग क्या कहेंगे जैसी विचारधारा से दोनों लोग मीलों दूर रहते हैं । अपने अनुसार जीवन को देखते हैं । फिर भी दोनों के विचारों में काफी अंतर है । इसके बावजूद उनमें भावात्मक लगाव है। वे आपस में मिलना पसंद करते हैं। दोनों अपने दु:ख-दर्द, खुशियाँ आपस में बांटते हैं। एक दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं इसीलिए वृद्धावस्था के सफ़र में दोनों साथ हैं। दोनों अपनी शर्तों पर अपना स्वच्छन्द जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उपन्यास के अंत में ईशान आरण्या को अपने घर रहने का निमंत्रण देते हैं। आरण्या अपना घर बेच चुकी है और दूर किसी घर में रहने के लिए जाना चाहती है। बाद में अरण्या ईशान का प्रस्ताव स्वीकार करती है। हमेशा ईशान के घर में रहने के लिए तैयार हो जाती है। आज की युवा पीढ़ी जितना खुला दिमाग खुद के लिए रखती है यदि अपने बड़ों के लिए भी रखें तो आधी से ज्यादा वृद्धों की समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी। उपन्यास में ईशान और आरण्या सहजीवन जीने का निर्णय लेते हैं। ज़िन्दगी का आखिरी पड़ाव है इसीलिए मृत्यु जैसे सच को स्वीकार करते हुए उसपर स्वस्थ बातचीत करते हैं। 'आरण्या, तुम्हें जान लेने पर यह तो लगता है कि जीना बैंक अकाउंट का नंबर नहीं, जिसका कुल जोड़ कुछ आंकड़ों में हो। मैं अब किसी असमंजस में नहीं हूँ। क्यों न अपने जाने को सहज-सरल कर लें। हम दोनों में से किसी को दिक्कत न होगी।' (समय सरगम, पृष्ठ 147).

जहाँ बुजुर्ग घर से बेदखल किए जा रहे हैं। मारे-पीटे जा रहे हैं। वृद्धाश्रम भेजे जा रहे हैं या उनकी हत्या

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

शेष.... पृष्ठ 80

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतुला भास्कर अमृतसर के शहजादानन्द कॉलेज के हिन्दी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर पद से सेवानिवृत। हिन्दी में एमफिल, पीएच.डी। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविताएं और शोधपत्र प्रकाशित। 'कश्फ' पत्रिका से विशेष रूप से जुड़ी हुई हैं। एक काव्य संग्रह 'किसे कुछ कहा जाए' प्रकाशित।

20 जोशी कॉलोनी, द मॉल,
अमृतसर।
मो. : 62809 69742

डॉ. अतुला भास्कर

करतार सिंह से सिर्फ 'दुग्गल'

(1916 2012)

दिखने में सौम्य एवं सभ्य पर अधिकार के लिए डट जाने वाले करतार सिंह दुग्गल दुबले-पतले, आधी सफेद बारीक दाढ़ी, पतलून की क्रीज उस्तरे की धार की तरह तेज पूरी तरह संवरी हुई पगड़ी की नोक के साथ पाठकों, मिलने वालों के दिमाग पर कई बिंब छोड़ जाते हैं। अगर दुग्गल आपके दोस्त हैं तो वह सदा आपसे लड़ते रहते हैं, झगड़ते रहते हैं। अगर गुस्से हो जाएं तो चुप साध लेते हैं और आपसे बिल्कुल बात नहीं करेंगे, अच्छी, न बुरी। यह उनका सबसे बड़ा इंतकाम है अपने साथ और अपने दुश्मन के साथ। जब वह चुप होते हैं तो उनका मुंह वजीराबाद के ताले की तरह बंद हो जाता है। वह कांपने लगते हैं और उन्हें पसीना आ जाता है।

दुग्गल और बलवंत गार्गी लाहौर में एक साथ काम करते थे। गार्गी नाटक लिखते थे और दुग्गल उसे प्रोड्यूस करते थे। नाटककार और प्रोड्यूसर के आपसी झगड़े और सुलह-सफाई प्रसिद्ध है। वे लड़ते थे और मान जाते थे। गार्गी कहते हैं कि उनके साथ काम करते हुए जो स्वाद आता है वह बगैर झड़प के नाटक प्रोड्यूस हो जाने में नहीं। पहली बात में करारापन है, दूसरी रसहीन और फीकी। पहली लड़ाई में जीत के छलांग मारने को जी करता है, जबकि दूसरी में चारपाई पर आँखें बंद कर सो जाने को जी करता है।

दुग्गल जब कोई किताब लिखते तो किसी बड़े आदमी को भेंट करते। 'सवेर सार', 'टोए टिब्बे', पिप्पल पत्तियां के मुख्य पृष्ठ पर उन्होंने अपना नाम ऐसे लिखा कर्ता: करतार सिंह दुग्गल एमए (अंग्रेजी), आनर्ज (पंजाबी)। एक दिन पूछने पर कि क्या करतार सिंह दुग्गल काफी नहीं? उन्होंने कहा, नहीं, क्योंकि पंजाबी में तीन सौ करतार सिंह और छ: सौ दुग्गल हैं। एम.ए लिखना जरूरी है। गार्गी बोले वैसे तो पंजाबी में कोई छ: हजार एम.ए. हैं। पर करतार सिंह तो एक ही है। अगर वह इसी रफ्तार से लिखते रहे तो धीरे-धीरे पंजाबी में 'दुग्गल' एक ही होगा। फिर ना करतार सिंह की जरूरत होगी ना एम.ए. की। आज पंजाबी में सिर्फ दुग्गल लिखना ही काफी है। सब समझ लेंगे कि हम करतार सिंह दुग्गल एम.ए.(अंग्रेजी) आनर्ज (पंजाबी) की बात कर रहे हैं। इसकी पुष्टि उनके द्वारा पंजाबी साहित्य को दिए योगदान ने की। कहानियां: 'सवेर सार', 'पिप्पल पत्तियां,' 'डंगर', 'अग्ग खान वाले', 'कच्चा दूध', 'नवां घर', 'नवां आदमी', 'फुल्ल तोड़ना मना है,' 'लड़ाई नहीं,' 'करामात,' 'सभै सांझीवाल,' 'इक छिट्ट चानन दी,' 'सोनार बांगला,' 'ढोइया होया बूहा,' 'इकरारां वाली रात,' 'मेरियां श्रेष्ठ कहानियां,' 'तरकालां वेले' कविता: 'कंडे-कंडे,' 'बंद दरवाजे,' नावल: 'आंदरा,' 'इक दिल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विकाऊ है,' 'मेरा दिल मोड़ दे,' 'दिल दरिया,' 'मां पिड जाए,' 'हाल मुरीदां दा कहना,' 'शरद पुनिआ दी रात,' 'मन परदेसी,' 'अम्मी नूं की हो गिआ,' 'दरद न जाने कोई,' 'जल की प्यास न जाइ,' 'मैं ते प्रेम दीवानी,' नाटक: 'पुरानिआं बोतलां,' 'मिट्ठा पानी,' 'शोर ते संगीत,' 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि,' 'इक अक्ख इक नज़र' फुटकल: 'नवीं पंजाबी कविता,' 'सफीर दी कविता,' 'युग कवि मोहन सिंह,' 'गुरमुख सिंह मुसाफिर,' 'शहीद भगत सिंह' इत्यादि।

बलवंत गार्गी के लिखे बहुत से नाटकों को दुग्गल ने डायरेक्ट किया। 'लोहा कुट' नाटक के पृष्ठभूमि संगीत को लेकर दोनों में वैचारिक मतभेद हो गया। इस बात को आठ महीने बीत गए, ना गर्गी ने नाटक लिखा ना ही दुग्गल ने ब्राडकास्ट किया। एक दिन दुग्गल ने कहा, 'क्या नाटक लिखना भूल गए हो? नहीं' सुनने पर। फिर तुम नाटककार नहीं हो जो एक नाटक के बुरा कहे जाने पर नाटक लिखना बंद कर दे। उसे कौन कलाकार मानेगा? कई लोग मेरी कहानियों को बुरा कहते हैं फिर भी मैं लिखता हूं। गार्गी को लगा बात बिल्कुल सही थी। उसे गुस्सा किस पर था नाटक पर या दुग्गल पर। उन दिनों गार्गी ने एक नाटक लिखा 'दो अन्ने' (दो अंधे)। दुग्गल ने इसे प्रोड्यूस किया। जो अख़बार में कुछ इस तरह छपा दो अन्ने (दो अंधे) लेखक गार्गी, निर्देशक दुग्गल। रेडियो स्टेशन पर एक मज़ाक बन गया। दो अंधे करतार सिंह दुग्गल और बलवंत गार्गी। पर इस नाटक ने उन दोनों की आंखें खोल दीं। शिकवे शिकायतों का अंधापन दूर हो गया और वे फिर से एक साथ काम करने लगे।

चाहे दुग्गल का स्टेज से संबंध नहीं रहा। पर वह उन नाटककारों से कहीं ज्यादा समझ रखते थे जो अपने आप नाटक लिखते और डायरेक्ट करते थे। रेडियो के वातावरण से ही उन्हें नाटक की समझ मिली और पोषित हुई। लाहौर में जब इम्तियाज़ अली ताज, राजिंदर सिंह बेदी और रफी पीर के नाटक ब्राडकास्ट होते थे तब दुग्गल नाटक नहीं लिखते थे। इम्तियाज़ अली के नाटकों की रिहर्सल के समय दुग्गल दौड़-दौड़ के लाइट, माइक्रोफोन की आवाज़ को कंट्रोल करने वाले स्विच बोर्डों पर काम करते थे। रफी पीर डायरेक्ट करते तो दुग्गल कास्ट इकट्ठी करने और, चाय का इंतजार करते। ताज और पीर की रिहर्सलों को देख-देख, राजिंदर सिंह बेदी और सआदत हसन मंटो के नाटकों को प्रोड्यूस कर, पश्चिमी क्लासिक शाहकारों के सांचे में ढले नाटकों की परख करते-करते दुग्गल की नाटक की सूझबूझ परवान चढ़ी। जैसे पहले के समय कवि उस्तादों की चिलम भर भर कर कविता लिखनी शुरू करते थे वैसे ही दुग्गल को नाटक की बनावट और चरमोत्कर्ष गढ़ने का तरीका आया। उन्होंने नाटक ग्रहण किया, पचाया और बाद में लिखना शुरू किया। उन्होंने नाटकों को स्टेज और रेडियो दोनों को मुख्य रखकर लिखा। कई नाटक खुले वायुमंडल में हज़ारों के सामने खेले और साथ ही ब्राडकास्ट किए। उन्होंने स्टेज और रेडियो के बीच पुल बनाया। बलवंत गार्गी मानते हैं कि दुग्गल उस पतंगबाज की तरह है जिसकी डोर खरी है, मांझा भी बढ़िया है पतंग की तनावें और तान भी ठीक है। पर जब पेचा लगाया जाता है तो कहां ढील देनी है और कहां छोड़नी है इसकी समझ कम है। इसीलिए इनके नाटक की पतंग अक्सर कट जाती है।

दुग्गल एक सामान्य कवि और एक बेहतरीन कहानीकार है। कविता उनकी तीव्र ज्वालामुखी जैसी उबलती भावनाओं को प्रगट करने का साधन है। बहुत से कहानी लेखकों ने जवानी में कविता लिखी फिर कहानी की तरफ जल पड़े। मोपासा ने पहले कविता लिखी जब कहानियां लिखने लगे तो कविता को तिलांजलि दे दी। पर उनकी कहानियों में कविता की झलक मिलती है। कविता से उन्होंने यथार्थ को और भी गहरा किया। गोर्की ने भी बहुत सी कविताएं लिखीं। फिर कहानी और उपन्यास में इस कविता को जगह दी। दुग्गल की कविता एक तरह की शान थी जिस पर उन्होंने कल्पना के उस्तरे की धार तेज की।

दुग्गल ने पंजाबी में सबसे अधिक कहानियों की रचना की है। पर केवल संख्यात्मक दृष्टि से ही नहीं गुणात्मक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दृष्टि से भी उनकी कहानियां बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। 'सवेर सार' (1941), 'पिप्पल पत्तियां' (1942), 'कुड़ी कहानी करदी गई' (1943), 'डंगर' (1946), 'अग्ग खान वाले' (1948), 'करामात' (1957), 'इक छिट चाणन दी' (1963), 'ढोइआ होया बूहा' (1974) उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं। इनके कारण उन्हें शीर्ष कहानीकारों में गिना जाने लगा। 'इक छिट चाणन दी' संग्रह पर उन्हें भारत साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। यहीं नहीं 1988 में भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए उन्हें 'पद्म भूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किए गए हैं।

प्रख्यात पंजाबी लेखक करतार सिंह दुग्गल को कहानी कला की पूर्ण समझ है। यह सत्य है कि उनकी कहानियां तकनीकी पक्ष से पंजाबी के अन्य कहानीकारों की तुलना में अधिक सम्पूर्ण हैं। विषय चयन, पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, अपेक्षित वातावरण तीव्र या मध्यम गति और अंत में यथेष्ठ प्रभार देकर कहानी को सम्पूर्ण करनाउनकी कहानी कला के महत्त्वपूर्ण पहलू हैं। जब उन्होंने पंजाबी साहित्य में प्रवेश किया तो पंजाबी के अधिकांश चर्चित लेखक कला जीवन के लिए सिद्धांत को पूरी तरह अपना चुके थे। उन पर इस लहर का प्रभाव प्रत्यक्ष दिखाई देता था। लेकिन दुग्गल 'कला कला के लिए' के ही उपासक रहे। इसी कारण वह अपनी कहानियों को कला की दृष्टि से निपुण बनाने का भरसक प्रयास करते थे। वह एक गहरी पैंठ रखने वाले कलाकार हैं जो हर चीज़ को गहराई से महसूस करते हैं। वह वस्तुओं घटनाओं एवं पात्रों का केवल बाहरी वर्णन ही नहीं करते अपितु उनकी आन्तरिकता को भी वर्णित करते हैं। पात्रों के मनोविश्लेषण में वह इतने सफल हैं कि अनके पात्र हमारे सामने सजीव रूप में विचरते हुए प्रतीत होते हैं। एक छोटी सी कहानी में वह ढेर सारी बातें कह जाते हैं। उनमें कहानी को छोटीछोटी बहुत सी घटनाओं में गूंथ कर गति देते हुए एक खास प्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति हैं। एक छोटी सी बात के इर्दगिर्द कहानी लिखने की कला उनके पास है 'खट्टी लस्सी,' 'टोए टिब्बे,' 'गीदड़ सींगी,' 'डंगर परदेसी' आदि कहानियां एक प्रधान जज़्बे को प्रगटाती हैं।

एक जगह वह कहते हैं कि मुझे सफ़र में कहानियां सूझती हैं। कई लेखकों के पास कहानियां चल कर आती हैं और दुग्गल कहानियों के पास चलकर जाते हैं। यदि उनकी किताबों के पहले पृष्ठों को इकट्ठा करें तो धनिआल, लाहौर, जालंधर, नई दिल्ली, इंदौर के पते मिलेंगे। पंजाबी आलोचकों ने दुग्गल की उन कहानियों पर कम ध्यान दिया है जो अंधविश्वास और भ्रम पर व्यंग्य करती हैं। ऐसी कहानियों का समाज वैज्ञानिक महत्त्व बहुत ज्यादा है। उन्होंने ऐतिहासिक वृत्तांत का ढंग अपनाया तो नाटकीय रंग और सिनेमा की फ्लैश बैक तकनीक भी। रिपोर्ताज और रेखाचित्र विधाएं भी उनकी कहानियों में शामिल हैं। पंजाबी कहानी के क्षेत्र में उन्होंने जितने सफ़ल प्रयोग किए, उतने अन्य किसी कहानीकार ने नहीं। रूप और तकनीक के ऐसे प्रयोग उन्होंने सिकी फ़ैशन के अधीन नहीं किए, अपितु हर विषय के उचित रूप ढूंढने की जिज्ञासा के लिए किए हैं। दुग्गल की कहानियों की सबसे बड़ी कमी उनका बोली से बेकाबू होना है। वह अक्सर जुबान की गल्तियां करते हैं। अपनी बोली को मांजना, लिशकाना तो अलग बात है वह व्याकरण के तौर पर शुद्ध लिखने की कोशिश भी नहीं करते। उनकी पहली कहानियों में पहाड़ी नाले जैसा जोर है जो अपने बहाव में काई और घास-फूस को बहा कर ले जाता है। 'सवेर सार' में प्रातःकालीन ताजी हवा है, सुबह के मनोरम दृश्य हैं, गीतों के बोल और अल्हड़ शब्द हैंऔर उसमें एक कच्ची महक आती है। समय के साथ-साथ उनकी कहानी रचना परिपक्व होती गई पर जुबान का खुरदरापन कायम रहा उस कच्चे बर्तन की तरह जिसमें चाहे दूध डाले, चाहे मिश्री घोले पर मिट्टी की खुशबू आती रहती है।

अपना आत्मकथा (स्वैजीवनी) 'किस पहि खोलहु गठड़ी' में दुग्गल लिखते हैं कि दैनिक 'जगबाणी' में पहले महीना दो महीना एक कालम लिखा पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्पादक की फरमाइश पर वही कालम हर पखवाड़े छपने लगा। एक दो महीने बाद जगबाणी ने फैसला किया कि यह कालम प्रत्येक रविवार को छपेगा। उसके बाद प्रस्ताव आया कि पंजाबी के साप्ताहिक कालम को हिंदी के 'पंजाब केसरी' और उर्दू के रोजाना अख़बार 'हिंद समाचार' में भी छापना चाहेंगे। दुग्गल के पास समझ की कमी के कारण व्यवस्थापकों ने यह जिम्मेवारी खुद ले ली। तीन साल तक यह सिलसिला पंजाबी हिंदी और उर्दू में चलता रहा। इस चर्चित पंजाबी लेखक ने हिंदी दैनिक 'अमर उजाला' में भी लिखा। उनकी कई रचनाओं का अनुवाद भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में हुआ। उनका विचार है कि आत्मकथा वही सफल मानी जाती है जो एक व्यक्ति विशेष का वृतांत होते हुए भी किसी भाईचारे के समूह की कहानी कहे। यह करिश्मा लेखक की ईमानदारी और सच्चाई का प्रतीक होता है। वह यह भी स्वीकारते हैं कि आत्मकथा लेखक को अधिकार प्राप्त है कि अगर वह किसी घटना को पाठक के साथ सांझा नहीं करना चाहते तो बेशक उसका जिक्र न करें।

दुग्गल ने पंजाबी कहानी में फ्रायड के प्रमुख संकल्पों का प्रयोग किया है। वह काम संबंधों को मनुष्य जीवन की धुरी मानते हैं। उनका विचार है कि इन संबंधों के विश्लेषण द्वारा ही किसी व्यक्ति की शख्सियत का अध्ययन किया जा सकता है। उनकी कहानियों में सामाजिक, आर्थिक सरोकार मनौवैज्ञानिक धरातल के नीचे छिपे रहते हैं। वह सामाजिक, आर्थिक सरोकारों को इंसानी जीवन का बुनियादी आधार नहीं मानते। इसी कारण कई मार्क्सवादी चिंतक और आलोचक उनकी कहानियों को प्रतिगामी घोषित करते रहे हैं। उन्हें ठीक से समझने में सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि वह अक्सर ऐसे विषयों को प्रस्तुत करते हैं जिनके साथ मान और विचार पूर्वाग्रह की हद तक सुदृढ़ हो चुके हैं। ऐसे पूर्वाग्रह हमें उनके कथा जगत में प्रवेश नहीं करने देते। लिंग, इख़लाक और धर्म कुछ ऐसे ही विषय हैं। उनकी कहानियों में काम-क्रीड़ा का काफी वर्णन हुआ है। 'कुड़ी कहानी करदी गई' में सेक्स का निशंक और बेझिझक वर्णन है।

बलवंत गार्गी कहते हैं कि दुग्गल में बहुत से विरोधाभास हैं। वह फ्रायड के भगत हैं पर रेडियो स्टेशन पर स्त्रियों और लड़कियों के प्रति उनका व्यवहार शुष्क रहा। वह कम्युनिज्म के विरुद्ध बोलते हैं, सोशलिज़्म से चिढ़ते हैं, पर उनकी बहुत-सी कहानियों में सोशलिज़्म ठूंस-ठूंस कर भरा हुआ है। वह मज़हब और धर्म ग्रंथों की खिल्ली उड़ाते हैं पर स्वयं सुबह श्री ग्रंथ साहिब को मत्था टेकते हैं। वह सारी उमर रेडियो स्टेशन पर नाटक प्रोड्यूस करते रहे और रेडियो पर बोलने का तरीका बतलाते रहे पर उनकी अपनी आवाज़ बेहद खुरदरी और शुष्क है। अगर कोई उनकी आवाज़ टेस्ट करे तो रेडियो स्टेशन के दस कोस नज़दीक न आने दे। उनके एक कहानी संग्रह का नाम है 'लड़ाई नहीं' वह किसी और से लड़े हो या नहीं पर पब्लिशरों के साथ वह कई बार जरूर लड़े, अपितु यह कहना ठीक होगा कि हर पब्लिशर के साथ वह जरूर लड़े।

लेखकों से अनुरोध

अपनी रचनाएं चाणक्य फॉण्ट में ई-मेल से भेजें। इससे प्रकाशन प्रक्रिया में तेज़ी होगी।

रचना के साथ अपना संक्षिप्त परिचय और फोटो अवश्य भेजें।

सम्पादक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुनर्पाठ

डॉ. पंकज साहा

एसोसिएट प्रो. हिंदी विभाग
खड़गपुर कालेज, खड़गपुर 721305
पश्चिम बंगाल
मोबाइल 9434894190

कफ़न : उल्लास और विद्रोह की गाथा

'कफ़न' न केवल प्रेमचंद की बल्कि हिंदी की सबसे चर्चित और सबसे विवादास्पद कहानी है। प्रेमचंद के जीवनकाल से आजतक इस कहानी के पक्ष-विपक्ष से अनेक पाठ आये हैं। 'जाकी रही भावना जैसी' के साथ विद्वानों ने अपनीअपनी दृष्टि से इस पर विचार किया है। डॉ. हंसराज रहबर ने इसे अराजकता को प्रोत्साहित करने वाली गलत कहानी माना है। उनका मानना है कि इस कहानी के घीसू और माधव नकारात्मक पात्र हैं। वे पतनोन्मुख साहित्य के हीरो बन सकते हैं, स्वस्थ और संघर्षशील साहित्य के नहीं। लेकिन डॉ. नामवर सिंह इसे हताशा की कहानी नहीं मानते। उन्होंने अपने एक लेख 'प्रेमचंद : अंतर्विरोध और स्वाधीनतासंग्राम' में लिखा है, ''अपनी 'कफ़न' कहानी में प्रेमचंद ने शोषण के भयावह रूप का चित्रण किया है। लेकिन उसे निराशा की कहानी समझना भूल होगी, वह विद्रोह की कहानी है।'' (प्रेमचंद और प्रगतिशील लेंखन, सं.विजय गुप्त, चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.15)

इस कहानी के यथार्थ पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए डॉ. इंद्रनाथ मदान ने कहा कि ''यह कहानी जिस सत्य को उजागर करती है, वह जीवन के तथ्य से मेल नहीं खाता।'' दरअसल प्रेमचंद और अन्य कथाकारों में अंतर यही है कि जहां साधारणतः कथाकार यथार्थ को कथा बनाकर देते हैं, वहीं प्रेमचंद कल्पित कथा को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि वह यथार्थ प्रतीत होती है। आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर उन्मुख प्रेमचंद समाज की कार्यकारण प्रक्रिया की जटिलताओं में यथार्थ की खोज करते हैं। ब्रेख्त के अनुसार, ''यथार्थवाद का उद्देश्य है समाज की कार्य कारिणी प्रक्रिया की जटिलताओं की खोज करना, समाज के शासक वर्ग की हावी विचारधरा को बेनकाब करना, वर्तमान समय में मानव समाज जिन भीषण कठिनाइयों से गुजर रहा है उनसे मुक्ति के सर्वाधिक व्यापक उपाय पेश करने वाले सर्वहारा वर्ग के दृष्टिकोण से रचना करना, विकासशील तत्वों को महत्व देना, संभावनाओं को मूर्त रूप देना और ठोस वस्तुस्थिति से संभावित सामान्य निष्कर्ष निकालना।''

प्रेमचंद और कुछ दिन जीवित रहते तो उनकी यथार्थदृष्टि और साफ़ होकर प्रकट होती।

हिंदी आलोचना के शिरोमणि आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस कहानी को पढ़ने के बाद अत्यंत आहत होकर कहा, ''अब प्रेमचंद की कल्पना अधिक उड़ाने भरने लगी है।'' दरअसल शुक्ल जी साहित्य में मानुषी भावों की रक्षा देखना चाहते थे, इसलिए वे 'कफ़न' का समर्थन न कर सके। शुक्ल जी की मानुषीदृष्टि सामंतवादी है। प्रेम भी एक मानुषीभाव है, परंतु शुक्ल जी ने कृष्णभक्त कवियों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

द्वारा अभिव्यंजित कृष्ण की प्रेम-लीलाओं को साहित्य और समाज के संवर्धन में बाधक माना है। दरअसल वे कृष्ण को भी राम की तरह लोक रक्षक रूप में देखना चाहते थे। सामंती मूल्यों के साथ राम ने लोकरक्षक की जो भूमिका निभायी, शुक्ल जी श्रीकृष्ण को उसी भूमिका में पाना चाहते थे। अर्थात् बड़े-बड़े भूपालों के बीच लोक व्यवस्था की रक्षा करते हुए द्वारका के कृष्ण के रूप में न कि प्रेमोन्मत्त गोपिकाओं से घिरे हुए गोकुल के कृष्ण के रूप में। ऐसे में सामंतों, सेठों, सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रति घृणाभाव रखने वाले घीसू-माधव की प्रशंसा वे कैसे कर सकते थे? जबकि घृणा भी एक मानुषी भाव है। घृणा की बदबू सामाजिक व्यवस्था की सड़ांध से उत्पन्न होती है। शुक्ल जी ने अपने 'घृणा' निबंध में कहा भी है, ''अरुचिकर विषयों के उपस्थित होने पर अपने ज्ञान से उन्हें दूर रखने की प्रेरणा करने वाला भाव घृणा कहलाता है।''

घीसू और माधव को परिश्रम से घृणा है। उन्हें प्रेमचंद ने कामचोर, निकम्मा, और आलसी बताते हुए कहा है, ''घीसू एक दिन काम करता, तो तीन दिन आराम। माधव इतना कामचोर था कि आध घंटे काम करता, तो घंटे भर चिलम पीता। इसलिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी। घर में मुट्ठी भर भी अनाज मौजूद न हो, तो घीसू पेड़ पर चढ़ कर लकड़ियां तोड़ लाता और माधव बाजार में बेच आता और जब तक पैसे रहते, दोनों इधर-उधर मारे-मारे फिरते। जब फाके की नौबत आती, तो फिर लकड़ियां तोड़ते या मजदूरी तलाश करते।''

प्रश्न यह है कि क्यों उन्हें काम करने में रुचि नहीं थी? इसका उत्तर देते हुए प्रेमचंद कहते हैं, ''जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से बहुत अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहां इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।''

डॉ. राजेन्द्र यादव ने 'कफ़न' को हृदय-स्तब्धता या विजड़ित संवेदना की कहानी माना है। डॉ. शुकदेव सिंह ने 'कहानियां' की प्रस्तावना में लिखा है, ''गरीबी के कारण घीसू और माधव जैसे दलित, पिता-पुत्र की मर्यादा विस्मृत कर अपनी भूख में हास्यास्पद हो गये हैं, परिवार के सदस्य की मृत्यु के बारे में संवेदनशून्य हो गये हैं।'' (अनुराग प्रकाशन, वाराणसी, सं. 2010. पृ२१)

'विचारधारा के अंत' की बात भले ही पचास के दशक से की जाने लगी हो, सवेदना का अंत तो पूँजीवाद के उदय से ही होने लगा था। आज तो हम इतने संवदेनहीन हो गये हैं कि सिर्फ़ शक के आधार पर किसी की पीट-पीट कर हत्या कर देते हैं। किसी दुर्घटना में किसी व्यक्ति को तड़पते देखकर भी उसे अस्पताल पहुँचाने के बदले तमाशा देखने एवं उसका वीडियो लेने में सुख का अनुभव करने लगे हैं। लेकिन 'कफ़न' में घीसू-माधव इतने संवेदनहीन नहीं हैं। यह नकारात्मक सोच की कहानी नहीं है। डॉ. कमल किशोर गोयनका 'कफ़न' को मृत्यु नहीं, जीवन की कहानी मानते हुए कहते हैं, ''उसमें संवदेना और मानवीयता से परिपूर्ण प्रसंगों की कमी नहीं है। घीसू में हमदर्दी का भाव है। उसकी औरत मरी थी तो वह तीन दिन तक उसके पास से हिला भी नहीं था। वह माधव से प्रसववेदना से चीखती बुधिया को देखने संभालने को कहता है। बुधिया मरती है तो पड़ोसी सांत्वना देते हैं और गाँव की नर्म दिल स्त्रियाँ आँसू बहाने आती हैं तथा गाँव के दूसरे लोग कफ़न तथा लकड़ी को एकत्र करने में मदद करते हैं। यह सब गाँव की सामूहिक संवदेना का प्रमाण है। माधव का दो बार रोना भी भावावेग ही है। हँसना और रोना दोनों ही मनुष्य की संवेदनशीलता के अंग हैं।'' (विश्वभारती पत्रिका, खंड: 66, पृ.7)

साहित्य संवेदनाओं के माध्यम से ही मूल्यों का प्रचार-प्रसार करता है, लेकिन संवदेना अंतत: समाज सापेक्ष होती है। मार्क्स एंगेल्स का मानना है कि ''मनुष्यों की चेतना उसके अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती, बल्कि उलटे उनका सामाजिक अस्तित्व उनकी चेतना का निर्धारण करता है। अपने विकास की एक खास मंजिल पर पहुँचकर समाज की भौतिक उत्पादन-शक्ति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तत्कालीन उत्पादन संबंधों से टकराती है, जिसके अंतर्गत वह उस समय तक काम करती होती है। ये संबंध उत्पादन शक्तियों के विकास के अनुरूप न रहकर उनके लिए बेड़ियाँ बन जाते हैं। तब सामाजिक क्रांति का एक नया युग शुरू होता हैं।'' (उद्धृत, 'उत्तरार्द्ध, अंक : 20, अक्टूबर 1982)

नामवर जी प्रेमचंद को क्रांतिकारी लेखक मानते हुए कहते हैं कि ''यद्यपि लोग उन्हें गांधीवादी कहते हैं, लेकिन वे गांधी से दो कदम आगे बढ़कर आंदोलन और क्रांति की बात करते हैं। प्रेमचंद अपने जमाने के साहित्यकारों से ज्यादा बुनियादी परिवर्तन की बात करते हैं।'' प्रेमचंद महाजनी (पूँजीवादी) और सामंतवादी व्यवस्था को समाप्त कर शोषणमुक्त समाज देखना चाहते थे। 'रंगभूमि' के बाद वे यह समझ गये थे कि किसान मजदूर बन जाएँ तो उसका रूढ़िवाद और परंपरागत कुसंस्कारों से पिंड छूटता है और नये आर्थिक संबंध उसे अधिक क्रांतिकारी बना देते हैं। वे यह भी समझ रहे थे कि क्रांति परिश्रमी वर्ग द्वारा ही संभव है। 'पूस की रात' कहानी का नायक हल्कू किसान (परिश्रमी वर्ग का) है। हल्कू द्वारा राख के पास गर्म जमीन पर चादर ओढ़कर सोने और पकी हुई फ़सलों के नष्ट हो जाने पर प्रसन्न होने की घटनाएँ निरर्थक नहीं हैं। 'राख' सर्वहारा का बोधक है। 'गर्म जमीन' क्रांति की गर्माहट की प्रतीक है और 'चादर ओढ़कर सोना' क्रांति के पूर्व सन्नाटे एवं क्रांति के उपरांत निश्चिंतता के संकेत हैं। पकी हुई फ़सलों के नष्ट हो जाने पर हल्कू की प्रसन्नता नयी सामाजिक व्यवस्था के लिए क्रांति का बिगुल ही है। सच्चा योद्धा तनाव के साथ युद्धक्षेत्र में नहीं उतरता।

'ईदगाह' का हामिद भी प्रसन्न भाव से चिमटा खरीदता है। चिमटा वह सिर्फ अपनी दादी अमीना के लिए नहीं खरीदता। वह उसके संघर्ष का हथियार भी है। चिमटा खरीदते समय दादी का हाथ जलने का ख्याल उसे अवश्य रहता है, परंतु उसके अंतस में अपने शत्रुओं (मित्र होते तो मित्रता निभाते) से बदला लेने की भावना अधिक बलवती है। प्रेमचंद कहते हैं, ''उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिटटी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है।''

तो क्या प्रेमचंद अपनी रचनाओं के द्वारा क्रांति की जमीन तैयार करना चाहते थे? क्या वे किसानों -मजदूरों द्वारा वर्ग-संघर्ष की प्रेरणा देना चाहते थे? फरवरी 1919 ई. के 'जमाना' में छपे एक लेख में उन्होंने लिखा भी था, ''आने वाला जमाना अब किसानों और मजदूरों का है। दुनिया की रफ्तार इसका साफ सबूत दे रही हैं।....इंकलाब के पहले कौन जानता था कि रूस की पीड़ित जनता में इतनी ताकत छिपी हुई है?'' (विविध प्रसंग, खंड1, पृ. 268) लेकिन उनके उपन्यासों पर दृष्टि डालने से हम पाते हैं कि प्रेमचंद की किसान चेतना 'वरदान' (1912), 'सेवासदन' (1918) से उत्तरोत्तर विकसित होती हुई 'प्रेमाश्रम' (1922) में वर्ग-संघर्ष के मुहाने तक आती है फिर अपना मार्ग बदलकर किसान समस्या का गांधीवादी हल ढूँढने लगती है। आश्चर्य है कि गांधी की विचारधारा से प्रभावित होते हुए भी उन्होंने कहा था, ''मैं गांधीवादी नहीं हूँ'' तथा मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होते हुए भी उन्होंने स्पष्ट कहा था, ''मेरा कम्यूनिज्म केवल यह है कि हमारे देश में जमींदार, सेठ आदि जो कृषक के शोषक हैं न रहें।''

प्रेमचंद शोषणहीन समाज का सपना देखते थे, वे समाज में साम्य देखना चाहते थे, परंतु मार्क्स के वर्ग संघर्ष के रास्ते नहीं बल्कि भारतीय आदर्शवादी तरीके से। शायद इसीलिए अपनी रचनाओं में वे वर्ग-विषमता, वर्ग -चेतना आदि तो खूब व्यक्त करते हैं, परंतु वर्ग-संघर्ष, संगठित विद्रोह या क्रांति का खुलकर प्रदर्शन करने में संकोच करते हैं। अपने 'हतभागे किसान' लेख में उन्होंने स्पष्ट कहा है, ''हमें तो उन्नति के लिए ऐसे विधानों की जरूरत है जो समाज में विप्लव किये बिना ही काम में लाये जा सकें। हम श्रेणियों में संग्राम नहीं चाहते। हाँ, इतना अवश्य चाहते हैं कि सरकार और जमींदार दोनों ही इस बात को भूल न जायें कि किसान भी मनुष्य हैं, उसे भी रोटी और कपड़ा चाहिए, रहने को घर चाहिए, उसके घर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में शादी गमी के अवसर आते हैं, उसे भी अपनी बिरादरी में अपनी कुल-मर्यादा की रक्षा करनी होती है। बीमारी आदि औरों की तरह उस पर भी व्याप्त होती है। इसलिए लगान बांधते समय इस बात का ख्याल रखें कि किसान को कम से कम खेती में इतनी मजूरी तो मिल जाये कि वह अपने बालबच्चों का पालन पर सकें।'' (हंस 19 दिसंबर, 1932)

'गोदान' प्रेमचंद की इसी सोच का परिणाम है। दरअसल गोदान तक आते-आते प्रेमचंद की विचारधारा अत्यंत विकसित हो गयी थी। वे अंग्रेजी सरकार, भारतीय रजवाड़ों, जमींदारों, अफ़सरशाहों और पूँजीपतियों की मिलीभगत से चलाये जा रहे शोषण के दुष्चक्र को भली भाँति समझ गये थे। उनकी शोषण-चक्की में पिसती खेतीहर जनता के दुख-दर्दों को देख समझ कर वे अत्यंत विचलित थे। अब वे किसी सिद्धांत अथवा विचारधारा की लाइन पर चलते हुए समस्याओं का हल प्रस्तुत करने में उत्साहित नहीं थे बल्कि वस्तुस्थिति को समझकर, सामाजिक यथार्थ को उपस्थित करना चाहते थे। परंतु शोषण के विरुद्ध उनकी व्यक्तिचेतना मर नहीं गयी थी। 'गोदान' में धनिया, गोबर, गिरिधर, हरखू आदि के माध्यम से, 'कफन' में घीसू-माधव के माध्यम से और 'मंगलसूत्र' में पं. देवकुमार के माध्यम से जनता की सक्रिय भागीदारी को वे जीवित रखना चाहते थे। अब वे न तो रामराज्य का सपना देख रहे थे न समाजवाद का। उनका विद्रोह भी स्थूल से सूक्ष्म की ओर जा रहा था, समष्टि से व्यष्टि की ओर जा रहा था। यही विद्रोह छायावादी कवियों में भी देखा जा सकता है। 'छायावाद की शव-परीक्षा' करते हुए डॉ. नवल किशोर गौड़ ने लिखा है, ''स्थूल से सूक्ष्म की ओर पलायन और वर्तमान से अतीत का पुनर्दर्शन, में दोनों को एक ही चित्र के दो पहलू मानता हूँ। छायावाद की इस प्रवृत्ति ने हमें स्वस्थ सर्जनात्मक जीवनदर्शन भले ही न दिया हो, किंतु उसने हमारी मौलिक विद्रोह-भावना को उत्तेजना अवश्य ही दी है।''

'कफ़न' में घीसू-माधव का चरित्र निश्चय ही हमें कोई सर्जनात्मक जीवन दर्शन नहीं देता, पर जब घीसू उल्लास की लहरों में तैरता हुआ कहता है, ''वह न बैकुंठ में जाएगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायेंगे जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं'' तब घीसू का विद्रोह सामाजिक व्यवस्था के अमानवीय चरित्र का पर्दाफ़ाश कर देता है। घीसू यहाँ मुख़र होकर विद्रोह करता है। इसके पूर्व माधव की असंवेदनशीलता और घीसू माधव की कामचोरी में भी विद्रोह की भावना निहित है। राजा-महाराजाओं के समय रानियों का कोप भवन में जाना, गांधी जी का असहयोग आंदोलन करना, नेताओं एवं अन्य लोगों का अनशन, भूखहड़ताल करना, किसानों की आत्महत्या, आंदोलनकारियों का आत्मदाह आदि विरोध एवं विद्रोह के ही रूप हैं।

'गोदान' का गिरिधर ताड़ी पीकर पूरी सामाजिक व्यवस्था का मुँह चिढ़ाता है, तो वहाँ उसके उल्लास में विद्रोह का भाव प्रकट है। घीसू-माधव का उल्लास और विद्रोह की 'कफ़न' कहानी का मूल्य कथ्य है। जीवन का उल्लास और विद्रोह छायावादी काव्य की भी मूल चेतना है। फ़र्क सिर्फ़ दोनों की दृष्टि में है। छायावादी कवियों के विद्रोह में राजनीतिक मुक्ति की चाह बलवती थी तो प्रेमचंद में सामाजिक-आर्थिक मुक्ति की। जीवन का उल्लास दोनों में है, पर स्तरभेद भी है।

'ईदगाह' कहानी में हामिद का उल्लास और विद्रोह एक साथ प्रकट हुआ है। 'पूस की रात' में उल्लास प्रत्यक्ष है विद्रोह प्रच्छन्न। 'कफ़न' में घीसू और माधव विद्रोह भावना के बावजूद उल्लसित होकर जीवन का पर्व मनाते हैं। डॉ. कमल किशोर गोयनका की यह बात जँचती है कि ''कहानी इस प्रकार ईश्वरीय विश्वास एवं पारलौकिक सत्ता के मायाजाल के तिलिस्म को निरावृत्त करके मृत्यु तथा उससे जुड़े स्वर्गनर्क, बैकुंठपरलोक आदि की अवास्तविक कल्पना पर जीवन की वास्तविकता एवं श्रेष्ठता को स्थापित करती हैं। कहानीकार मृत्यु एवं परलोक का गौरव नहीं, जीवन का सम्मान चाहता है और इसीलिए वह 'कफ़न' कहानी को मृत्यु की कहानी न बनाकर जीवन की कहानी के रूप में रचता है। पराधीन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारत के मरणासन्न समाज का मृत्यु के अंधकारलोक एवं अस्तित्वहीन परलोक के स्थान पर जीवन के उल्लास की ही आवश्यकता थी।'' (विश्वभारती पत्रिका, खंड : 66, पृ.16) गौतम बुद्ध ने भी जीवन-संघर्षों के बीच मधु की कुछ बूँदों की प्राप्ति को ही जीवन माना है।

अपने जीवन के अंतिम दिनों में प्रेमचंद जीवन का वैज्ञानिक विश्लेषण कर रहे थे। वे भौतिकवाद के माध्यम से ही अध्यात्मवाद को प्राप्त करना चाहते थे। वे भाग्यवाद के एकदम विरोधी हो गये थे। इसीलिए कहानी के अंत में घीसू-माधव के मुख से ''होहिहै वही जो राम रची राखा'' नहीं गवाते। जबकि वैसी परिस्थिति में भारतीय जनता के मुख से ऐसी उक्ति निकलना ही स्वाभाविक है। भारतीय जन की भाग्यवादी विचारधारा के विपरीत घीसूमाधव द्वारा कबीर का निर्गुण गवाना दरअसल स्वर्णवादी सगुणवाद के विरुद्ध अवर्णवादी निर्गुणवाद का विद्रोह भी है।

लघुकथा

अपना अपना मोह

जगदीश राय कुलरियाँ

बूढ़ी माता मानने को तैयार नहीं थी। वह तो जम कर बैठी थी कि गांव को छोड़ कर शहर नहीं जाएगी। 'अरे बेटा... यही पर रह... सभी आस पड़ोस के अपने हैं... दुःख-सुख के साथी... मुझे सब मालूम है कि शहर में तो कोई सीधे मुंह बात तक नहीं करता किसी के साथ... मुझ बुढ़िया का ऐसे माहौल में जीना मुश्किल होगा, क्यों बुढ़ापा रोलते हो मेरा...सारी उमर तो यहां पर निकाल ली अब तो शमशान में लातें हैं मेरी' माता ने गुहार सी लगाई थी।

''मां, हमने तो पक्का निर्णय कर लिया है... कि शहर जा कर ही रहेंगे... इतने पैसे लगाकर तो शौक से कोठी तैयार की है। जब हम तुम्हारे साथ हैं तो तुम्हें क्या चिंता है। चल अब मना मत कर। फिर तुम्हारे पोती-पोते का भविष्य भी तो देखना है'' बेटे ने थोड़ा सख्ती से बात की।

''देखो बेटा... मेरा तो बिलकुल भी जाने को मन नहीं... तुम सभी अपने-अपने काम धंधों पर चले जाया करोगे बहु स्कूल पढ़ाने... मैं बताओ क्या अकेली दीवारों से सिर फोड़ा करुंगी...इतने बड़े घर में वैसे ही डर लगेगा'' बोलत-बोलते माता की आवाज़ भारी हो गई थी। ''मां जी, अब... छोटे की एडमिशन भी साथ के स्कूल में करवा दी है...मुझे तो मालूम नहीं पड़ रहा कि आप ने जिद्द क्यों पकड़ रखी है...'' अब उसकी बहू बोली थी।

''जाओ भाई ... जी सदके जाओ... मैं कौन-सा रोकती हूं तुम्हें... अभी तो इन बूढ़ी हड्डियों में जान बाकी है... अपनी दो रोटी मैं ख़ुद पका लूंगी... मैं तो यहीं पर ही रहूंगी...'' अब माता ने दृढ़ शब्दों में कहा था।

''जैसे तुम्हारी मर्ज़ी...'' इतना कहते हुए वह दोनों कमरे में चले गए।

''मैंने आप से पहले ही कहा था... कि मां नहीं जाती अपने साथ... जितना मर्ज़ी जोर लगा लेना...।''

''मुझे भी पता था भागवान! अपन कौन-सा साथ ले जाने वाले थे... थोड़ा बहुत तो कहना ही पड़ता है... शहर लिजा कर ख़र्च थोड़ा बढ़ाना था...'' इतना कहते हुए पति ने पत्नी की तरफ़ देखा। दोनों के चेहरे पर हलकीसी मुस्कराहट फैल गई।

46, ईम्पलाइज कॉलोनी
बरेटा जिला मानसा (पंजाब)151501

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्पर्क : 2 'शीलप्रिय', विमलनगर सोसायटी,
नवाबाजार, करजण। जिला: वडोदरा।
गुजरात 391240
मोबाइल: 9924567512

डॉ. रजनीकान्त एस. शाह

लोक मनीषा की उपज प्रेमाख्यान : मैनासतवंती

मैनासतवंती डॉ. सुनीता शर्मा द्वारा लिप्यन्तरित दक्खिनी के मशहूर कविवर गवासी जी की प्रसिद्ध रचना है। यह रचना कथा-काव्य के रूप में सामाजिक आदर्श की प्रतिष्ठा करती है। इस रचना का प्रमुख प्रतिपाद्य नारी के सतीत्व को प्रतिष्ठित करता है। वर्णनात्मक शैली में लिखित यह काव्य लोकतत्व की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है। हिंदी प्रेमाख्यानक परंपरा की इस रचना में सतीत्व रक्षा का भाव पाठक के मन को गहरे से छू लेता है। सामाजिक कूटनियाँ या बलात्कारियों से नारी किस विध अपने सतीत्व की रक्षा करे। यह सम्वेदना इस कथाकाव्य में प्रणित लोककथा का आधार है। यह रचना वर्तमान जीवन को हितकारी संकेत देती है। यह रचना नारी जागरण का प्रेरक सन्देश देती है। प्रस्तुत रचना दक्खिनी हिंदी में प्रणित हुई है, दक्खिनी हिंदी का प्रमुख क्षेत्र दक्षिण के बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और हैदराबाद, बीदर, गुलबर्गा आदि रहे हैं।

मैनासतवंती के रचनाकार मुल्ला गवासी गोलकुंडा के कुतुबशाही वंश के वंशज मुहम्मद कुतुबशाह तथा अब्दुल्ला कुतुबशाह के प्रिय कवि थे। अब्दुल्ला कुतुबशाह ने गवासी को राजकवि बनाते हुए विविध उपाधियों से अलंकृत किया था। वे अब्दुल्ला कुतुबशाह के ''फ़साहत आसार'' की पदवी से अलंकृत राजकवि थे। गवासी ने ''कुल्लियात गवासी'' में कृतज्ञतापूर्वक ''फ़साहत आसार'' की पदवी दान को इस प्रकार याद किया है ''हजार शुक्र जू खुदा होके यू शह आरिफ, ख़िताब मुज को दिया है फ़साहत आसार''

दखिनी भाषा के विद्वानों का यह मानना है कि गवासी ने सन 1035 हिजरी से पूर्व फारसी से ''चंदा और लोरक'' की कथा का दक्खिनी हिंदी में अनुवाद किया होगा। मैनासतवंती की कथा चंदा और लोरक की कथा से काफी मिलती-जुलती है। चंदा और लोरक के प्रसंग में मैनासतवंती की कथा का संकेत मिलता है, जिसके तहत राजा मैना की सुन्दरता पर मोहित है वह उसे येनकेन प्रकारेण अपने अंत:पुर में लाना चाहता था। वह मैना के सतीत्व के आगे विवश होकर पराजय मान लेता है। इस दृष्टिकोण से इस लोककथा द्वारा नारी के सतीत्व की श्रेष्ठता की प्रतिष्ठा हुई है।

आख्यान काव्य का आधार प्रचलित ऐतिहासिक, पौराणिक या लोकाश्रित कथा होती है। इसे काव्य रूप दे दिया जाता है। लोक के लिए लोकभाषा में रचना करना गवासी की खासियत रही है।

ऐसे प्रतिभासंपन्न कवि गवासी की रचना मैनासतवंती किसी फारसी रचना का अनुवाद है। इस कथा को डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त ने हमीदी के 'इस्यमनामा' से प्रभावित माना है। जब कि सुख्यात विद्वान गोपीचंद नारंग जी ने माना है कि यह रचना इस्यमनामा के अतिरिक्त किसी अन्य एतद् कथा सम्बन्धी रचना से प्रभावित हो सकती है क्योंकि इस्यमनामा की चंदा की अंत में मृत्यु हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाती है, जबकि मैनासतवंती में उसे जीवित बताया गया है। साथ ही इस्यमनामा सूफी रूप में अपने पात्रों की आध्यात्मिक व्याख्या भी प्रस्तुत करता है। गवासी के पात्र लोकजीवन के पात्र हैं। उनकी आध्यात्मिक व्याख्या कही नहीं गई। मैनासतवंती की कथा दौलत काजी, सधना, खेमदास, जान आदि की रचनाओं से अलग एक नए रूप में प्रस्तुत हुई है, गवासी ने साधारण बोलचाल की भाषा में कथा नायिका मैना के चरित्र पर विशेष बल दिया है। इस काव्य में वह आदर्श नारी के मूर्तिमान प्रतीक के रूप में उपस्थित हुई है। पति-परायण नारी के रूप में पति के विरह में व्यथित होकर भी वह अपने सतीत्व की राह पर से तनिक भी विचलित नहीं होती, वह मानती है कि "खुदा ने किया हम को औरत मरद तो होना हमें उसके पग की गरद"

गवासी ने मैनासतवंती को सतपथ से विचलित करने वाली कुटनी की दुर्दशा भी करवाई है।

"किया अपनी बेटी कूं उन संग सार,
मुंडा सीस दूती कूं भाया बहार।
गधे पर उसे सार कर शहर में
फिराया हरेक ठार बाजार में"

इसी प्रकार गवासी की कथा नायिका मैना माँ बाप को बच्चों के लिए अच्छी धाय द्वारा स्वस्थ ढंग से पालन, धार्मिक संस्कार तथा सभ्यता सिखाने के साथ साथ अच्छी सौबत करने-कराने का सन्देश भी देती है। लोकतात्विक दृष्टि से यह आख्यान काव्य अधिक महत्वपूर्ण है।

गवासी अपने समकालीन कवियों में भी बुद्धिमता की दृष्टि से प्रशस्य रहे हैं। उनकी भाषा और शैली सरल और सरस है, उन्होंने अपने काव्य में प्रेम के मार्ग पर अडिग रहने का सन्देश दिया है। बीजापुर के मुहम्मद आदिलशाह ने गवासी को एक हाथी और अनेक घोड़े उपहार के रूप में दिए थे। गवासी की निम्न लिखित पंक्तियाँ भले ही गर्वोक्ति लगती हों पर अस्वाभाविक नहीं लगती।

"मेरे ग्यान अजब शकरिस्तान है,
जो उस थे मिठा सब हिन्दुस्तान है।
जिते हैं जे तूती हिंदुस्तान के
भिकारी हैं मुझ शकरीस्तान के"

(शकरिस्तान= मिठास से युक्त, तूती=तोता-मैना आदि।)

मैनासतवंती कथा में विरहिणी नारी की मनोदशा का सुन्दर चित्र है। गवासी द्वारा रचित मैनासतवंती की कथा दो भागों में विभक्त है, कथा का नायक लोरक नामक चरवाहा है। उसका विवाह मैना के साथ हुआ है। पहले भाग में शाहजादी चन्दा कथा के नायक लोरक के रूप और यौवन पर मोहित होकर अपना प्रेम व्यक्त करती है और लोरक को अपने साथ रहने के लिए कहती है। लोरक पत्नी के पतिव्रत और सुन्दरता की बात करते हुए पत्नी मैना को छोड़कर अन्यत्र जाना नहीं चाहता है, साथ ही राजकुमारी के वैभव के साथ अपनी दरिद्रता का संकेत देकर वह यह भी खुलासा कर देता है कि वह उसके लिए अयोग्य है। राजकुमारी ने लोरक को समझाया कि वह उसकी दीनता को अपनी धन-संपत्ति से भर देगी, तू साथ चल। अंततः

"किये दोनों मिल अस्तमारी यूँ घर,
लिए माल होरक से निकले ऊपर
ले चंदा कू लोरक जो बहुत हुआ,
सो सू गुलगुला जग में जाहिर हुआ।"

(अस्तमारी=माल-धन, हकीकत, होरक=सूर्य, गुलगुला =कोलाहल, हर्ष ध्वनि)

जब राजा को खबर हुई तो वह बहुत हर्षित हुआ क्योंकि वह मैना के रूप पर आसक्त था। वह सोचता है

"चाहे हाथ मेरे जो ओ मास्तान,
न नर कू गरुब होए ओ आफतान"

मैना को हासिल करने के लिए वह एक चतुर कुटनी को बुलाकर मैना को रिझाकर पास ले आने के लिए कहता है। कुटनी ने बड़ाई हांकते हुए कहा कि वह उसका यह काम शीघ्र ही कर देगी। इस प्रसंग में राजा और कुटनी के बीच लम्बी बातचीत हुई। राजा कुटनी को समझाते हुए कहता है कि इस कार्य में अनेक कठिनाइयाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

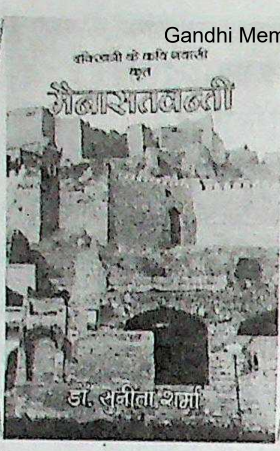

आएँगी पर तुम्हें यह कार्य करना ही है। कुटनी राजा को अपनी कुटिल चालों के बारे में अच्छी तरह समझाकर मैना के पास जा पहुंची।

कुटनी खुद को मैना के समक्ष उसकी धाय बताती है। यह सुनकर मैना उसे बहुत इज्जत देती है। वह अपनी पीड़ा भी सुनाती है कि उसका पति उसे छोड़कर चला गया है। यहाँ उसका कोई सगा-सम्बन्धी नहीं है, अत: वह अकेली रह गई है। इस प्रकार कुटनी अपनी चाल शुरू कर देती है। कुटनी द्वारा लोरक को कोसना मैना के लिए असह्य है। भले ही कुटनी धन का लालच दिखाए पर उसके लिए तो धन का नहीं, धनी-पति का महत्त्व है। मैना इस बात को अच्छी तरह से कुटनी को समझा देती है। मैना यहाँ तीन मित्रों की कहानी सुनाती है। इन मित्रों को जंगल में से सोने की ईंटें मिलीं। वे इसकी भाग-बंटाई के लिए जंगल में ही रहे, एक मित्र गाँव में खाना लाने के लिए गया। शेष दो जंगल में रहे। तीनों के मन में बेईमानी बस गई थी खाना लाने वाले ने दोनों को जहर मिला खाना खिला दिया तो दोनों मित्रों ने उसको मौत के घाट उतर दिया। इस प्रकार धन के लालचवश तीनों की मौत हो गई। कुटनी मैना को अपना यौवन और सौन्दर्य गरीब पति के पीछे बरबाद न करने के लिए समझाती है पर मैना अपने सत की रक्षा को अहमियत देती है और बताती है कि पतिव्रता नारी को शैतान भी डिगा नहीं सकता। कुटनी ने उसे आगे समझाया कि जब उसका पति चंदा के साथ आयेगा तो सौत के आगे उसका क्या महत्त्व रह जायेगा ? वह इसी सन्दर्भ में एक सिपाही और उसकी दो पत्नियों की कथा सुनाती है। सिपाही की एक पत्नी नीचे तो दूसरी ऊपर रहती थी। एक बार एक चोर उसके घर आया तो ये दोनों नारियां चोर को अपना पति मानकर खींचातानी करती हैं। इस खींचातानी में चोर, सिपाही पति के हाथ लग गया, उसने बादशाह के समक्ष अपनी आपबीती सुनाई कि कैसे इन दो औरतों ने उसका हाल बेहाल कर दिया है। इस प्रकार वह कुटनी की बुराई सिद्ध करती है। मैना कुटनी से कहती है कि तू मुझे सौत का भय न दिखा, इस प्रकार कुटनी को संकेत दे देती है कि तू मेरे मन के आदर्श संस्कारों की जड़ को हिला नहीं सकती। मैना कुटनी से कहती है कि तुम तो एक बादशाह की बात कर रही हो पर मैं तो लोरक पर ऐसे हजार बादशाह कुर्बान कर दूँ। इस प्रकार यहाँ मैना का लोरक के लिए एकनिष्ठ प्रेम व्यक्त हुआ है। वह कुटनी द्वारा सुनाये गए दरवेश के किस्से को अपने प्रेम के आगे स्वीकार नहीं करती। वह कुटनी को मक्कार कहकर अपने से दूर होने के लिए कह देती है। कुटनी के राजा के पास वापस लौटने पर राजा ने मैना को पुन: तंग करने के लिए कुटनी को तैयार किया। राजा इस बार उसके साथ गया और छुप-छुपकर उनकी बातें सुनने लगा। कुटनी के द्वारा अनेक प्रलोभन दिए जाने के बावजूद मैना अपनी बात पर अटल रही। अंतत: राजा मैना का मुरीद होकर मैना के सतीत्व की प्रशंसा करने लगा।

''दोनों हाथ से शह तस्लीम कर,
क्या तू मेरी माँ तेरा है पिदर,
किया एक सकी मैं हूँ फर्बंद तेरा,
बख्श तू जो कुछ है तू तनकी सिर मेरा।''

राजा स्वयं लोरक को बुलवा भेजता है। चंदा और लोरक का विवाह करवा देता है। ये तीनों प्रसन्नता पूर्वक रहते हैं। बालाकुंवर पश्चाताप के कारण बच जाता है। कथा के अंत में मैना कुटनी को दण्ड देती है:-

''मुंडा सिर दूती कू पाप वाहार,
गधे पर उसे सर कर शहर में,
फिराया घर एक तार बाजार में,
अजब खेल है ऐसे करतार के।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funded by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गवासी ने सत की प्रशस्ति करते हुए कहा:

''देखता सत दिया होर जेहमत दिया,
मशक्कत दिया हारे राहत दिया।''

गवासी के उपरांत अन्य कवियों ने भी मैनासत से सम्बंधित प्रेमाख्यान लिखे हैं। भारतीय प्रेमाख्यानों की परंपरा संस्कृति और साहित्यिक दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस परंपरा ने सूफी कवियों को प्रभावित अवश्य किया है परन्तु प्रेमाख्यानक धारा इससे सर्वथा स्वतन्त्र रही है। हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों ही वर्गों के कवियों ने इस परंपरा को विकसित और सुदृढ़ किया है। इस तरफ भारतीय प्रेमाख्यानों में हिन्दू कवियों ने परंपरागत पौराणिक आख्यानों को आधार बनाकर प्रेमाख्यानों की रचना की तो उस तरफ इस्लामी आक्रमणकारियों के साथ आये सूफी कवियों ने भारतीय परंपरा से प्रभाव ग्रहण करते हुए अपनी मसनवी शैली में प्रेमाख्यानों का प्रणयन किया। सूफी कवियों ने पौराणिक आधार के स्थान पर लोकजीवन में प्रचलित भारतीय प्रेमाख्यानों को अपनी रचना का आधार बनाया। इस कथा के आधार पर सोलहवीं शताब्दी के आस-पास साधन नामक कवि की मैनासत नामक रचना भी उल्लेखनीय है, साथ ही जहाँगीर के समकालीन सूफी कवि हमीदी द्वारा यह कथा 'इस्यमनामा' के नाम से प्रस्तुत की गई है। 'इस्यमनामा' में मैना लोरक की ब्याहता है। उसे छोड़कर लोरक चाँद नामक युवती को लेकर अन्यत्र चला गया। सातन ने दूती द्वारा मैना को फुसलाने की कोशिश की। मैना अपने सतीधर्म का पालन दृढ़तापूर्वक करते हुए अपने संकल्प में अडिग रही। संयोगवश चांद की मृत्यु हो गई और लोरक वापस लौटकर मैना के साथ सुखपूर्वक जीने लगा। हमीदी की इस रचना में अन्योक्ति का सफल प्रयोग हुआ है। 'इस्यमनामा' का लोरक ईश्वर का प्रतीक है। मैना आत्मा का प्रतीक है। सातन शैतान और कुटनी वासना का प्रतीक है। ईश्वरोन्मुखी आत्मा को शैतान वासना के जरिये ईश्वरविमुख करने का प्रयत्न करता है।

मैनासत परंपरा में खेमदास की मैना को सत तथा दक्खिनी हिंदी के मुल्ला गवासी कृत मैना सतवन्ती नामक रचना प्राप्त होती है। साधन का 'मैनासत' प्रमुख है। यह रचना गोहारी भाषा में दोहा और चौपाई छंदों में प्रणित हुई है। इसी प्रकार अलग-अलग राज्यों में मैनासत प्रेमाख्यान के रूप में उपलब्ध होते हैं। इनमें कोई खास अंतर नहीं है। नामों के विषय में कुछ फर्क दिखाई पड़ता है अवश्य पर उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं। वैसे लोरिक का नाम सभी रचनाओं में लगभग एक-सा है। चंदा का नाम भी सर्वत्र समान ही है। मैना कहीं मयनावती, कहीं पर मंझारिया और भोजपुरी की लोकभाषा में कहीं बदी मंजरी भी है। इस मैना अथवा मंजरी के लिए सबसे बड़ी बात यह है कि वह सती या सतवन्ती कहलाती है। चंदा ज्यादातर प्रेयसी ही है। कई काव्यों में मैना की मात्र सगाई ही हुई बताई गई है और विवाह बाद में होता दिखाया गया है। मैनासत की कथा का आरम्भ सामान्य रूप से समान ही हुआ है। यह समानता इस संभावना को पुष्ट करती है कि मूलतः यह कथा लोककंठ की है। मैनासत में प्रारंभ में स्तुति है पर अंत में फलश्रुति आदि नहीं है, कथा में सर्गबद्धता भी नहीं है। डॉ. रामपूजन तिवारी के अनुसार इन कवियों ने प्रेमाख्यानों की रचना की है, पर वे मात्र कहानी कहकर मनोरंजन करना नहीं चाहते थे, बल्कि पाठकों के समक्ष अपने विचारों को प्रस्तुत करना चाहते थे। कुछ तो सती का महात्म्य दिखाना चाहते थे या किसी व्रत तथा धार्मिक अनुष्ठान की महत्ता दिखाना चाहते थे। एकाध प्रेमाख्यान ऐसा भी मिलता है जिसमें प्रेमाख्यान के माध्यम से भक्त कवियों ने अपनी भक्ति को रूपायित किया है। मैनासत में सांगरूपक को देखते हुए उसे सूफी प्रेमाख्यानों की श्रेणी में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। उन्हें पूर्ण रूपेण भारतीय काव्यों से ही सूफी कवियों को प्रेरणा मिली है। मैनासत में संग अथवा निरंग रूपक का कोई आभास नहीं मिलता। इनका विषय भी सात्विक प्रेम है। मैना और लारक का मिलन वियुक्त युगल का मिलन है। इन दोनों का विवाह परंपरागत सामाजिक विधि द्वारा समर्थित है। सियाराम तिवारी के मतानुसार, मैनासत गर्हिस्थ जीवन का प्रेममूलक काव्य है। यह खंडकाव्य लोक मनीषा की देन है। इस में गार्हस्थ्य अथवा स्वकीय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के प्रेम का चरम रूप मिलता है। इसमें जो गार्हस्थ्य प्रेम की एक तल्लीनता और निष्ठा है, वह अन्य प्रकार के हिंदी प्रेमकाव्य में दुर्लभ है।

कवि ने ''मैनासत'' प्रेमाख्यान काव्य के संकुचित धरातल पर तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों विश्वास तथा रीति-रिवाजों आदि का मूल्यांकन किया है, साथ ही नारी के सतीत्व के उच्च आदर्श की प्रतिष्ठा भी की है। प्रेम में अपार शक्ति है। उसका आधार सतीत्व है। उससे प्रेम की दृढ़ता, पवित्रता, नि:स्वार्थ भावना तथा शक्ति प्राप्त होती है। यह शक्ति जीवन में उठने वाले भयावह आंधी-तूफानों से टक्कर लेने की ताकत देती है। ऐसा कुछ भी शेष नहीं बचता जो सतीत्व से विचलित कर सके। प्रेम विशेष रूप से सहानुभूतिमय और सत्य है। वह स्थायी और अधिक व्यापक है। इसमें स्वार्थ का अभाव, सम्पूर्ण आत्म-त्याग और तन्मयता की चरम-सीमा है।

संक्षेप में, यह प्रेमाख्यान किसी कवि विशेष की प्रतिष्ठा का परिणाम नहीं पर लोक मनीषा की उपज है। जो अज्ञात काल तक लोककंठ में अवस्थित और बाद में लिखित रूप में आकार लेती है। लोकोदभुत होने के कारण उसमें सहज मानवीय अभिव्यक्ति का उज्ज्वल रूप है। यह पूर्ण रूप से लोककथा है। प्राय: लोककथाओं में नायिका प्रकृति तथा पशु-पक्षियों को अपनी व्यथा कथा कहती है। प्रकृति शांत रहती है परन्तु पशु पंखी मुखर होते हैं। मैनामत में ऐसे वर्णनों का अभाव है। सहज वर्णनात्मकता के कारण वह लोकसाहित्य में स्थान पा लेती है। इसमें चमत्कारों का अभाव पाया जाता है। उसका कलेवर वर्णनात्मक है। इस में प्रकरण वक्रता का भी अभाव है।

मैनासत के प्रसंग को लेकर हिंदी के उपरांत पंजाबी, बंगला तथा फारसी आदि में भी काव्य रचनाएँ हुई हैं। इन कवियों ने प्रेम और सतीत्व की दृढ़ता के उच्च मूल्यों की अभिव्यक्ति के लिए इस लोककथा की सहायता ली है। कवि ने यह भी स्पष्ट किया है कि सत की रक्षा करने वाले की रक्षा करतार करता है। इस कथा प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि प्रिय के वियोग की दशा में भी अपने सत की रक्षा करने वाली नायिका सही अर्थों में सतवन्ती है। इस रचना के द्वारा कवि ने यह सन्देश दिया है कि सत से ही जीवन में अपने भाव को पूर्णतया प्राप्त किया जा सकता है। समाज की क्रूरता और वासना की कटुता इस सत को मलिन नहीं कर सकती। मैनासत विषयक प्रेमाख्यानों का हिंदी में ही नहीं बल्कि इसका प्रयोग अन्य भाषा के कवियों ने भी अपनी काव्य रचना में किया है। इस प्रकार मैनासत प्रेमाख्यानक काव्य का प्रचलन भारत के किसी एक क्षेत्र विशेष में ही नहीं अपितु समग्र क्षेत्र में प्रचलित है। साहित्य के इतिहास के मध्यकाल की इस कथा का हर युग में अपना अलग महत्त्व रहा है। इस काव्य में नारी के पति के प्रति अटूट प्रेम और पतिव्रत्य पर अडिगअटल रहने के मूल्य की प्रतिष्ठा की गई है। इस प्रकार मैनासत विषयक कथा पंजाब, बंगाल, अवध और गोलकुंडा आदि क्षेत्रों में अत्यंत प्रचलित रही। काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से ये रचनाएँ भले ही अधिक विवेचित न रही हों पर तत्कालीन युग जीवन में यह प्रसंग अधिक प्रचलित था। हिंदी के साथ अन्य भाषाओं में निर्मित काव्यों से यह बात तो सिद्ध हो जाती है कि नारी के सतीत्व के सदाचार प्रसंग को मैना और लोरक की कथा के माध्यम से कहना अधिक प्रासंगिक रहा है। यह प्रसंग स्वस्थ जीवन-मूल्यों का पक्षधर है।

डॉ. सुनीता शर्मा जी ने पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और छत्तीसगढ़ के प्रदेशों में मशहूर गवासी की रचना मैनासतवंती को देवनागरी में उपलब्ध करा कर यशस्वी कार्य किया है। यह गाथा राजस्थान और हैदराबाद के लोकजीवन में भी बहुत लोकप्रिय है। सुनीता जी के इस प्रयास के फलस्वरूप हिंदी के अध्येताओं को दक्खिनी हिंदी की अरबी-फारसी लिपि में प्रकाशित इस महत रचना से परिचय प्राप्त होगा। यह रचना नारी के सतीत्व की चिरंजीव प्रासंगिकता की प्रतिष्ठा करती है। कष्टसाध्य इस कार्य के साथ संपादिका डॉ. सुनीता जी ने इस कथा प्रसंग से जुड़ी अन्य कृतियों का भी परिचय देकर साधुकर्म का निर्वाह किया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सी. 26/ 35-40, रामकटोरा, वाराणसी, 221001
फो (0542) 2204504 मो. (0) 9455168359

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

उड़े कहानी और कवितायें मेरे सपनों के भारत में

यानी मेरे सपनों के भारत में बाल सहित्य कैसा हो ? तो....सबसे पहले......

बाम्बे टू बार्सिलोना यानी नांदीपाठ

'शाबाश अमीन, कॉफी अटर्ली, बटर्ली, डिलिशियस है।' हमारी जानी पहचानी प्यारी-सी गुड़िया 'अमूल गर्ल' का 'ब्रह्मा' यूस्टेस फर्नांडिस 'आई एम बिकॉज़ ऑफ यू' के लेखक अमीन शेख को उसकी कल्पना में कहते हैं। पर कॉफी की इस चुस्की का इस लेख के मंगलाचरण से क्या ताल्लुक ? तो सुनिएअपने बारे में अमीन शेख क्या कहते है, सड़कों पर रहने वाले हजारों बेघर बच्चों की तरह मैंने भी भीख मांगी, चोरी की और जूते पालिश किए। पाँच साल की उम्र में मुंबई की एक चाय की दुकान पर काम करता था।......एक दिन......दो गिलास मुझसे टूटे गये। दुकानदार की मार पड़ने के साथ-साथ घर पर भी (सौतेले पिता द्वारा) पिटने के आसार थे। मैं डरकर घरं छोड़कर भागा।' फिर तो बेसहारा बच्चों के लिए काम करने वाली संस्था 'स्नेह सदन' ने उसे शिक्षा दी और अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया। आगे वह उसी संस्था से जुड़े यूस्टेस की कार चलाने लगा। फिर उनके साथ अपने पहले विदेश सफर में पहुँचा भूमध्य सागर के तट पर स्थित स्पेन का शहर बार्सिलोना। तो आगे चलकर 'बाम्बे टू बार्सिलोना' नाम से लाइब्रेरी कैफे चलाना शुरू किया। यहाँ बैठकर आप कॉफी पीजिए, साथ ही पढ़िए अपनी पसन्दीदा किताब। यहाँ आपके होंठ छू ले कॉफी का मग और निगाह उड़े किसी किताब पन्नों के अंबर में.....

यूस्टेस ने तो इस दुनिया को अलविदा कह दिया, मगर आज अगर व रहते तो अमीन से कहते, 'शाबाश। (अमर उजाला4.11.16) यानी हमारे बच्चों के हाथों में किताब होनी चाहिए, न कि धोने के लिए किसी की जूठन लगी गिलास।

अब्राहम लिंकन ने भी तो कहा था, 'मेरा सर्वोत्तम मित्र है वो जो मुझे एक ऐसी किताब दे जिसे मैंने अभी तक नहीं पढ़ी है।' (रविवार डाइजेस्ट : नवम्बर, 2016)

मेरे सपनों के भारत में वो देखिए......

हरी घास की चादर पर हिरनौटों की तरह उछल रहे हैं। बच्चे अपने हाथों को आकाश की ओर उठाये। आख़िर वे अपनी नन्ही-नन्ही मुट्ठिओं से पकड़ना क्या चाहते हैं ? नील नभ के नीचे हवा के थपेड़ों में वे क्या तैर रहे हैं ? लाल नील सफ़ेद गुब्बारे ? या परिंदे ? या पतंगें ? अरे नहीं जी,वे तो भविष्य के बाल साहित्यकारों की कहानियाँ हैं.....कविताएँ हैं.... ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तो, 'चंदू मैंने सपना देखा' (नागार्जुन) के तर्ज पर मैं भी ख़्वाब देखता हूँ कि हमारे बच्चे, बच्चियाँ, पोते-पोतियां, नाती-नतनियां या परपोते या उनके भी आगे की पीढ़ी के बच्चे उन्हें पकड़ रहे हैं, और पढ़कर खिलखिला रहे हैं या पलकों की सीपियों के नीचे रच रहे हैं कहानी के किसी चरित्र के लिए अश्कों की सौगात।

उड़ने के लिए परिंदों को चाहिए अपना पंख और हौसला। साथ ही खुला आसमान। उसी तरह कहानी कविताओं को उड़ान भरने के लिए चाहिए-हृदय को छू लेने वाली रचना, बाल पाठकों का उत्साह, उनके किशोर हाथों की छुअन यानी कोर्स बहिर्भूत किताबों को उठाने का अवसर हो उनके पास। साथ ही ध्यान रहे डॉ. नामवर सिंह ने कहा है, 'प्रौढ़ साहित्य से ज्यादा चुनौती भरा काम है बाल साहित्य लिखना।' जब 'कथा' के बालसाहित्य आलोचना विशेषांक के सम्पादक अनुज ने उनसे 'छंद तोड़कर कविता के नये सिस्टम' के बारे में पूछा तो उन्होंने अफ़सोस जाहिर करते हुए कहा, 'दरअसल आज लोगों के जीवन का छंद टूट गया है।'

तो मेरे हिन्दुस्तानी ख्वाब में बच्चों को मिले इसी तरह छंद से सजी हुई कवितायें, आनन्द का उफ़ान मारती कहानियाँ......

पर

भूखे भजन न होय गोपाला।

इसके लिए चाहिए कि आने वाले दिनों में अपने देश में कोई भी बच्चा रोटी के लिए न तरसे। उमर ख़ैय्याम अपनी एक रुबाई में जमीं पर जन्नत उतर आने की शर्तें गिनाते हुए कहते हैं कि अगर किसी दरख़्त की छांव के नीचे तुम मेरे पास बैठ कर गुनगुनाती रहो, हाथ में हो एक कविता की किताब, और बग़ल में हो एक पानपात्र, साथ में रहे रोटी, तो बस फ़िरदौस उतर आये इस जहाँ पर.....। तो केवल किताब से ही काम नहीं चलता, साथ में रोटी भी जरूरी है।

'हंगामा रिपोर्ट' में अमर्त्य सेन और [illegible] के अनुसार भारत में कुपोषण एवं इससे जुड़ी बीमारियों के कारण प्रति वर्ष 40 लाख मौतें होती हैं, (हिन्दू-अंग्रेजी 6.3.12.) वैश्विक भूख सूचकांक में 88देशों में भारत 66वें पायदान पर है। सूडान, कैमरून और नाइजीरिया जैसे ग़रीब देशों से भी नीचे। हमारे यहाँ 46 फीसदी बच्चे हैं कुपोषण के शिकार। (हिन्दू 27.8.09)। तो पहली शर्त तो यही होगी कि मेरे सपनों के भारत में कोई भी बच्चा (या कोई भी) भूख से बिलबिलाते हुए न सोये। तब तो कहीं वह कहानी कविता के परिन्दों को छूने के लिए छलांग लगा सकता है।

अब जिस तरह परिंदों को उड़ान भरने के लिए पंख चाहिए, उसी तरह उन किताबों को पढ़ने के लिए बच्चों में भाषा ज्ञान होना भी जरूरी है, तो....

कोर्स, किताब और स्कूल-कुल मिलाकर 'पढ़ाई'

'अरे रे वो बच्चा कहीं गिर न जाए।' स्कूली बच्चों से ठसाठस भरे विक्रम ऑटो की पिछली सीट पर बैठा वह बच्चा सो रहा है। गले से लटक रहा है पानी का बॉटल। सिंदबाद के कंधे पर बैठ बूढ़े की तरह उसकी पीठ पर बैठी 'मोटी सरस्वती' (यानी बैग) उसे सामने की ओर धकेल रही है। इस बचपन को कैसे बुलाउँ ? मैं कौन-सी कहानी सुनाउँ ?

2016 की दीवाली में दिल्ली में छाई जानलेवा धुंध लाल किले से लेकर ताजमहल और बड़ा इमामबाड़ा पर अपनी काली चादर बिछाते हुए अब नीलकंठ की जटाओं के ऊपर जहर के बादल फैलाने पर आमादा है। ऐसे में बच्चों को सांस की बीमारी से लेकर बस्ता ढोते-ढोते पीठ दर्द तक बहुत कुछ हो सकता है। तो कब वह पढ़ेगा कोर्स की किताब और कब दौड़ेगा पकड़ने काले अक्षरों से बनी इस रंगबिरंगी तितलियों को ? तो ऐ मेरे सपनों के हिन्दुस्तान, तुम्हारे नभ में न हो ऐसे विषैले कोहरे। स्कूल जाते हुए बच्चे निरोग रहें, खुशहाल रहें।

अब इस पढ़ाई की व्यवस्था का जरा जायजा लें

1912 में कायिकी (फिजिओलॉजी) याह मेडिसिन में नोबल विजेता फ्रांसीसी सर्जन एलेक्सिस कैरेल कहते हैं हर बच्चा होशियार (जीनियस) पैदा होता है, बस हमारे स्कूल उन्हें भोंदू (इडियट) बना देते हैं। (हिन्दू: 18.12.11)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिडलसेक्स हॉस्पिटल (लंदन) के कार्डियोलॉजी के प्रोफेसर एवं मनीपाल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति प्रो. बीएम हेगड़े का मन्तव्य भी ध्यान योग्य है -शिक्षा का उद्देश्य एक स्वस्थ दिमाग का निर्माण होना चाहिए, न कि केवल धनवर्षा करने वाले एक पेशे या धंधे की तैयारी।....परीक्षा में अंक प्राप्ति का दुराग्रह (ऑबसेशन) समाप्त करके एक स्वस्थ शिक्षा व्यवस्था के निर्माण के लिए समाज से सारे स्कूलों की छुट्टी कर देनी चाहिए। (हिन्दू वही)

अंग्रेजी में एडुकेट शब्द की उत्पत्ति लैटिन के इन शब्दों से हुई है 1. Educare : जिसका सम्पर्क पालन पोषण से है, और 2. Educere अर्थात अगुवाई करना। मगर हमारे यहाँ शिक्षा का पर्यायवाची शायद भय है। शिक्षकों का डर, इम्तिहान का डर, असफलता का डर। ऐ मेरे हिन्दोस्ताने-ख्वाब कम से कम तुम्हारी शिक्षा व्यवस्था में आनन्द हो, उल्लास हो। जहाँ नयी चीजें जानने की इच्छा की रोशनी झिलमिलाती रहे।

एक तस्वीर यह भी देखिए। गीता किंग्टन ने अपने शोध में 180 स्कूलों की छानबीन में पाया कि उ0 प्र0 और बिहार में 24 फीसदी शिक्षक औसतन ग़ैरहाजिर रहते हैं। यानी 87,500 मिसिंग टीचर्स (टाइम्स ऑफ इंडिया. 22.1.12)। तो ? बिल्ली के कंठ में कौन बांधेगा घंटी ?

उत्तराखंड बन तो गया मगर वहाँ की शिक्षा व्यवस्था की बानगी देखिए। अनिल प्रकाश जोशी कहते हैं -उत्तराखंड के अस्तित्व में आने के पंद्रह साल बाद वहाँ 1800 विद्यालय बंद होने के कगार पर खड़े हैं। ख़ुद मुख्यमंत्री के विधानसभा क्षेत्र में 155 में से 30 स्कूल क्षतिग्रस्त हैं। देवापगा के आंचल में बसे राज्य में 1,117 स्कूलों में पानी की व्यवस्था तक नहीं। 546 में शौचालय भी नहीं। (अमर उजाला 24.9.15.) और आज सोलह साल बाद वहाँ पर्वतीय जिलों में 2,80,000 मकानों में ताले पड़े हैं। बत्तीस लाख लोगों का पलायन हुआ है। 750 स्कूलों की स्थिति इतनी जर्जर है कि आकाश में बादलों के आते ही घोषणा हो जाती है-छुट्टी ! (अ. उ. 9.11.16.)

ओडिशा साहित्य के जनक फकीर मोहन सेनापति के बचपन की यह घटना भी हमारी शिक्षा व्यवस्था पर काफी प्रकाश डालती है। वे जब पाँच महीने के थे तो उनके पिता की मृत्यु हो गयी। माँ ने खाट पकड़ ली और चौदह महीने बीमार रहने के बाद बेटे को अनाथ बनाकर चल बसीं। दादी ने उनको पाला पोसा। उनको स्कूल भेजा गया। पढ़ाई के बाद जब सारे बच्चे घर जाते तो उन्हें मास्टर साहब की सेवा के लिए रोक लिया जाता। जब महीने के अंत में गुरुजी तनख़्वाह माँगने आये तो उनके निष्ठुर चचा जान ने मास्टर साहब से कहा, 'आप पढ़ाते तो हैं नहीं, तनख़्वाह माँगने कैसे आ गये ?'

तो पंडित जी ने कहा, 'अरे मैं तो इसे अपने पास रखकर पढ़ाता हूँ। खेलने भी नहीं देता।'

तो चाचा ने मुस्करा कर कहा, 'लेकिन इसकी पीठ पर तो मुझे एक भी बेंत के निशान दिखाई नहीं देते। तो ?'

बस, आगे से अकारण ही मास्टर साहब उनकी पीठ पर दस बारह बेंत बरसा देते।

स्कूल में आगे नई किताब ख़रीदने के भी पैसे उनके पास नहीं थे। पढ़ाई छोड़ने की नौबत आ गयी। ख़ैर, पिछली परीक्षा में प्रथम श्रेणी मिलने के कारण पुरस्कार में ही उन्हें कोर्स की सारी किताबें मिल गयी। मुफ़्त ! (अमर उजाला 8.11.16.)

'रूस की चिठ्ठी' में वहाँ की शिक्षा व्यवस्था की आलोचना करते हुए रवीन्द्रनाथ ने लिखा था -साँचे में ढाल कर जिस मनुष्यता का निर्माण होता है, वह टिक नहीं सकती। सजीव मन के तत्वों के साथ अगर विद्या का सार न मिले तो या तो वह सांचा ही एक दिन टूट कर बिख़र जायेगा, नहीं तो इन्सान का मन ही सूख कर मर जायेगा, या चाबी से चलने वाला खिलौना बनकर रह जायेगा।

तो मन का सजीव स्फुटन कैसे हो ? उस भारत में इसका पता कौन बतलायेगा ?

कहानी कविता

प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन (1936) में प्रेमचंद ने अपने अभिभाषण में कहा था, 'साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकट की गई है। जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित एवं सुन्दर हो, और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो। साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयां और अनुभूतियां व्यक्त की गयी हों।'

सिर्फ़ सच्चाइयों से अख़बार के पन्ने भरे जा सकते हैं, परंतु साहित्य का गगन नहीं। जैसे फूलों से ख़ुशबू आती है, साज बजने से मन अपने आप झूम उठता है, उसी तरह सच्चे साहित्य के पाठ से मन में अनुभूतियों का उन्मुक्त आकाश उद्भासित हो जाता है। मानो दिन भर के श्रम के बाद आप गंगा की निर्मल धरा में अवगाहन कर ख़ुद को तन मन से तृप्त कर लेते हैं। तभी तो पल्लव ने लिखा है, 'कहानी अगर पढ़ने लायक नहीं है तो उसे कोई पढ़ेगा ही क्यों ?' (कहानी का लोकतंत्र)

कविता में छंदों के साथ ब्याह या बिछोह की बात तो नामवर जी से आपने सुन ही ली है, 'शिक्षारंभ' में रवीन्द्रनाथ लिखते हैं 'जल पड़े पाता नड़े' यह पंक्ति मानो उनके जीवन में आदिकवित की प्रथम कविता है। आख़िर इसमें ऐसा कौन-सा माधुर्य है जो बालक के अन्तर्मन को एक स्निग्ध जुन्हाई से सराबोर कर देता है? रवीन्द्रनाथ कहते हैं-अत्यानुप्रास है। इसीलिए कही हुई बात समाप्त होकर भी ख़त्म नहीं होती। भले ही उसके वाचन का अंत हो जाता है, परंतु उसकी झंकार दिलो दिमाग में अनुगुंजित होती रहती है। रिमझिम बूँदें बरसा पानी/पत्तियों ने छेड़ी कहानी.....तो कौन सुनेगा उन पत्तियों से बैसाख जेठ की तपन में झुलसने की, पावस में भीगते हुए पाजेब बजाने की, बसंती पवन में खिलखिलाने की कहानी ?

डॉ0 श्रीप्रसाद 'बाल साहित्य सृष्टा रवीन्द्रनाथ टैगोर' का आरंभ यूँ करते हैं, एक चीनी कहावत है

हरी डाल अंतर में लहराओ/गीत सुनाती चिड़िया आएगी।

मानव मन की यही वासंती पौध है, जो मनुष्य को बाल साहित्य सर्जना के लिये प्रेरित करती है, क्योंकि बिना इस गीत गाने वाली चिड़िया की प्रेरणा के शब्द फूटेंगे ही नहीं।'

'नंगा तलाई का गांव' में डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी ने एक वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी का जिक्र किया है। उनका नाम है महेश दत्त मिश्र। पता नहीं वे सज्जन कवि थे भी या नहीं, परन्तु उनकी इन दो पंक्तियों से देखिए आपके अंतर्मन में जाने कितनी खिड़कियां खुल जाती हैं।

मां बाप बहुत रोए घर लौट अकेले में/
मिट्टी के खिलौने भी सस्ते न थे मेले में।

इन पंक्तियों से गुजरते हुए आपके मन में कितने ही दृश्यों का मेला लग जाता होगा। वो रहा हामीद -अपनी दादी बूढ़ी अमीना के लिए चिमटा ख़रीद रहा है। आज ईद है न ? पर बेचारे ने सवेरे से कुछ खाया नहीं। दादी ने उसे रास्ते में खाने के लिए जो पैसे दिये थे, उसे अपने लिए ख़र्च न कर वह अभागा दादी के लिए चिमटा ले रहा है। 'रोटी बनाते समय मेरी दादी की अंगुलियां जल जाती हैं न ?'

या इस नाचीज की छोटी-सी कहानी 'मेला' (स्नेह : अप्रैल 2003) में नन्हीं बच्ची तिन्नी का मिट्टी का गुड्डा मेले में पीछे कहीं दुकान में छूट जाता है। इधर रथयात्रा के मेले में बारिश शुरू हो गयी। तो कौन उसे लाकर तिन्नी को देगा ? दुकान में सजे मिट्टी के शेर, तोते, हाथी सभी अपने-अपने ढंग से तिन्नी की मदद करना चाहते हैं। यहाँ तक कि सड़क के दरिया में तैरती कागज की कश्ती भी कहती है-आओ गुड्डा मुंझ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें तिन्नी के पास पहुँचा देती हूँ। क्या यह संभव हो सकता है ?

यहाँ सवाल यह नहीं कि मिट्टी के खिलौने बरसात में घुल कर रह जायेंगे। सवाल यह नहीं कि कागज की नाव लबालब पानी में डूब जायेगी। क्या उससे गुड्डे का भार सँभलेगा ? यहाँ बात दर असल यह है कि-ऐ दोस्त, मुझसे तेरे आँसू देखे नहीं जाते। हमदर्द दुख बांटने आता है। साथी हाथ बढ़ाता है। निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरू समाना। (किष्किन्धा कांड, मानस)

महेश जी की पंक्तियों में मां की ममता रो रही है, पिता की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS, MoE, 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यंग्य

डी-2/ 79, पश्चिमी किदवई नगर,
नज़दीक दिल्ली हार्ट,
नई दिल्ली।

स्वाति श्वेता

कोकिला बेन बनाम ऐप के बाउंसर

कोकिला बेन फेसबुक की बहुत बड़ी चट्टो थी। अपने फेसबुक अकाउंट के साथ-साथ वन प्लस वन के स्कीम के तहत वह अपने पति छग्गन भाई का फेसबुक अकाउंट भी चलाती थी। छग्गन भाई ठहरे व्यापारी नंबर वन। व्यापार से मत्था मारने से फुर्सत मिलती तभी न कहीं और बगुले की तरह ध्यान लगाते, इसलिए उन्हें कोई फ़र्क़ नहीं था कि उनका अकाउंट उनकी बीवी नंबर वन के हाथों में उछलेगा और कूदेगा। इधर बच्चों का कहना था कि 'एक के साथ दूसरा मुफ्त' जैसी स्कीम यहाँ नहीं चल सकती। दो-दो अकाउंट संभालना कोकिला बेन के लिए बहुत मुश्किल हो जाएगा पर कोकिला बेन कोई बच्ची थोड़े न थी कि मान जाती। उनका कहना था कि छग्गन भाई के अलग-अलग ब्लैक और वाईट बैंक अकाउंट जब वह सँभाल सकती हैं तो ये क्यों नहीं ?

ख़ैर छोड़िए......

कोकिला बेन को छग्गन भाई ने घर के आगे वाले हिस्से में एक छोटी दुकान खोल दी थी....

एक दिन अपनी इसी दुकान में बैठ जब फेसबुकिया रही थीं तो एकाएक झुन-झुन करते हुए एक ऐप अवतरित होता है, ऊंगली लगते ही एक प्रश्न अलादीन के जिन्न की तरह लिखा हुआ प्रगट हुआ.....'अपना विवरण जानिए ?' करना क्या था, मोहतरमा ने अपनी लालायित ऊंगली उस प्रश्न पर टीप दिया। कुछ एक सेकंड में उत्तर धीरे-धीरे इस लोक की सीढ़ियाँ उतरता हुआ सामने खड़ा हो गया.....'आप खुशी के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहती हैं, आप जीवन से बहुत प्यार करती हैं और सभी चुनौतियों को स्वीकार करती हैं, आपका व्यक्तित्व मन लुभावना है।'

लो जी ऐप की पिच पर कोकिला बेन के नाम का छक्का लग चुका था। कोकिला बेन फूल कर कुप्पा हो गई और अपनी कुर्सी पर उछल कर ऐसे बैठीं मानों सातवें आसमान के बादलों पर लांच हुई हों। खुशी उनकी उबलते दूध की तरह बार-बार शरीर रूपी बर्तन से बाहर आने को हो रही थी। अपनी भावनाओं की आँच वह जैसे-तैसे धीरे करने में लगी रहीं पर खुशी भला कहां मानने वाली थी ? इतनी तारीफ तो कोकिला बेन के थेपलों और ढोकलों तक की आज तक किसी ने नहीं की थी। रफ्ता-रफ्ता यह ऐप उन्हें अपनी ओर और खींचने लगा।

नतीजा यह निकला कि कोकिला बेन अब और बैटिंग करना चाहतीं थी। कोकिला बेन को ऐप की पिच पर प्रश्नों के आउटस्विंगर, इनस्विंगर, औफकटर, बाउंसर सब आने लगे और वह सब को धैर्यपूर्वक खेलती चली गई। पहला आउटस्विंगर था..... 'जानिए कौन आपके पीछे बातें करता है?' उत्तर जानने के लिए कोकिला बेन ने उसे हल्के से टच कर दिया। एक, दो, तीन चार और यह क्या पाँच फेसबुकिया सहेलियाँ और एक सहेले का नाम उभर कर आता है।

'ओह ! तो ये परिन्दे हमारे ही घोंसले से तिनके ले हमारे ही खिलाफ नया घोंसला बना रहे हैं' कोकिला बेन ने तुरंत उन सभी को अनफ्रेंड कर दिया और अगले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनस्विंगर को आजमाया.....'आपके नाम के हिसाब से आपको कौन-सा व्यवसाय करना चाहिए?' कोकिला बेन ने खड़े-खड़े ही हिट लगा दिया। कुछ सेकंड में उत्तर छन्न कर आया.... 'माडलिंग'। पाँच फुट एक इंच की गोल-मटोल कोकिला बेन इस एक शब्द को पढ़ कर इतना खुश हुई जितना ऐश्वर्या राय और सुष्मिता सेन भी नहीं हुई होंगी।

आव देखा न ताव देखा और उन्होंने अपनी इस छोटी-सी दुकान का शटर गिरा दिया और एक तख्ती बाहर दे लगाई.....यहाँ जो दुकान थी वह अब बंद है।'

घर में बैठ वह आज सारे जादुई स्ट्रोक आज़मा लेना चाहती थी। प्रश्नों के मोह, माया, लिप्सा में लबालब कोकिला फिर ऐप की पिच पर बैटिंग करती है और इस बार बाउंसर का सामना करती है...'आपके भविष्य में होने वाले पति की राष्ट्रीयता क्या होगी?' एक और पति? यह कैसे हो सकता है? तीन टाइम की आरती करती हूँ, मंगलसूत्र को आँख से सटाती हूँ, पूरी परंपरा के साथ इनका नाम ले सिंदूर भरती हूँ, फिर एक और पति।'
काँटा लगा, हाई लगा।

अब तो देखना ही पड़ेगा कि कौन है ये और कहाँ से है? खोज चक्करी अपना काम शुरू कर चुकी थी। धीरे-धीरे छन्न-छन्न कर एक फोटो उनके सामने आता है और फिर पीछे से एक नाम।

'उई माँ ! जस्टिन बीबर। हे कान्हा जी बिटिया को समझाते रहे हो, इस मुए की तस्वीर कमरे में निकाल दो और आपने इसकी ही तस्वीर हमारे जीवन में डाल दी।' इस से पहले कि यह मुआ उन्हें कहीं देख न ले उसने झट से अपना अकाउंट बंद किया।

एक बार ऐप की पिच पर कोकिला बेन फिर से खड़ी हो गई बैटिंग करने। इस बार अंतर केवल यह था कि अब की बार छग्गन भाई की तरफसे इनिंग शुरू होने जा रही थी।बैटिंग शुरू हुई और ऐप ने पहले प्रश्न की गूगली फेंकी'जानिए आपको कौन स्त्री छुप-छुप कर देखती है?'कोकिला बेन का जी घबराया पर करती तो क्या करती। तब ऐसा लगा मानों किसी ने हल्के से उसके कान में फुसफुसाया.....प्रश्न को तो खेलना ही होगा नहीं तो कोकिला तुम्हारी इनिंग ख़त्म....और डरते-डरते उन्होंने बटन दबाया।

एक, दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह, तेरा करूँ दिन गिन-गिन के इंतजार...और कई लोक का भ्रमण करने के बाद उत्तर कोकिला बेन की आखों के सामने था...सुनीता सौ बार, चित्रलेखा एक सौ पच्चीस बार, कामिनी दो सौ पचास बार।

करमजलियो ! क्या घर में बाप भाई पति बेटा नहीं, जो दूसरे के पति पर मेनका की दृष्टि गाड़ कर बैठ गई हो। गुस्से में कोकिला बेन ने सब को अनफ्रेंड कर दिया। अभी कोकिला बेन सँभली भी न थी कि ऐप की तरफ से एक अन्य गूगली आई....'जानिए आपकी कितनी संतानें होंगी। अरे इसमें जानना क्या है, दो हैं तो दो ही होंगी। पर थोड़ी देर बाद जब तीन बेटे और एक बेटी का उत्तर सामने आया उससे तो कोकिला बेन का माथा पूरा भन्नाया। हे कान्हा जी मैं तो लुट गई, बर्बाद हो गई, दो और लड़के कहाँ से हो जाएंगे!... अब प्रश्नों की नीचे बौछार थी.... ।आपकी पत्नी किस से प्रेम करती है?'' 'पिछले जन्म की आपकी प्रेमिका इस जन्म में कौन है?'......

प्रश्नों की इनिंग बहुत लंबी होती जा रही थी और कोकिला बेन खेलते-खेलते थक गई थीं। ठीक वैसे ही जैसे पाँच साल की एक पारी खेलने के बाद दूसरी पारी खेलते-खेलते सरकारें थक जाती हैं। कोकिला बेन जान चुकी थी कि दूसरी पारी सचमुच पहली पारी से कहीं ज्यादा भारी होती है। ओपनिंग में कोकिला बेन ने सचिन की तरह जिगरा तो बड़ा दिखाया पर अफ़सोस वह दोनों पारियों में 'रिटायर्ड हर्ट' हो गई। फोन की घंटी बज रही थी। दूसरी तरफ छग्गन भाई लाइन पर थे......

'क्या बढ़िया खाना बनाया भागवान! तू तो सचमुच मेरी बीवी नंबर बन है..' 'बैक टू पविलियन' कोकिला बेन को ऑल इस वैल की फीलिंग पुनः आ चुकी थी। उन्होंने अपनी छोटी-सी दुकान का शटर उठा दिया और..'यहाँ जो दुकान थी वह अब बंद है' की तख़्ती हटा दी।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भावनाएँ
अछूती रहीं

महेश शर्मा

डॉ. मनोज प्रीत

रजनी शर्मा बस्तरिया

वीना विज

आनंद बिलथरे

रोहित यादव

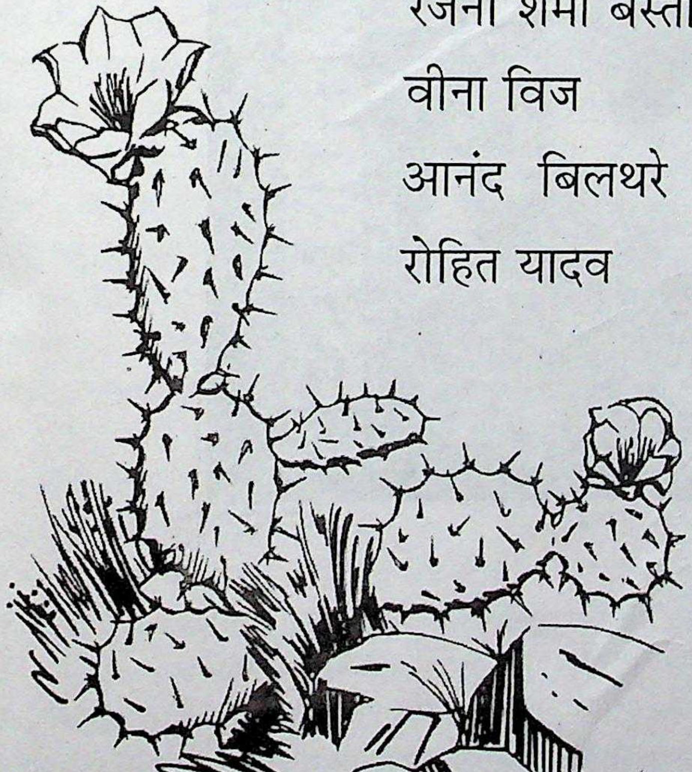

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

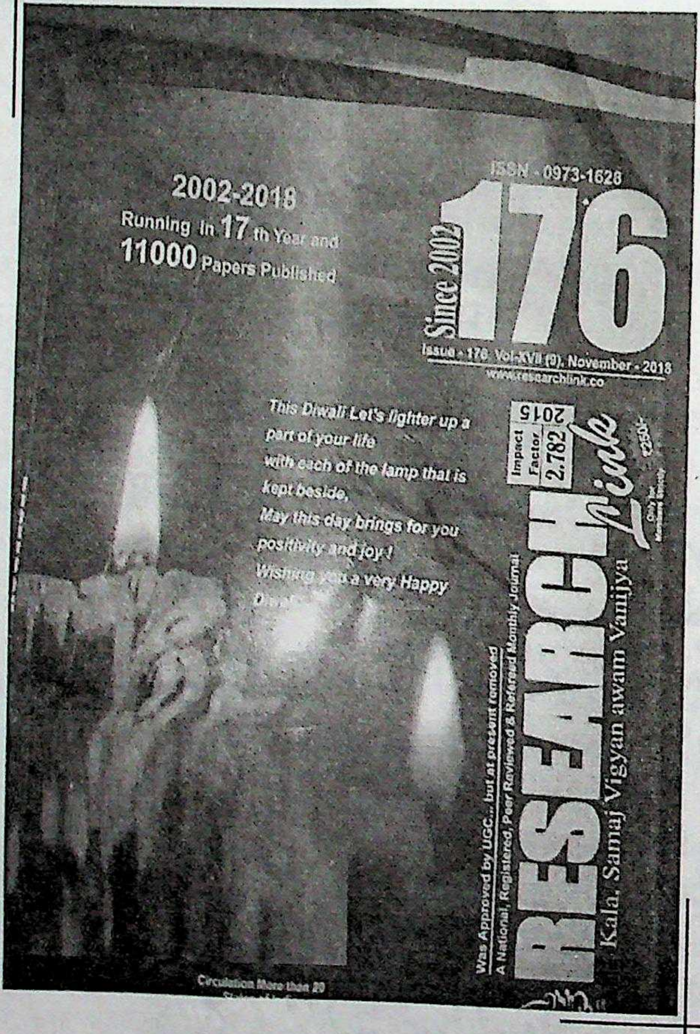

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग से सिंहस्थ राज्योत्सव अन्तर्गतसाहित्य क्षेत्र में सम्मानित महेश शर्मा की रचनाएं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्रकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। विज्ञानस्नातक, प्राकृतिक चिकित्सा में स्नातक व कहानी कविता, गीत, ग़जल में समान अधिकार से रचना करते हैं।

224 सिल्वर हील कालोनी धर
जिला धार मध्य प्रदेश

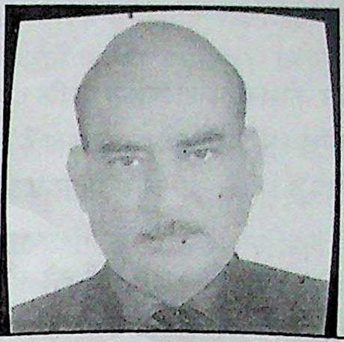

महेश शर्मा

दूसरी औरत

सुबह के आठ बजते बजते जेल का पुराना कैदी जगदीश चाय का तपेला चौक में रख कर आवाज लगा रहा था। बैरक नम्बर एक के कैदी चाय ले जाओ अपनी अपनी। सभी कैदी दौड़ पड़े, वैसे भी ठण्ड का मौसम था। सभी ठिठुर रहे थे, कोने में उदास खड़ा चम्पालाल भी आगे बढ़ा चाय लेने। लाइन में लगे उसकी नज़र चाय के तपेले पर पड़ी, चाय के नाम पर काला काला गरम पानी था, जिसे लेने को कैदियों में धक्कामुक्की मच रही थी। अपने ग्लास में चाय नाम का काला पानी लेकर चम्पालाल मन्दिर के ओटले पर बैठा। चाय का पहला घूंट भरते ही मुंह कड़वा हो गया और दिमाग में पिछले चार पांच महीने की सारी बातें घूमने लगीं।

पुराने बस स्टैंड पर चम्पालाल का चाय का ठेला हमेशा ग्राहकों से घिरा रहता था, चाय जो बढ़िया बनाता था वो। लोगबाग चाय के साथ उसकी बातों के भी मजे लेते थे। चम्पालाल था भी रसीया, दिन भर चाय का ठेला लगाता हंसी मज़ाक करता। शाम को अपनी घर, जो वहीं बस स्टैंड के पीछे बना दो कमरों का क%चा पक्का मकान के रूप में था, वहीं ठेला भी खड़ा कर देता था।

दिन भर की दुकानदारी के बाद देसी दारू का एक अद्धा रोजाना हलक के नीचे उतारता, फिर खाना खाके सो जाता। सुबह वापस आठ बजे ठेला लगा के चाय की दुकानदारी शुरू। घर में औरत रामली और छ : साल का मदन। परिवार का खर्चापानी अं%छी तरह से चल जाता था। पास के गांव में [illegible] बीघा जमीन थी जो बटाई से दे रखी थी।

चम्पालाल के जीवन में वैसे तो कुछ भी समस्या नहीं थी। यदि थी तो बस एक मन की भटकन और वो ये कि औरत करना है। रामली है पर जिन्दगी का मजा नहीं है। वो अपने दोस्त नाथु से अक्सर कहता रहता था कि कुछ भी हो एक नातरा जरूर करना है।

तो क्या रामली को छोड़ेगा? नाथु पूछता तो चम्पालाल मुस्कराकर कहता, भले ही रामली को छोड़ना पड़े पर जिन्दगी के मजे तो लूंगा यार। और बात इतने पर ही आई गई हो जाती।

रामली एक सीधी सादी अनपढ़ सांवलीसी औरत थी। चेहरे पर चेचक के दाग सामान्यसा बदन लिये एक ब%चे की मां होकर भी काफ़ी ढली हुई लगती थी। लेकिन आदमी का पूरा ध्यान रखती थी। चम्पालाल को टाइम पर खाना, बेटे मदन का ख्याल रखना, घर के सारे काम के अलावा चाय के ठेले की भी सुबह की तैयारी में हाथ बंटाती थी।

रामली समझती थी कि उसके आदमी का मन उसमें कम है, पर क्या कर सकती थी वो। जीवन इसी तरह चल रहा था। तभी गांव में एक भूचाल आया।

बस स्टैंड के आगे नदी किनारे वाले मोहल्ले के कीसनाबा की बड़ी बेटी को उसके घवाले ने छोड़ दिया। दोनों परिवार वालों में खूब झगड़े हुए।

कीसनाबा के दामाद का कहनथा कि तुम्हारी बेटी का चाल चलन ठीक नहीं है। वो घर रखने लायक नहीं है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और कीसनाबा का कहना था कि दामाद के मन में खोट है इसलिए बेटी को छोड़ना चाहता है। पंचायत बैठी 12000 रुपये में झगड़ा टुटा और जोहार बाई बाप के घर वापस आ गई।

2324 साल की जोहार बाई को औलाद तो कोई हुई नहीं थी, चेहरे का नूर अभी बाकी था, बदन में अभी भी कसावट थी। पर क्या करे आदमी से बनी नहीं। कीसनाबा बोले भगवान की लीला बेटी घर में ही सही कोई अ%छा सा घर मिला तो नातरे दे दूंगा।

जिस दिन से जोहार बाइ अपने बाप के घर वापस आई तब से ही चम्पालाल के दोस्त नाथु का एक चक्कर रोजाना कीसनाबा के यहां जरूर लग जाता था। महीना होते ना होते कीसनाबा के यहां चम्पालाल की सम्पन्नता के, उसके अ%छे स्वभाव के और दिलफरियादी के किस्से छोड़ने में नाथु कामयाब हो चुका था। कीसनाबा भी रस लेता था नाथु की बातों में और जोहरा बाई भी दोनों की बातें कान लगा कर सुनती रहती थी।

इधर नाथु ने चम्पालाल से ये पक्का करार कर लिया था कि जोहार बाई से गोटी फिट कराने की जवाबदारी पूरी पूरी नाथु की है, पर बदले में चम्पालाल नाथु को अगली फसल तक के लिये 7000 रुपये बिना ब्याज के देगा। क्योंकि नाथु को भी अपनी जमीन छुड़ानी थी जो सेठ के यहां गिरवी रखी हुई थी। चम्पालाल जानता था कि ये 7000 रुपये कभी वापस आने वाले नहीं हैं पर यदि जोहार बाई से कनेक्शन जुड़ जाये तो ये सौदा महंगा नहीं है। जिन्दगी के मजे आ जायेंगे। चम्पालाल के दिमाग में जोहराबाई का बदन घूम गया।

और फिर एक दिन नाथु की सलाह पर चम्पालाल पाव भर मिठाई और नमकीन लेकर कीसनाबा के घर पहुंच ही गया।

कीसनाबा तो चम्पालाल को जानता ही था। आवभगत के साथ जोहराबाई के हाथ की चाय पिलवाई। आध घंटा बैठ कर चम्पालाल वापस आ गया। इस बीच शिकार करने वाले और शिकार होने वाले आधा घंटा बैठ कर दोनों ने एक दूसरे को भांप लिया था। खास बात ये थी कि यहां शिकार कौन हो रहा था और शिकारी कौन था ये बात बड़ी थी जो अभी तो किसी को भी समझ में नहीं आनी थी।

कुछ दिन तक तो एकदो दिन छोड़छोड़ कर और फिर लगभग रोजाना ही दोपहर का एकदो घंटा चम्पालाल कीसनाबा के यहां बिताने लगा। बीच में कई बार कीसनाबा इसी टाइम जरूरी काम से गांव में भी चले जाते थे और एकदो घंटे बिता कर ही आते थे।

रामली बड़ा ता%जुब करती कि आजकल उसका आदमी बहुत खुश रहता है। घर पर मिठाई भी लाता है पर वो परेशान भी थी कि दोपहर में नदी पर जाने के कारण चाय की दुकान पर ग्राहकी कम हो जाती थी और कमाई भी कुछ कम पड़ने लगी थी।

कई बार चम्पालाल गुस्सा भी करने लगा था। एक दो बार तो दिन में ही दारू पीकर आ गया था और %यादा पी ली थी तो शाम तक चाय का ठेला भी नहीं लगा पाया। आज तक चम्पालाल ने कभी दिन में दारू नहीं पी थी।

और जिस दिन रामली घर के कपड़े लत्ते इक्ट्ठे करके नदी पर धोने गई, उसी दिन उसे सारा किस्सा समझ में आ गया। आधी रामायण तो नदी पर आई उस मोहल्ले वालों ने बता दी और बाकी जब वो नदी से घर के लिये चली तो सारा नज़ारा जीता जागता सामने आ गया।

कीसनाबा के घर के कुछ दूर से ही रामली को दिखने लगा। कीसनाबा के आंगन में पड़ी खाट पर लेटा उसका भतार और ओसारे से बाहर आती जोहरा बाई जो थाली में कुछ लाई थी। दोनों के बीच कुछ हंसी ठिठोली होती रही फिर अचानक चम्पालाल उठ कर जोहराबाइ के साथ घर के अन्दर चला गया।

रामली अनपढ़ जरूर थी पर औरत मर्द के बीच के अ%छे बुरे रिश्ते समझने के लिए दुनिया की किसी पढ़ाई की जरूरत नहीं पड़ती है, सो रामली का चेहरा काला से और %यादा काला हो गया। चाल तेज़ हो गई और पहुँचते ही रोना पीटना शुरू हो गया। रामली बेसब्री से चम्पालाल का रास्ता देखने लगी।

रोज़ की तरह चम्पालाला दारू चढ़ा कर झूमता मस्त होता घर आया। भूखी शेरनी की तरह रामली टूट पड़ी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चम्पालाल के होश फाख़्ता हो गये। नशा गायब, पहले तो हंसते हुए विरोध किया फिर सारे प्रमाण जब रामली ने सामने रख दिये तो वो भी खुलकर सामने आ गया।

दहाड़ते हुए उसने खुला एलान कर दिया मर्द हूं कमाता हूं, उसको रखूंगा। नातरा लाउंगा। तेरे पीछे जिंदगी बरबाद थोड़े ही करूंगा। जो करना है कर ले।

रात भर घर में कलह मचती रही। सुबह होतेहोते चम्पालाल रामली को उसकी बुढ़ी मां के घर जो वहां से 1015 किलोमीटर दूर था, छोड़ आया। सम्हालो, तुम्हारी बेटी को, काम धम कुछ करती नहीं, खाना बनाना आता नहीं।

ये कह कर पलट कर भी नहीं देखा रामली की तरफ चम्पालाल ने। बेटा मदन भी डराडरा बाप के इस नये रूप को देखता रहा।

अब जंगल के आज़ाद शेर की तरह चम्पालाल घर पहुंचा, नाथु घर के आंगन में तैयार बैठा था। सबसे पहले तो पूरी बोतल खुलवाई और दोनों ने छक के पी। नाथु ने 810 दिन में काम पक्का हो जाने का भरोसा जताया और अपने 7000 की याद दिलाई।

पूरी दोपहर से शाम तक चम्पालाल कीसनाबा का मेहमान रहा। शाम को कीसनाबा ने लोकलाज के डर से उसको मना किया। जोहराबाई अब तक पूरी तरह से चम्पालाल की मुरीद हो गई थी और उतावली थी उसके घर बैठने के लिए। रोज़ाना बाज़ार का नाश्तापानी, नगदी पैसा, जान लुटाने वाला मर्द, मकान भी, जमीन भी और क्या चाहिये एक औरत को दुनिया में।

बाप बेटी में इशारों में बात हुई और अगले दो चार दिन में समाज में सुरसुरी छोड़ दी। नाथु बिचवान तैयार था ही, अचानक कीसनाबा ने रंग पलटा। चम्पालाल और नाथु के सामने उसका एक ही राग था। मैं बूढ़ा आदमी अकेला, ज़मीन जायदाद कुछ भी नहीं, मेरी जिंदगी कैसे कटे? कुछ तो इन्तजाम करना पड़ेगा।

फिर पांच दस समाज के लोगों की पंचायत बैठी। पीना पिलाना हुआ। बीस हज़ार नगद कीसनाबा को देना तय हुआ। अब बीस हजार की व्यवस्था तत्काल तो मुश्किल। फसल आने में चार महीने की देर, कीसनाबा मानने को तैयार नहीं।

जोहराबाई का दिल पसीजा उसका स%चा प्रेमी मर्द जो था। उसने कीसनाबा को मनाया। ये तय हुआ कि पांच हज़ार अभी बाकी चार महीने बाद। कीसनाबा मान गये पर नाथु नहीं माना। मजबूरन चम्पालाल ने सेठ के यहां मकान की लिखापढ़ी कर दस हज़ार लिया। पांच हज़ार कीसनाबा को और पांच हज़ार नाथु को सौंप दिये। अब नाथु खुश था फोकट के पांच हज़ार पाकर, जो वो कभी भी लौटाने वाला नहीं था। कीसनाबा खुश था। बेटी ने बेटे जैसे कमाई दी थी और अभी तो पंद्रह हज़ार और मिलेंगे। चम्पालाल खुश था, इस उम्र में फिर एक जवान जोरू जो मिल गई थी और जोहरा बाई, वो तो खुश थी ही, एक नया आदमी मिला। जोशख़रोश वाला पैसे वाला, उसके नख़रे उठाने वाला और उसकी हर जरूरत पूरी करने वाला। इस पूरे काण्ड से दुखी थी तो बस एक रामली।

दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि एक आदमी ख़ुद की खुशी के लिये न जाने कितनों को दुखी कर देता है। मगर यहां मामला ये था कि एक रामली के दुख की कीमत पर इतने लोग खुश हो गये थे। ख़ैर चार आठ दिन तक तो चम्पालाल का कीसनाबा के यहां वैसे ही आना जाना रहा। दोपहर को जाना फिर कीसनाबा का जरूरी काम से घर से बाहर निकल जाना और शाम तक आना। तब तक घर पर चम्पालाल और जोहराबाई, जोहराबाइ और चम्पालाल, बस इसके सिवा कुछ नहीं।

रामली और उसके गरीब परिवार की तरफ़ से कोई विरोध अभी तक चम्पालाल को नहीं मिला था। इसी को देखते हुए इस प्रेम कहानी का अगला एपीसोड भी शीघ्र ही सामने आ गया। आठवें दिन शाम के अन्धेरे में जोहारबाइ चम्पालाल के दो कमरे वाले शीशमहल में आ गई, हमेशा के लिए। कीसनाबा खुश थे, बेटी का रास्ता लगा, बीस हज़ार की कमाई हुई। लोग जरूर बातें करेंगे तो करते रहें, लोग और क्या कर सकते हैं।

चम्पालाल तो मानो स्वर्ग में आ गया था। कहां रामली और कहां जोहरा बाई, कहां बासी जुलेबी और कहां ताजा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गरम रस से भरी इमरती। अगले 1015 दिन तो दोनों के ऐसे मज़े में गुज़रे कि रात दिन का भी होश नहीं रहा। फिर कहीं जाके कुछ तृप्ति हुई तो काम धन्धे की सूझी। चम्पालाल ने वापस अपने चाय के ठेले पे ध्यान देना शुरू किया। पिछले दो महीने से चल रहे जोहराबाई की फतह अभियान के कारण चाय की दुकान बिल्कुल ठप्प हो गई थी। एक नया ठेला और लगने लगा था, बचत आधी हो गई थी। फिर दस हज़ार की उधारी वाला भी रोज़ाना ब्याज के पैसे लेने आ जाता था।

इधर जोहराबाइ बड़े जतन से अपने नये घर को सजाने संवारने में लगी थी। साफ़ सफ़ाई करती नयेनये सामान लाने की योजना बनाती। एक दिन दोपहर में उसे कुछ भूख लगी तो बाज़ार का चरपरा खाने का मन में आई और तभी उसे याद आया पिछले आठ दस दिन से चम्पालाल घर पर कुछ नाश्ता भी नहीं लाया है और तो और कई बार तो वो दोपहर में घर भी नहींआया था।

बस फिर क्या था शाम को ही अपना रौद्र रूप दिखाया। खाना बनाना तो दूर जो गुस्सा कर के बैठी तो दो घण्टे में मानी। चम्पालाल रात को ही मिठाई लाया, चरपरा लाया और खाने का सामान भी लाया, साथ में खुद की दारू भी लाया और वो रात बढ़िया कटी।

दूसरे दिन चम्पा लाल ने फिर एक साहूकार से दो हजार रुपये उधार लिए और जोहरा बाई के लिए साड़ी ब्लाउज, पायजेब, नई चप्पलें और घर का भी कुछ सामान लेकर शाम को घर पहुँचा। जोहरा बाई धन्य हो गई। खूब लाड़ लड़ाया, मालपुए बनाये, उस रात तो बहुत मजे किये ही, अगला एक महीना भी अ%छा गुजरा।

रामली के गांव से एक उसका निश्तेदार बीच में आया था। कह रहा था कि उसको वापस रख ले पर चम्पालाल ने पूरी दादागिरी से उसे भगा दिया। उसी शाम चम्पालाल जब अपने धंधे का महीने का हिसाब मिलाने बैठा तो चकरा गया कुछ समझ नहीं आ रहा था बचत कुछ नज़र नहीं आ रही थी। दूध वाले के भी पैसे चढ़ते जा रहे थे पुराना कर्जा कुछ भी नहीं चुका पा रहा था। और घर का खर्च ? बाप रे पिछले दिनों से दुगना होता जा रहा था। उसे पुराने दिन याद आये, रामली के टाइम बहुत बरकत थी, धंधे में ना जाने क्या हो गया है आजकल। ख़ैर पहला काम उसने ये किया कि साहूकार को रोज़ाना ब्याज देने से साफ़ मना कर दिया। इकट्ठा ब्याज फसल पर ही दूंगा। साहूकार बोला फिर ब्याज पर भी ब्याज लगेगा। चम्पालाल ने मंजूर किया।

फसल आने में अभी दो महीने की देर थी चम्पालाल को समझ नहीं आ रहा था गाड़ी कैसे पटरी पर लाए। आख़िर उसने निर्णय लिया। जोहराबाइ को समझाना पड़ेगा कि घर का खर्चा कम करे।

रात को अपनी महारानी को खूब प्यार जताते हुए चम्पालाल ने कहा, जोहरा इस महीने हमें तेल घी का और बाज़ार का खर्चा कम करना पड़ेगा। दुकान में बहुत मंदीवाड़ा है फ़सल भी कमजोर है। इस साल गाड़ी बेलेन हो रही है। सुन कर पहले तो जोहरा बाई बिफरी दुहाई देने लगी, मैं तो कुछ भी ख़र्च नहीं करती, फिर अचानक कुछ सोच कर यकायक चुप हो गई।

अगले कुछ दिन थोड़े ठण्डेठण्डे रूखेरूखे गुज़रे। नोन, तेल, लकड़ी के फेर में तो बाजबहादुर भी अपनी मोहब्बत भूल जाता, चम्पालाल कौन से खेत की मूली था।

अचानक एक दिन जोहराबाई बापू के घर जाने की जिद करने लगी। चम्पालाल ने भी खुशीखुशी भेज दिया, कहा शाम को आ जाना। जोहराबाई दूसरे दिन का कह कर चली गई।

उस रात चम्पालाल अकेला होने से कुछ परेशान भी रहा और खुद को कुछ आज़ाद भी महसूस किया। रामली की भी याद आई। चम्पालाल समझ ही नहीं पा रहा था कि वो सुखी है या दुखी या वो पहले अ%छा था या अब अ%छा है। इसी दुविधा में रात बिताई।

दूसरे दिन जोहरा बाइ आ गई। कीसनाबा भी साथ में आये थे। वो केवल याद दिलाने आये थे कि फ़सल आने वाली है रुपयों की सख़्त ज़रूरत है। कब तक हो जायेंगे, जल्दी इन्तजाम करो। चम्पालाल ने उनकी आवभगत करी, विश्वास दिलाया कि काम हो जायेगा।

अब चम्पा लाल फिर दुकान में मेहनत करने लगा ताकि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025 Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर ख़र्च और कुछ ब्याज, इतना तो दुकान में से निकल जाये ताकि फसल आये तो कीसनाबा को बाकी पंद्रह हज़ार चुका सके।

चम्पालाल के दिलो दिमाग से इश्क का भूत पूरी तरहे निकल चुका था। रात को घर आता जोहरा बाई पर नज़र पड़ती तो पंद्रह हजार पहले याद आते। ना खाना अ%छा लगता, ना रात को नींद आती। जोहरा बाइ कुछ लाड़ भी लड़ाती तो ऐसे लगता जैसे कोई भूतनी लिपट रही हो।

अब तो दिन में कई छोटीमोटी बातों पे झगड़े भी होने लगे। हर बात पर खींचातानी होना अब आम बात हो गई थी। चम्पालाल फ़सल का रास्ता देख रहा था पंद्रह हज़ार चुका दूं फिर साली को सुधर दूंगा।

आज का दिन चम्पालाल के लिए बड़ा बुरा निकला। ज़मीन की बटाई वाला आया था। पूरा हिसाब जोड़ कर लाया था। फ़सलों में कीड़ा लगने से दवाइयों का ख़र्चा %यादा हो गया था फसल भी कमज़ोर थी सब ख़र्चा काटते बीस हज़ार की कमाई हुई। चम्पालाल के हिस्से के दस हज़ार लेके आया था वो। जबकि चम्पालाल को पूरा भरोसा था कि तीस चालीस हज़ार की फसल होगी। कीसनाबा पिंड छूट जायेगा।

अब क्या होगा? कीसनाबा के पंद्रह हज़ार सेठ के दस हज़ार और ब्याज दोनों को देना ज़रूरी है। रात को ही जोहराबाई ने अल्टीमेटम दे दिया था कि मेरे बापू के पूरे पंद्रह हज़ार दोचार दिन में दें ही देना। क्या फिर कोई नया साहूकार ढूंढना पड़ेगा?

तभी शान्तु सेठ पुराना साहुकार दस हजार मूल और दो हज़ार ब्याज कुल बारह हजार की चिट्ठी लेकर आ गया। आज ही देना पड़ेगा। चम्पालाल ने समझाया कि पांच हज़ार तो नाथु से दिलवायेगा लेकिन सेठ ने उसके कान के जाले साफ़ कर दिये। नाथु तो पिछले दो महीने से गांव से बाहर है ख़ुद की फ़सल पेटे परबारे किसी दूसरे से पहले ही उधर ले जा चुका है, नाथु से तेरे को कुछ नहीं मिलने का। चम्पालाल तो आसमान से गिरा और ऐसा कि नीचे टिकने को ज़मीन भी नहीं मिली और मिली भी तो सामने

आंखें फाड़े घूरती हुई जोहराबाई मेरे बापू के पैसे ना दिये तो देखना, नासपीटे मैं तेरा क्या करूंगी। चम्पालाल भी गुस्से में था बोल पड़ा जो तेरे से बने वो कर लेना जब पैसे आयेंगे तब दूंगा। तू तो मेरी घरवाली है, तू तो समझा।जब तक बापू के पूरे पैसे ना देगा तब तक हक मत जताना मेरे ऊपर। तेरी गुलाम ही हूँ। चार महीने से मज़े ले रहा है मेरे, फोकट की समझ रखी है क्या? और चिल्लाती दहाड़ती जोहराबाई शाम होतेहोते छाती, माथा कूटते अपने घर जा चुकी थी। रात को कीसनाबा भी आकर चेतावनी दे गये थे कि सुबह आठ बजे तक बाकी पैसे ला देना तो जोहरा आ जायेगी वरना.......समझ लेना।

रात भर चम्पालाल परेशान रहा बिलकुल नींद नहीं आई। पैसों के जुगाड़ का कोई रास्ता ना दिखा। सोचतेसोचते आंखों में आंसू जरूर आ गये और उन आंसुओं में झिलमिल करती रामली और मदन की तस्वीर दिखी। मन में पछतावा भी शुरू हुआ।

किस्मत का कुछ खेल अभी बाकी था। दूसरे दिन सुबह तो कुछ नहीं हुआ लेकिन दोपहर में अचानक चाय के ठेले के सामने पुलिस की जीप आकर रुकी। पुलिस उतरी और उसे साथ ले गये। थाने जाकर पता लगा कि उसने गांव की एक जवान औरत को अपने घर में जबरदस्ती बन्द कर के रखा, डरा धमका कर उसके साथ बलात्कार करता रहा और इसी जुर्म में पुलिस ने उसे अरेस्ट किया है।

चकराता हुआ चम्पालाल हाथ जोड़े गिड़गिड़ाता रहा साहब वो तो मेरी नातरे वाली लुगाई है। मैंने उसको रखा है।

ये सब गवाह सबूत बाद में देना, अभी तो वो जोहराबाई और उसका बाप रिपोर्ट लिखवा के गये हैं। थानेदार ने बड़ी बेरुखी से जवाब दिया।

पर साहब वो पिछले चार महीने से मेरे घर में रह रही थी, सारे गांव को मालूम है आप तलाश कर लो और साहब आप भी तो आते थे मेरी चाय की दुकान पर, आपने भी देखा होगा?

अरे साले हम आते थे तो क्या तेरे घर झांकने आते थे? थानेदार ने झिड़का। देखनासुनना अलग बात है कागज़ पर प्रमाण अलग बात। तेरे पास कोई प्रूफ है कि वो तेरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घरवाली है ? हेडसाब बन्द करो साले को।

चम्पालाल सकते में आ गया। दो दिन हवालात में रख के सीधा जेल भेज दिया गया। धारा 376 बलात्कार गंभीर अपराध। ओह.....एक दम चम्पालाल की विचार यात्रा रुकी। हाथ की चाय वैसे की वैसी थी, सामने राम सिंह हेडसाब खड़ा था।

क्यों वे अब पछता रहा है। खूब जवानी चढ़ी थी। बेटा हो गया ढीला। हंसतेहंसते हेडसाब तो चल दिया पर चम्पालाल रो पड़ा आंख में आंसू आ गये।

आज सात दिन हो गये जेल में रोतेरोते दिन निकल रहे हैं। ना तो जेल की रोटी अ%छी लगती है ना ही रात को नींद आती है। घर याद आ रहा है, रामली याद आ रही है, मदन याद आ रहा है। ख़ुद की बेवकूफी पर पछताना और रोना यही कर रहा है वो रोज। जेल वाले हेडसाब बता रहे थे कि 376में जमानत भी मुश्किल से होती है, अभी भी मौका है। समझौता हो सकता तो कर ले वरना मर जायेगा बेमौत।

क्या करूं इसी सोच में था कि चौंक गया, उसके नाम की आवाज़ लगी थी। उसने कान दिये जगदीश की आवाज़ थी। चम्पालाल गांव बडगोंदा.....चलो मुलाकात आई है।

कौन होगा ? चम्पालाल सोचने लगा पिछले सात दिन में तीन चार खास दोस्त ही मिलने आये थे।

आज कौन होगा, सोचता हुआ चम्पालाल बाहर बड़े गेट की तरफ बढ़ा और उसने गेट की जाली से जो देखा भरोसा नहीं हुआ, उसकी आंखों में आंसू आने लगे। बाहर रामली और मदन दोनों खड़े थे। रामली के हाथों में रोटी की पोटली। चम्पालाल को लगा जैसे देवदूत आये हैं। उसके दिल में रामली के लिये छुपा हुआ प्यार और मदन के प्रति स्नेह उछालें मारने लगा।

चम्पालाल की झुकी हुई गर्दन और भीगती आंखें देखकर उस देहाती अनपढ़ कुरूप औरत का हाथ अपने आप बढ़ कर उसे सहलाने लगा। चम्पालाल रो पड़ा। उसे लगा ये तो भगवान का साथ है। वो गेट पर रुक ना सका। अन्दर आकर खूब रोया किसी के चुप कराने से भी चुप ना हुआ। जैसे तैसे शाम हुई। चम्पालाल का दिमाग एक ही बात सोच रहा था, कैसे मुक्ति मिलेगी इस नरक से। वो रहरह कर भगवान से माफ़ी मांग रहा था।

अचानक गेट से फिर आवाज़ आई, चम्पालाल बडगोंदा वाला.....मुलाकाती है.....।

अब कौन है। क्या रामली अभी तक यहीं बैठी है। चम्पालाल असमजंस में गेट की ओर चला।

बाहर देखा नाथु था। एक क्षण तो गुस्सा आया। फिर गुस्से को व्यर्थ जानकर कौतुहल से बोला, क्या हुआ नाथु, कहां था तू अभी तक ? ताने उलाहने के बाद नाथु ने बताया कि वो जोहराबाई से मिलकर आ रहा है। बहुत नाराज है वो। उसको तूने चार महीने तक वापरी ओर कीसनाबा को टेम पे पैसा नहीं दिया। अब उनकी नीयत में खोट आ गई है। इसी लिए रिपोर्ट डाली है।

चम्पालाल नाथु के हाथ जोड़ने लगा/ मेरे को बचा ले यार नाथु/ मेरे को छुड़ा ले यहां से, तू मेरा दोस्त है यार।

नाथु ने तुरन्त उपाय बताया, देख, कीसनाबा और जोहराबाई दोनों का गुस्सा बहुत तेज़ है दोनों पैसों के दास हैं। तू बोले तो मैं राजीनामें की बात करूं पर अब खर्चा %यादा लग जायेगा। पचास हज़ार से कम में कीसनाबा मानने वाला नहीं है और कुछ पुलिसवालों को भी देना पड़ेगा कोर्ट में बयान होने के पहले केस ख़त्म हो जायेगा।

पर इतने पैसे मेरे पास कहां है यार, तुझे तो मालुम है ?

तू सोच ले, पैसे की व्यवस्था कर या फिर ये मान ले कि चार बीघा जमीन थी ही नहीं तेरे पास। जोहराबाई के नाम करदे जमीन और छुट्टी सब बात से। कल तक सोच ले, कल मैं पिफर आउंगा। और देख यार इतनी मेहनत कर रहा हूं तेरे लिए, मेरी दाड़की मत भूल जाना।

चम्पालाल वापस अन्दर आया, वहीं असमंजस वही, क्या करना, क्या नहीं करना। किंकर्तव्यविमूढ़। साथी कैदी पूछ रहे थे, आज तो चम्पालाल की दोदो मुलाकात आई कौन कौन था ?

किसी जानकार कैदी ने चुटकी लीं, सुबह पहली वाली औरत थी और अब शाम को दूसरी वाली।

रात भर चम्पालाल सोचता रहा। चार बीघा ज़मीन बड़ी या

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-GRANT

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर का सुख। जेल से छुटकारा, रामली और मदन के साथ फिर सुखी जीवन? आंखों में आंसू लिये चम्पालाल भगवान को धन्यवाद दे रहा था। वो मान गया कि उसने गलती की। रामली और मदन का दिल दुखाया तो भगवान ने उसे सजा दी। अब जमीन जाती है तो जाये।

चार बीघा जमीन जाती दिखी चम्पालाल को पर तभी दिखा स्वर्गलोक जैसा वो दो कमरे का अपना घर जिसमें रामली और मदन दोनों उसका इन्तजार कर रहे थे। वो निर्णय पर पहुंच गया। उसका सारा असमंजस दूर हो गया था। उसने तय किया की नाथु को आते ही राजीनामे के लिए बोल दूंगा और ये भी तय किया कि दूसरी औरत का चक्कर बहुत खराब होता है, औरत एक ही भली।

प्रेरक प्रसंग

गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहे शिष्यों में आज काफी उत्साह था, उनकी बारह वर्षों की शिक्षा आज पूर्ण हो रही थी और अब वो अपने घरों को लौट सकते थे। गुरु जी भी अपने शिष्यों की शिक्षा-दीक्षा से प्रसन्न थे। गुरुकुल की परंपरा के अनुसार शिष्यों को आखिरी उपदेश देने की तैयारी कर रहे थे।

उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा '' आप सभी एक जगह एकत्रित हो जाएं, मुझे आपको आखिरी उपदेश देना है '' गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए सभी शिष्य एक जगह एकत्रित हो गए।

गुरु जी ने अपने हाथ में कुछ लकड़ी के खिलौने पकड़े हुए थे। उन्होंने शिष्यों को खिलौने दिखाते हुए कहा ''आपको इन तीनो खिलौनों में अंतर ढूँढने हैं।'' सभी शिष्य ध्यानपूर्वक खिलौनों को देखने लगे। तीनो लकड़ी से बने बिलकुल एक समान दिखने वाले गुड्डे थे। सभी चकित थे कि भला इनमे क्या अंतर हो सकता है ? तभी किसी ने कहा, ''अरे, ये देखो इस गुड्डे के कान में एक छेद है।'' यह संकेत काफी था। जल्द ही शिष्यों ने पता लगा लिया और गुरु जी से बोले, '' गुरु जी इन गुड्डों में बस इतना ही अंतर है कि एक के दोनों कान में छेद है। दूसरे के एक कान और एक मुंह में छेद है और तीसरे के सिर्फ एक कान में छेद है''

गुरु जी बोले, '' बिलकुल सही'' और उन्होंने धातु का एक पतला तार देते हुए उसे कान के छेद में डालने के लिए कहा। शिष्यों ने वैसा ही किया, तार पहले गुड्डे के एक कान से होता हुआ दूसरे कान से निकल गया, दूसरे गुड्डे के कान से होते हुए मुंह से निकल गया और तीसरे के कान में घुसा पर कहीं से निकल नहीं पाया। तब गुरु जी ने शिष्यों से गुड्डे अपने हाथ में लेते हुए कहा ''प्रिय शिष्यों, इन तीन गुड्डों की तरह ही आपके जीवन में तीन तरह के व्यक्ति आयेंगें। पहला गुड्डा ऐसे व्यक्तियों को दर्शाता है जो आपकी बात एक कान से सुनकर, दूसरे से निकाल देंगे, आप ऐसे लोगों से कभी अपनी समस्या साझा ना करें।

दूसरा गुड्डा ऐसे लोगों को दर्शाता है जो आपकी बात सुनते हैं और उसे दूसरों के सामने जा कर बोलते हैं, इनसे बचें और कभी अपनी महत्त्वपूर्ण बातें इन्हें ना बताएँ। और तीसरा गुड्डा ऐसे लोगों का प्रतीक है जिन पर आप भरोसा कर सकते हैं और उनसे किसी भी तरह का विचार -विमर्श कर सकते हैं, सलाह ले सकते हैं, यही वो लोग हैं जो आपकी ताकत हैं और इन्हें आपको कभी नहीं खोना चाहिए''।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पेशे से चिकित्सक डॉ. मनोज कुमार 'प्रीत' लुधियाना में रहते हुए गत 3 दशकों से साहित्यसेवा में रमे हुए हैं। 8 कहानीसंग्रहों सहित उनकी कुल 12 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनके 'केरल धामस्वर्ण ग्राम' संस्मरणसंग्रह को भाषा विभाग, पंजाब ने पुरस्कृत किया है।

प्रीत साहित्य सदन, गली-9,
अर्जुन नगर, समराला चौक, लुधियाना

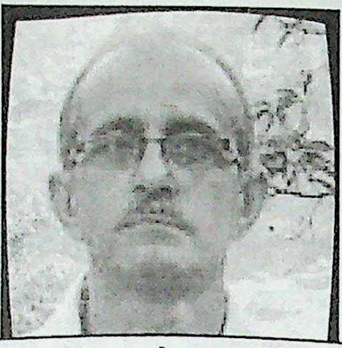

डॉ. मनोज प्रीत

मोम का पुरुष

मेरें घर के साथ एकदम सट कर खाली पड़े मकान में एक चलहकदमी शुरू हुई थी। शयद कोई नए किराएदार आए थे। मैं थोड़ा प्रसन्न हुई थी कि चलो खाली घर से बेहतर है कि कोई यहां बसे औा आनाजाना भी होगा ताकि मुझे भी अपनत्व की सहूलत होगी लेकिन कुछ दिन ऐसे ही निकल गए थे। मैं बारबार नए आए पड़ोसियों से मिलने को बेताब थी लेकिन मकान खुलने के बाद भी वहां एक ख़ामोशी का वातावरण बना रह था। मैंने आदतन पड़ोसी के घर जाना भी चाहा लेकिन मैंने देखा कि एक महिला सुबह सात बजे घर से निकल जाती है व सांय सात बजे तक वापिस लौटती है। सारा दिन घर में एक चुप्पीसा माहौल ही बना रहता है। बच्चे घर पर होने के बावजूद भी कोई शोरशरारत कभी सुनने या देखने में नहीं आई।

आस–पड़ोस के अन्य घर भी नए पड़ोसी के बसने से प्रसन्न थे लेकिन किसी ने उनके घर जाकर मिलने का प्रयास न किया था। कई बार तो हमें यह महसूस होता कि यह घर खुल कर भी बंद के समान है। चार छः माह तक भी इस घर में किसी को आतेजाते न देखा था। लेकिन एकदम मेरे पड़ोस में होने के कारणा मैंने देखा कि दोतीन बच्चे लगभग दसबारह व पंद्रह वर्ष की आयु के रहे होंगे जिन्हें कभी विद्यालय जाते न देखा और न ही किसी ऊंची आवाज़ या शरारत में...

एकाध बार महिला का मेरे से सामना भी हुआ लेकिन यह सामान्य नज़र अंदाज़ से निकल जाती रही। ऐसा सब मुझे दिखने वाली वह लंबी महिला बिना किसी हावभाव से सुबह जाती व रात को लौटती। बच्चों को भी कभी घर से बाहर निकलते न देखा गया था लेकिन एक सांझ मैं कुछ मिष्ठान लेकर उनके द्वार पर पहुंची तो एक बच्ची ने दरवाजा खोला था:

'आईए आंटी....'

'मम्मी है' मैंने पूछा था?

'हां, घर में ही हैं।'

इतने में वह लंबी महिला ने बाहर झांका और मैंने अभिवादन के साथ अपना परिचय दिया था। उसके चेहरे पर कोई संवेदना न होती देख मैंने सोचा, कैसे लोग हैं यह... ? लेकिन आग्रह पर मैंने बैठने से पूर्व ही बच्चों के लिए मिष्ठान देते कहा था' सोचा आप तो व्यस्त रहती हैं चलो मैं ही मिल लूं, कोई कार्य हो तो बताना ?'

आपने कष्ट किया बहन जी, दरअसल सुबह से शाम, मुझे नौकरी पर जाना होता है। बच्चे घर संभाल लेते हैं, उन्हें सिलाईकढ़ाई सिखा रखी है, मैं इनके लिए बाहर से स्वेटर आदि बुनने को ले आती हूं। महंगाई आजकल आप जानते हैं, घर का गुज़ारा कड़े परिश्रम पर आधारित है। रविवार को भी अवकाश नहीं लेती। तीनों बेटियां हैं, युवा हो रही हैं। शिक्षा दे नहीं पाई, मैं ख़ुद भी कम पढ़ी हूं, निजी संस्थानों वाले समय भी ज्यादा लेते हैं व पगार भी सीमित रहती है। इनके पिता कुछ वर्ष पूर्व किसी दुर्घटना में चल बसे थे। मेरे परिवार में और कोई नहीं है, अतः मुझे ही घर चलाना पड़ता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने देखा चौदहपंद्रह वर्ष की बड़ी दोनों लड़कियां बेहद ख़ूबसूरत थीं। उन पर प्राकृतिक रूप में इतनी सुंदरता रही कि आंख उनके ऊपर से फिसलती जा रही थी। तीसरी बेटी भला दस वर्ष की रही होगी। बच्चों को देखकर ऐसा लगता था, मानों किसी संपन्न परिवार से संबंधित हों। मैं एकटक उन्हें निहारते बस यही कह पाई थीकोई बात नहीं हमारी बच्चियां ही हैं। आप को कभी हमारी जरूरत पड़े तो कहिएगा। और हाथ जोड़ कर धन्य भाव से वह लंबी महिला मुझे द्वार तक छोड़ने आई थी।

फिर कई दिन तक वैसे ही चलता रहा था। मैं उनके बारे में अक्सर सोचती रही थी कि समाज में ऐसा सब क्या हो रहा है ? लोग कैसे-कैसे जी रहे हैं ? जीवन जंजाल होने के बाद भी यह महिला पूरे विवेक से जीवन गूंजन उत्कृष्ट ढंग से स्थापित किए हुए है। बच्चों से उनका बचपन छिन चुका है, उनके बाहर निकलने पर भी शायद प्रतिबंध है। इनका उद्देश्य तो मात्र जिंदा रहने तक ही है।

इस युग में अकेली महिला का सीमित कमा पाना, घर का किराया, तीन समय का भोजन व एक नहीं, एक साथ तीन लड़कियों का दायित्व....उस लंबी महिला ने अपने व अपने परिवार को पूरी तरह नकेल में सांघ रखा है। क्या जीवन इतनी कठिन परीक्षा भी लेता है ? क्या ऐसे भी जीना होता है। कितने लोग इस तरह से जीते होंगे ? कितने अनुत्तरित प्रश्न मुझे सदैव घेरते चले गए थे। कितने प्रश्न मैं उससे पूछना चाहती थी लेकिन उनके पास समय ही कहां रहता है ? मैं क्या सहायता कर सकती हूं। ऐसी अनेक बातें मुझे मेरे भीतर ही फुफ़कारती, उकसाती व रस्साकशीसी मंथन करती रहती थी।

फिर एक दिन मेरा दरवाजा ख़टका, देखा तो वही लंबी पड़ोसन बाहर खड़ी थी। मैंने बड़े आदर से उसे अंदर बुलाया था। मैंने सोचा चलो शायद उनके कुछ कामआ सकूं तो मुझे प्रसन्नता होगी। इस मध्यम दर्जे के लोग यूं तो बस अपनीअपनी सलीब खीचंने में पूरा जीवन लगा देते हैं लेकिन अंतर केवल इतना होता है कि किसी की सलीब छोटी किसी की बड़ी होती है लेकिन यह अकेली एक साथ चार सलीब खींच रही है। अतः जितना संभव हो सके मिलबांट कर कुछ दुख सांझा या हल्का कर लिया जाए। बस हमारे परिवार का इतना फ़लसफ़ा ही बना रहता है।

उसने बैठते ही कहा था कि बहन जी मैं सोचती हूं कि अब नौकरी छोड़ दी जाए। एक तो बच्चे सिलाई बुनाई में निपुण होने लगे हैं दूसरा, लड़कियां बड़ी हो रही हैं। कब तक मैं इन्हें कैद में रख पाऊंगी ? घर बैठ कर मैं थोड़ा कम भी कमा लूं लेकिन इन बच्चियों की देखभाल ज्यादा होनी चाहिए, कहीं यौवन में कोई कदम अप्रिय उठ गया तो मेरे साथ वैसे भी कोई चलने वाला नहीं है। मुझे उसके इस निर्णय पर स्वीकृति देना अच्छा लगा था। उसके विचारों की पूरकता व परिपक्वता की मैं कायल भी होने लगी थी। मैंने बिना किसी औपचारिकता के पूछा था:

बहना! आप मुझ से बड़ी हैं। मैं पूछने का कोई अधिकार भी नहीं रखती हूं लेकिन क्या आपने जीवन में अपने लिए कोई निर्णय लेना उचित नहीं समझा ? पूरा जीवन एक स्त्री के लिए अकेली रह कर लड़ना कहां तक संभव हो सकता है ?

आप ठीक कहती हैं बहन जी! दरअसल पीहर वैसे ही कमज़ोर हैं, भाई व मां ही हैं। ससुराल में कोई रहा नहीं। फिर एक साथ चार औरतों का भार कौन पुरुष उठा सकता है ? यह प्रश्न मेरे पक्ष में कोई उठाने वाला भी नहीं था। समय की पटरानी इतनी बलवान रही कि मैं कुछ सोचने के योग्य ही कहां रही ? अब समय की पाठशाला में इतना पढ़ा है कि एक भूल मुझ से ही हुई जो ससुराल के दबाव में लड़के की चाहत में मैंने स्वयं अपनी जिंदगी से इतना बड़ा खिलवाड़ कर लिया। जब यह सूझ आई तो वक्त हाथों से निकल चुका था। चाहती तो थी कि इन बच्चों को भी शिक्षा दे पाती, योग्य कर पाती लेकिन परिस्थितियों से लड़तेलड़ते एक तांडव ही झेलती रही हूं। लोग बच्चों के लिए दुआ मांगते हैं, लोग बच्चों की सुंदरता के लिए अनेक प्रयास करते हैं। देखो सारे ठाकुरद्वारे प्रार्थनाओं से भरे बड़े हैं। सारे सोंदर्यकक्ष ख़ूबसूरती बांट रहे हैं, मुझे इन्हें संभाल पाने में ही आपाधापी का सामना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करना पड़ रहा है। बहन जी! जीवन को समझना सच में बड़ा कठिन है। एक औरत कर ही क्या सकती है। हम जोख़िम भरे हालात को कहां तक बदल सकते हैं? फिर जो है जैसा है घुटने टेकने पड़ते हैं। ख़ैर छोड़ो! आप को भी नाहक दुख दे रही हूं। मैं तो कभी किसी को परेशान करना नहीं चाहती तभी आप के मोहल्ले में रह कर किसी से मिलने से भी डरती हूं कि लड़कियां कहां छुपा कर रखूं। जो है जैसा है चुपचाप चलने देना चाहती हूं। समय या जिदंगी ने मेरे साथ जो षडयंत्र रचा है बस चुप्पी से ही स्वीकार कर रही हूं। और कर भी क्या सकती हूं?

वह लंबी पड़ोसन चली गई थी। उसकी सच्चाई मेरे मस्तिष्क में न केवल घूमती रही बल्कि मुझे काटती व कचोटती रही। जीवन का इतना वीभत्स रूप मैंने कभी देखा तो क्या, सोचा तक भी न था। जीवन की इस खींच तान ने उसे कहां पटक दिया था, बस ऐसे ही प्रश्न मुझे घेरते रहे थे। आधुनिकवाद, महिला शक्तिकरण व फड़कतेतिड़कते संबंधों का बोलबाला जैसे किसी के लिए मृत समान ही है। कहां है हमारा समाज? क्या है मानवता? यह बातें भले ही किसी के लिए यथेष्ट होंगी लेकिन इसके तो अभीष्ट ही रही...न...

आठदस दिन और निकले थे। मैंने देखा मोहल्ले के वातावरण में एक अलगसी ख़ुशबू बिख़र रही है। कुछ पृथकसा देखने को लग रहा है। नए युग के युवा हमारी गलियों में अधिकतर अपनी उपस्थिति देने लगे हैं। दोचार लड़कों को झुंडों में अगलबगल खड़ेघूमते मैंने अक्सर देखा है। शायद पड़ोस की वह युवा कोंपलें फूटने लगी हैं। एक किशोर हवा हमारे ईदगिर्द मंडराने लगी हैं। इन पंखहीन चिड़ियों के मज़बूत पिंजरे पूरे वातावरण में अपने बंधनों की गवाही देने लगे हैं। इन्हें कहां तक बांध कर खा जा सकता है? इनके बहाव को हमारी मर्यादा, हमारे प्रतिबंध नहीं जकड़ सकते हैं। जो स्वाभाविक है उसे कोई रोक नहीं सकता है। जीवन के इस मोड़ पर हमारे सारे प्रयास तजुर्बे फेल हो जाते हैं। पानी, हवा और प्यार अपना स्थान हमेशा प्राप्त कर लेता है। अब पड़ोसन की ऊंची आवाज़ें मैंने अक्सर सुनी हैं। लड़कियों का ज़िद पर उतरना व मां का झगड़ना एक सामान्य बात होने लगी है। चीख़ें मारपीट अब अक्सर सुनी जा सकती हैं। भले ही प्रत्येक स्त्री या पुरुष ऐसा सब समझता व अनुभवी होता है लेकिन जीवन के इस बिन्दु पर तुम्हारी सोच का खण्ड़न

हो जाता है। तुम्हारे तमाम आदर्श विसर्जित हो जाते हैं। तुम्हारे खुले ज्ञान चक्षु भी कार्यविहीन हो जाते हैं। फिर एक आश्चर्य और घटित हुआ था। मैंने देखा कि लंबी महिला के घर के आगे पुरानी चारपाई पर एक अधेड़ विकलांग बैठने लगा था। बैसाखियों के सहारे वह सुबह घर की देहरी पर बैठ जाता व सांझ को उसकी चारपाई अंदर कर दी जाती। वह पुरुष सारा दिन वहीं बैठा कभी इस परिवार के कार्य में हाथ बटाता, कभी सो जाता, उसका खानापीना भी वहीं हो जाता।

घर के इस नए वातावरण में एक अजीतसा सन्नाटा छा गया था। वह चीखें, ऊंची आवाज़ें अब लगभग बंद हो गई थीं। मैं मन ही मन सोचती रही थी कि यह सब क्या व कैसे हो गया। यह पुरुष कौन हो सकता है। यह तो अब स्थाई सदस्य नज़र आ रहा है। ख़ामोश माहौल के कई जिज्ञासापूर्ण प्रश्न मुझे उद्वेलित करने लगे थे।

फिर एक दिन महिला मेरे पास आई थी। उसके चेहरे पर एक नई चहकसी थी। वह कहने लगी थी, बहन जी! पिछले दिनों मां चल बसी थी। भाई अकेला रह गया था। मैं उन्हें यहां ले आई। इसकी एक टांग नहीं है। हमारे सिवाए इनका कोई नहीं है। अब वैसे भी इसकी आवश्यकता अधिक थी चूंकि लड़कियां जवान हो चुकी हैं। मेरे नियंत्रण से बाहर हो रही थीं। इसलिए अब भाई का आना भी जरूरी हो गया था। बहन जी! कुछ भी कहो, घर में एक पुरुष तो होना ही चाहिए। घर पुरुष से ही चलता है। पुरुष ही घर का मेरूदंड होता है। कहां अभी हमारा समाज इतना सक्षम हो पाया जो किसी अकेली महिला को उसकी स्वतंत्रता से रहने दें। पुरुष तो पुरुष ही है। चाहे मोम का क्यों न हो? मैं उसकी विलक्षण सोच प्रति सोचती चली गई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बस्तर पर सर्वाधिक पुस्तकें लिखने वाली छतीसगढ़ की एकमात्र महिला लेखिका। विभिन्न पुरस्कार अपने नाम कर चुकी रजनी शर्मा अंग्रेज़ी की व्याख्याता है।

116 सोनिया कुंज
देशबंधु प्रेस के सामने रायपुर (छ.ग.)
मो. 9301836811

रजनी शर्मा बस्तरिया

पिंडदान

ख़ामोशी से एक दरख़्त के नीचे पसरने का मन लिए बैठ गई। पत्तियों के मेले में और एकाध पत्तियों की आमद होती ही रही। इसी तरह यादों की संदूकची खुली और धूसर, कुछ स्याह, कुछ खुशनुमा पत्ते आते गए, उनमें से एक उम्र वाली पत्ती भी थी। सोचने लगी, कभी यह भी तो नई नरम, मुलायम रही होगी? इसकी सारी नसें फक्क साफ़ उभरी हुई बिल्कुल तुम्हारी तरह जहां सुर्ख लाल धमनियां तुम्हारी पारदर्शी, ट्रांसपेरेंट देह के आरपार दिखती थीं। मैं अक्सर कहा करती थी कि "तुम्हारी स्किन कितनी ट्रांसपेरेंट है, सारी की सारी सुर्ख ब्लड वेसेल्स दिखने लगती हैं।" और तुम्हारा हंस देना और फिर से होंठों का लाल होकर हंसना। ऐसी सुर्ख खिलखिलाहट मर्दों में मैंने कम ही देखी है।

हां, कितने बरस पहले की बात है? हां याद आया, यही कोई पच्चीस साल पहले की, है ना? बेहद साधारण सा मेरा व्यक्तित्व, डर से अंजी मेरी आंखें, दबा सा व्यक्तित्व पर अपने में ही मगन। "खुशी का कोई झरोखा कभी जिम्मेदारियों के आंगन में भी खुलता है, मुझे नहीं मालूम था। सतरंगी सपनों की उमर भी कभी दस्तक देती थी नहीं मालूम।" कितने सौ किलोमीटर दूर तुम्हारा वहां आना और इस एक औपचारिक सी मुलाक़ात। आज याद करने बैठी हूं तो बस वही तुम्हारा जुमला याद आता है, कैसी हैं आप? बस इतनी ही जमा पूंजी मुझे तुमसे उस दौर में अल्फ़ाज़ के रूप में मिली थी। मुझे यह अहसास बाद में हुआ कि इस समय के यह अल्फ़ाज बाद में बहुत कीमती ही जाएंगे। इसका अंदाजा उस बेपरवाह सी उम्र में कहां था। ये तो अब समझ में आया कि अल्फ़ाज़ सदियों तक फिज़ा में तैरते रहते हैं। बस जब इन्हें यादों की नमी मिले तो यह बर्फ़ बन कर आंखों में उतर आती हैं और तर होकर आंसू बन जाती है।

बात आई गई हो गई। नए सपनों के साथ तुम अपनी दुनिया में और मैं अपनी दुनिया में मस्त हो गई। मस्त या पस्त यह तो हम दोनों से बेहतर कोई नहीं जान सकता। "उम्र के पेड़ पर सालों के तजुर्बे के निशां दिखने लगे थे। दरख़्त के छालों की आड़ से रिसते कुछ मवाद, घाव को शायद बाहर आने की इजाज़त हम दोनों ने कभी नहीं दी थी। शायद जज़्ब करने की क्षमता ने उजागर करने के साहस के आगे हार मान ली थी"

समझौते को नियति मान लेने का ककहरा शायद हम दोनों ने सबसे पहले सीख लिया था। अपनीअपनी सीमाओं को लांघना हमने कभी नहीं चाहा था, या ये कहूं कि हमारी स्थिति बिल्कुल उस चील की तरह हो गई थी जिसकी परवरिश सामान्य परिंदों के बीच हुई हो। और वह चील अपनी परवाज ही भूल चुका हो। बिल्कुल वैसे ही हमें अपनी परवाज का अंदाज़ा ही कहां रहा। ना तब और ना ही अब। बसंत ने जब पचासवीं सीढ़ी भी चढ़ ली तो फिर क्या किसी अपने की सुगबुगाहट की आस बाकी रहती है? नहीं ना। पर यहां तो सब उलट पुलट था। अचानक इतने सालों के बाद तुम्हारा आना और न जाने कितने कहे अनकहे, कहने को बाकी रह गए शब्दों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवाजाही ''बिना पुलों'' के होने लगी। शायद इसे ही कहते हैं ''संवादहीन संप्रेषण।'' कितना कुछ गंवा बैठे थे हम। किसी से कुछ पाने की उम्मीद किए बगैर अपनी अपनी मंजिलें तय किए जा रहे थे हम।

तजुर्बे ने शायद हौंसला दिया होगा तभी तो तुम यह कह पाए कि हां बरसो पहले से ही मन के किसी कोने में एक दूसरे के लिए जगह थी। यही बात एक दूसरे को बता कर भी हमने क्या कमाल कर लिया ? यह तो असंख्य लोगों की जिंदगियों में होता है...। लोग कहते हैं, करते हैं और भूल भी जाते हैं।

ख़ामोशी को किनारे रखकर मेरी अनाप्शनाप, उल जुलूल बातों का पिटारा जाने क्यों अब तुम्हारे सामने ही खुलने लगा। तमाम ख़्वाहिशों की लिस्ट तुम्हें सुनाती जाती और तुम ख़ामोशी से कार ड्राइव करते उन बातों का जवाब देते जाते। मुझे लगता कि जाने कितने वर्षों से यह अल्फाज़ मर्यादा की कोठरी में दफ़न से थे। आज तुम्हारा साथ पाकर जाने ये कसक की बारिश से भीगे जंगलों में आज जुगनुओं की तरह झिलमिलाने लग गए। और मेरा इस कदर तुम्हारे सामने बेबाक हो जाना उम्र की बंदिशों के परे...।

कार को ड्राइव करते वक्त अचानक तुम्हारा यह कहना कि मैं उस रिश्ते को वैलिड बनाना चाहता हूं...। पूरे रस्मों रिवाज के साथ। एक बारगी मैं अवाक रह गई। उम्र की इस दहलीज पर इस तरह के रिश्तों के बगैर भी काम चल सकता था...। हजारों उदाहरण, हजारों बानगी मेरे सामने आते गए...। अब सच कहूं तो मुझे इतनी तवज्जो की आदत थी ही नहीं। मैं बारबार तुमसे कहती रही कि इतना मुझे तवज्जो मत दो, कि मेरा दिमाग ही फिर जाए। फिर वही तुम्हारा संतुलित सा प्रश्न क्यों फिर जाएगा ? अब तो मैं यही चाहता हूं...।

फिर मेरा घबराकर जरा सा परेशान होकर तुमसे पूछना कि, तुम्हें अंदाजा भी है ? कि तुम क्या कह रहे हो... ? तुम इसका मतलब भी समझते हो ? फिर वही संयत सा प्रश्न तो तुम ही समझा दो मुझे इसका मतलब। मेरा सिर घूमने लगा धड़कनें तेज होने लगीं, सारा शरीर पसीने से तरबतर। उफ्फ इस प्रश्न, इस डिमांड की मुझे सपने में भी उम्मीद नहीं थी तो भला मुझे इसका जवाब भी कैसे सूझता... ? पर कहीं ना कहीं तुम्हारे इस निर्णय से जिससे मैं अभी सहमत भी नहीं, असहमत भी नहीं थी। अब मुझे ऐसा लगने लगा कि इस प्रश्न का उत्तर मुझसे ना ही पूछा जाए तो अच्छा है। हजारों रिश्ते इस तरह से बेनाम पूरी उम्र बड़ी शिद्दत के साथ निभाए जा सकते हैं तो फिर... ?

आज फिर तुम्हारी गहरी सी आंखों में जाने क्या कुछ नहीं था... ? शहर के सबसे बड़े हाइड्रोलोजिस्ट का मेरे रिक्शे के पीछे आना..., ख़ामोशी से घंटों कार में बैठ दूर से मेरी बालकनी में मेरे आने का इंतजार करना। सच मुझे ये सब परी लोक में खींच कर ले जाता था। इस उम्र में और इस दौर में भी ? इतना सहज सा। ना कुछ पाने की जुर्रत, ना ही खोने का ख़ौफ। ना ही यह फुरसतिया इश्क था...। मुझ जैसे फक्कड़ बाबा को इतनी समझ ही नहीं थी। ना ही मैं कुछ समझना चाहती थी। चारों ओर उन्माद का माहौल था। लाल चुनरिया, देवालय, मंदिरों की भीड़ जवारा निकला जा रहा था। कन्या भोज, देवी का जयकारा क्या सारा कुछ तय था... ? सारी फ़िज़ा सुर्ख लाल रंग में रंगी जा रही थी, लाल बंदन, लाल चुनर, लाल चूड़ियां, लाल दैवीय प्रतिमा...। हृदय की धमनियों में उच्च वेग से बहने वाला रुधिर भी लाल, कनपटियों का दहकते अनार सा लाल होना, हथेलियां तरबतर, वजूद धड़धड़... होनी, अनहोनी का असंख्य घंटनाद। निर्णय-अनिर्णय की आरती..., असमंजस का गुलाल, यादों की महकती धूप...। अचानक तुम्हारा आना और सिंदूर की मोहर लगा देना। जैसे दहकते सूरज को मेरी मांग में टांक देना।

अपने निर्णय से मेरे वजूद को सुर्ख़ लाल कर देना...। हो हजारों रक्ताभ जुगनुओं की पूरी बारात मेरे वजूद पर छा चुकी थी। बस उस क्षण से मैं क्या से क्या हो गई... ? नासमझी से भरे व्यक्तित्व को कोई इतनी गंभीरता, शालीनता, अधिकार से अपनेपन के सिंदूर में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लपेट दे... । बिना किसी पारितोषिक के... ? बिना किसी शर्त के ? वो भी इस माडर्न युग में जहां रिश्ते क्षण भर के पानी से बुलबुले होते हैं।

मैं तो हैरान, परेशान रुंआसी हो गई ये क्या... ? इसके बिना भी हजारों रिश्तों की कश्तियां हर क्षण प्यार के सागर में चलती हैं और उम्र के साथ वह पार लग ही जाती हैं। मैंने तुमसे पूछ ही लिया आख़िर मैं तुम्हें पसंद क्यों आ गई ? कार के स्टेयरिंग पर हाथ और निगाहें सड़क पर जमाए तुम चुप ही थे। तब मैंने अपनी हथेलियां तुम्हारी हथेलियों के पास रख कर कहा देखो रंग में ज़मीन आसमान का अंतर... । तुम्हारा वही अंदाज, बिना मेरी ओर देखे संचत जवाब। दुनिया में दो ही रंग होते हैं एक गोरा एक काला... । अब तो स्वीकारोक्ति का रक्त नसों में बहने लगा। कनपटी भी लाल-लाल होने लगी... । अब निर्णय और फैसला सुनाने की बारी मेरी थी... । अगर मुझे कुछ हो गया तो मेरा पिंडदान तुम ही करोगे। ''गया जी में... । आवाज गूंजी, प्रत्युत्तर में पुनः आवाज गूंजी और तू मेरा करेगी पिंडदान...'' उफ़्फ़ ये कैसी मांग थी, कैसा वचन था, जो जीते जी शर्तों से परे मृत्यु के पश्चात् का था।

जो सम्मान से कभी गर्वित नहीं होते...
अपमान से कभी क्रोधित नहीं होते
और क्रोधित होकर भी,
जो कभी कठोर नहीं बोलते....
वास्तव में वे ही श्रेष्ठ होते हैं... !

सोशल मीडिया से

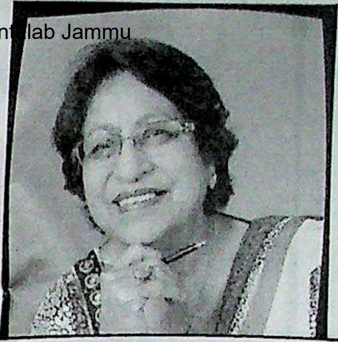

वीना विज

अरदास

सुनती हो, पानी रख दिया है नहाने को ? अरे भाई तौलिया कहे भूल गई। सरोज ! सरोज ! कहां हो ? सरोज डोर बैल बजने पर देखने गई थी कि कौन है दरवाजे पर। लेकिन यह तो दो घड़ी भी चैन नहीं लेने देते। सारा दिन पति की पुकार सुन-सुन कर सरोज यहां से वहां चलती ही रहती। वह भी तो अधेड़ हो चुकी है उनकी तरह। लेकिन उनको इस बात का कभी एहसास ही नहीं हुआ।

सुबह छः बजे से रात के दस बजे तक कमाऊ बेटा-बहू व दोनों पोतों के काम, उस पर कामवाली बाइयों के नख़रे उठाते कब दिन उड़ के कैलेंडर की अगली तारीख पर जा बैठता, वह उसकी रफ़्तार को पकड़ ही नहीं पाती थी। पति को पूरी तरह अपने पर निर्भर देख कर भीतर से उसे एक डर खाए जा रहा था। वो ठाकुर जी के सामने बैठ कर अरदास करने लगी, हे मेरे प्रभु मेरी बात मान लो। मैं तुम से सारी उम्र सदा सुहागन की अरदास करती रही। मेरी भूल थी, क्षमा करना प्रभू ! मैंने कभी सोचा नहीं था कि बुढ़ापे में मेरे न रहने पर इनको कौन देखेगा ? वो जो अपने काम भी नहीं करते... ? जिनके पास अपने बच्चों के लिए भी समय नहीं है। प्रभु ! तुम इनको मेरे रहते ही बुला लेना अपने पास। मेरी यह अरदास दाता मंजूर करना, अपनी दया करना इस अनोखी प्रार्थना पर ! और आंसू उसके चेहरे को लांघ आगे बढ़ उसके आंचल में समा रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आनंद बिलथरे

शौचालय

एक प्रेम कहानी

क्यों, क्या हुआ ?

कुछ नहीं, तुम्हें तो बस अपनी चिंताहै। दिन-रात बोतल के नशे में डूबे रहते हो।

अरे, बता तो सही, हुआ क्या ?

होना क्या था। मैं सुबह शौच के लिये यादव जी के खेत में गई थी। उन्होंने, बुरी तरह हड़का दिया। बोले, अपने निखटू पति से कहो, पीना बंद करके, घर में शौचालय, बनवा ले। उन्होंने आगे से खेत में आने से मना कर दिया।

इसीलिए तो कहता हूँ, मुँह अंधेरे ही चली जाया कर। उस वक्त कोई आता जाता नहीं है।

लेकिन, तुम, शौचालय नहीं, बनवाओगे ?

अरे बाबा पैसा कहां है, मेरे पास।

रहेगा भी कहां से। पहले बाप दादाओं की जमीन बेच कर पी डाली। बांद में मेरे गहने बेचकर। अब कान खोलकर सुन लो, अगर, तुमने, शौचालय नहीं बनवाया तो मैं, हमेशा के लिए, मायके चली जाऊंगी या तुम्हें, तलाक दे दूंगी। इस तरह रोज-रोज की बेइज्जती, मुझसे बर्दाशत नहीं होती।

उसी दिन दोपहर में ख़बर आई कि दूर गांव में ननद की तबीयत, बहुत ख़राब है। पति, अपनी बहन को देखने, चला गया। दिन ढलते, वह अपनी पड़ोसन को साथ लेकर सरपंच से मिलने गई। सरपंच ने [illegible] से कम खर्चे में शौचालय बनवा देने का आश्वासन दिया।

सातवें दिन जब पति लौटकर आया, शौचालय का आधा काम, पूरा हो चुका था।

अरी, ये सब, हुआ कैसे ?

बस हो गया भगवान की दया से।

पैसा कहां से आया ?

वह सब तुम्हारी दया से।

यह पहेली पति की समझ में बिल्कुल नहीं आ रही थी। रात्रि में उसने देखा, पत्नी का गला, सूना था। उसने, प्रश्नवाचक निगाहों से, पत्नी की ओर देखा।

तुम्हारे नाम का मंगलसूत्र था, तुम्हारे ही घर के काम आ गया। पत्नी ने हंसकर कहा।

.......पति की आंखें प्रेमासुओं से डबडबाने लगी थीं।

चांदी का हन्टर

अरे हमने, तुम्हें फैक्ट्री की वर्षगांठ पर मंत्री जी का कार्यक्रम कवर करने भेजा था या इन भिखमंगों की पिटाई की तस्वीरें लाने ?

सर ये सब भिखमंगे नहीं, फैक्ट्री के मजदूर हैं, जिन्हें न समय पर वेतन मिलता है न ओवर टाईम। दुर्घटना होने पर ठेकेदार का आदमी कहकर भगा दिया जाता है। कुछ लोग, अपनी जमीन का मुआवजा और बदले में पक्की नौकरी का वायदा पूरा कराने की मांग लेकर भी आये थे। फैक्ट्री प्रशासन के उकसाने पर ही पुलिस ने लाठी और गोलियां चलाई।

संपादक ने सुधीर को अपने पास बुलाया और पानी का गिलास देते हुए कहा-सुधीर बेशक तुम ने, पत्रकारिता में डिप्लोमा किया है, लेकिन आज की पत्रकारिता, गणेश शंकर पत्रकारिता युग की, पत्रकारिता नहीं रह गई है।

आज का अंक देखा ? फैक्ट्री की वर्षगांठ का पूरे पृष्ठ का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रंगीन विज्ञापन छपा है। तुम क्या समझते हो हजार पांच सौ प्रतियां बेचकर तुम इस ऑफ़सेट जायण्ट का पेट भर सकते हो?

हम स्वयं, सच्ची खबरें, प्रकाशित करना चाहते हैं, उसे पढ़ेगा कौन? पढ़कर, विज्ञापन कौन देगा? सच कहूं, तो आज की पत्राकारिता रन्डी से कम नहीं है। अपने जमीर का सौदा करके ही वह जिन्दा रह सकती है।

सुधीर को लगा, जो कुछ उसने पाठ्यक्रम में पढ़ा था सब गलत था। पत्रकारिता का सही गुरुमंत्र उसे आज ही, प्राप्त हुआ है। आधी रात तक वह रिपोर्ट में कांट-छांट संशोधन करता रहा।

दूसरे दिन जब सुधीर कार्यालय पहुंचा तो संपादक ने उसे सीधे ही अपने कमरे में बुलवा लिया। मेज पर आज का अंक, मुख पृष्ठ पर वर्षगांठ की रंग बिरंगी तस्वीर और लच्छेदार रिपोर्टिंग समेटे रखा था। बीच के पृष्ठ पर एक कोने में, पुलिस द्वारा हल्के लाठीचार्ज की खबर भी थी, जिसे पढ़कर लगता था, हमलावर सब नक्सलियों के सिखाये गुर्गे थे।

सुधीर ज़ब उठकर जाने लगा, संपादक ने उसकी पीठ ठोकते हुए कहा-तुम्हारी रिपोर्टिंग से फैक्ट्री मैनेजमेंट बहुत ख़ुश हुआ है और उन्होंने तुम्हारे लिए एक गिफ्ट पैकेट भिजवाया है।

सुधीर ने पैकेट खोलकर देखा, भीतर एक चमचमाती कीमती पेन और बाइक की चाबी थी। उसने अपनी पेन, जेब से निकालकर, मेज के नीचे रखे डस्टबिन में डाल दी और ख़टारा साइकिल प्यून रामदीन को देकर, चाबी, अंगुली में घुमाता हुआ, बाहर निकल गया।

संपादक की आखों में रिंग मास्टर की-सी, चमक थी। उसने, चांदी के हण्टर से एक पानीदार की आंख का पानी निचोड़कर उसे पालतू जो बना लिया था।

'मातृत्व की तलाश में'

निर्जन एकांत में खड़ी काटेज में केवल तीन प्राणी थे। एक तुरजा, सेठ साहब की रखैल। दूसरा, उम्रदराज चौकीदार हसन खां, और तीसरा हसन खां की बकरी आबिदा।

भूले भटके, कभी सेठ साहब की कार आकर, सन्नाटे को तोड़ती और रात के अंधेरे में ही, ग़ायब हो जाती।

भरी बहार में पतझड़ का जख्म लिए तुरजा अक्सर अभिषप्त-सी काटेज के पीछे बने, छोटे-छोटे चबूतरों के बीच जाकर, बैठ जाती या आबिदा के पेट पर चुप चाप, हाथ फेरती रहती।

भावनाशून्य हसन खां के होठों तक कभी हंसी आई होगी विश्वास नहीं होता। तुरजा की निगहबानी के बाद, आबिदा पर ही उसका सारा ध्यान केंद्रित हो जाता। उसके ब्याने की उसे हरदम, फ़िक्र बनी रहती।

तुरजा और आबिदा की नियति में कोई फ़र्क नहीं था। दोनों कोख़ का दंश, भोग रही थीं। एक की कोख़ के टुकड़े, धरती पर आते ही चबूतरों के नीचे सुला दिये जाते। दूसरे के जन्म ही कुछ बड़े होकर कसाई के हाथों बेच दिये जाते।

दोनों में एक और समानता थी। उन्होंनें नर ही जन्मा था, मादा नहीं। आबिदा तो तब भी ख़ुश किस्मत थी। उसे अपने बच्चों को कुछ दिन तो चूमने-चाटने का वक्त मिलता था, किन्तु तुरजा उससे भी वंचित थी। कभी-कभी वह आबिदा की किम्मत से ईर्ष्या करने लगती।

एक रात सेठ साहब अभी-अभी आकर गये थे। तुरजा ने उनसे बहुत मिन्नतें की थी कि कभी उसकी कोख का एकाध फूल खिलने दें, लेकिन सेठ साहब ने डांट-डपट कर उसे चुप करा दिया था। वे इन्द्रायण के फल की कल्पना से ही कांप उठते थे। तुरजा इस बार फिर पेट से थी। उसने यह रहस्य सेठ साहब से छिपा रखा था।

नवमीं का चांद निकल आया था। वातावरण में हल्की-सी ठंडक थी। वह चुप चाप जाकर उन्हीं चबूतरों के बीच बैठ गई। उसे चारों ओर से किलकारियां सुनाई पड़ने लगीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह आात्मविभोर होकर, उसी में मगन हो गई।

अचानक उसे आबिदा की आहट, सुनाई दी। उसने उठकर देखा, हसन खां, तीव्र ज्वर से अपनी कोठरी में, बेसुध पड़ा था। वह चुपचाप आबिदा के पास जाकर बैठ गई। उभरे पेट वाली आबिदा, तुरजा को देखकर कान हिलाने लगी।

तुरजा के मन में भावनाओं का अन्तर्द्वन्द्व मचा था। चांद, आमंत्रण दे रहा था। वह भावना के आवेग में उठी। आबिदा को बन्धनमुक्त किया और उसके पांव नि:शब्द सार्थक मातृत्व की तलाश में क्रमश: काटेज से दूर होते चले गये।

रोहित यादव

टिकट

विधानसभा चुनावों की घोषणा हो चुकी थी। भ्रष्टाचार के एक मामले में धूमिल हुई छवि के कारण नेता जी को पार्टी हाई कमान ने टिकट देने से इंकार कर दिया था। इस बात को लेकर नेता जी काफी दु:खी दिखाई दे रहे थे।

अपनी आलीशान कोठी के ड्राईंग रूम में बैठे नेता जी इसी सोच-विचार में उलझे हुए थे कि पार्टी टिकट किस प्रकार हासिल किया जाये? तभी पास पड़े सोफ़े पर बैठी नेता जी की पत्नी ने सुझाव दिया कि आजकल सभी पार्टियां महिला आरक्षण पर जोर दे रही हैं। आपको टिकट नहीं मिल रहा है तो दु:खी क्यों होते हो? इस आरक्षण के तहत पार्टी हाई कमान मुझे तो टिकट दे सकता है। मेरे पर तो भ्रष्टाचार का आरोप नहीं है। मैं चुनाव लड़ लूंगी। सत्ता तो घर में ही रहेगी।

अपनी पत्नी की बात सुनकर नेता जी का चेहरा खिल उठा और उसने इस सुझाव से पार्टी हाई कमान को अवगत कराया। हाई कमान ने उनके सुझाव को स्वीकार कर नेता जी की पत्नी को टिकट देने की घोषणा कर दी।

गऊसेवा

गऊमाता की दुर्दशा को लेकर गौ-सेवा समिति के कार्यकर्ताओं का एक शिष्ट मंडल उपायुक्त से मिलने उनके कार्यालय आया और उन्हें बताया कि जब से कृषि का यंत्रीकरण हुआ है, लगभग तभी से गऊमाता पर उसके अस्तित्व का संकट गहरा उठा है। अधिकांश पशुपालकों ने अब अपनी गायों को खूँटों से खोल दिया है। अब वे आवारा बनी गली-कूचों में पोलिथीन खा-खा कर मर रही हैं। गऊमाता की यह दुर्दशा हमसे देखी नहीं जा रही। अत: हमने गऊसेवा करने का निर्णय लिया है। इसके लिए आप हमारी समिति को कुछ अनुदान देने की अनुकंपा करें ताकि हम गौमाता की सेवा बेहतर ढंग से कर सकें।

उपायुक्त ने उनकी बातें बड़ी ध्यान से सुनीं और गऊसेवा का कार्य करने के लिए उनकी सराहना की। अचानक उपायुक्त ने उनसे एक प्रश्न पूछा :-
''तुम में से कितने गौ-सेवकों ने अपने घर में गायें बांध रखी हैं?'' उपायुक्त के अचानक किये गये इस प्रश्न से वे हतप्रभ रह गये और एक दूसरे का मुँह ताकने लगे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घोषणा-पत्र

चुनाव प्रचार अपने यौवन पर था। विपक्षी दल ने आज पार्टी कार्यालय में एक पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया था। पार्टी अध्यक्ष जब पत्रकारों को सम्बोधित करने लगे तो एक पत्रकार ने उनसे पूछ लिया :

''अध्यक्ष महोदय जी, सत्तारुढ़ दल ने अपना चुनावी घोंषणा-पत्र जारी कर दिया है। अब आप अपनी पार्टी का घोषणा-पत्र कब जारी कर रहे हैं ?''

पत्रकार का यह प्रश्न सुनकर अध्यक्ष जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया:-

''पत्रकार महोदय, हमें इसके जारी करने की क्या जरूरत है ? जो वायदे सत्तारुढ़ दल ने अपने घोषणा-पत्र में किये हैं, वे सब हमारे ही तो हैं। हम इन वायदों को पूरा करेंगे। फिर भी जिन वायदों को सत्तारुढ़ दल ने छोड़ दिया है, उन शेष वायदों को भी पार्टी पूरा करेगी। इसका मैं वचन देता हूँ।'' अध्यक्ष महोदय का यह जवाब सुनकर सभी पत्रकार स्तब्ध रह गये।

इंसान

चौपाल में बैठे लोग अलाव तापते हुए हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। हुक्के का कश खींचते-खींचते उनके बीच बातों का अलाव भी गर्म हो चला। बात खेत-ख़लिहान से होती हुई आज की राजनीति और नेताओं पर आ गई। किसी ने राजनीति को वेश्या बताया तो किसी ने नेताओं को दलाल की संज्ञा दे डाली।

उनमें इसी प्रकार की बहस शुरू थी। तभी काका हरचंद ने उनसे नेता और इंसान के बीच के अन्तर के बारे में पूछा तो मामला और भी ज्यादा गर्म हो गया। कोई कुछ बोल रहा था तो कोई कुछ। जब वे बात-बात में आपस में उलझने लगे तो बोहरा जी ने उन्हें चुप कराते हुए कहा :-

''अरे मूर्खों, इतनी छोटी-सी बात पर तुम लोगों ने महाभारत मचा दिया। इंसान बना आदमी नेता बन सकता है। परन्तु नेता बना आदमी इंसान नहीं बन सकता। नेता और इंसान में बस इतना-सा अन्तर है।''

बोहरा जी की बात सुनकर वे निरुत्तर हो गये।

सैदपुर, मंडी अटेली 123021 हरि0

महात्मा बुद्ध ने कहा था...

''पके हुए फल की तीन पहचान होती है एक तो वह नर्म हो जाता है दूसरे वह मीठा हो जाता है तीसरे उसका रंग बदल जाता है''

''इसी तरह से परिपक्व व्यक्ति की भी तीन पहचान होती है पहली उसमें नम्रता होती है...दूसरे उसकी वाणी मे मिठास होता है और तीसरे उसके चेहरे पर आत्मविश्वास का रंग होता है''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विश्वीकरण के दौर देव नागरी का शेष

विश्वीकरण का अर्थ ही इंटरनेट पर किसी भाषा का लोकप्रिय होना है, किंतु भूमंडलीकरण के दौर में कामकाजी भाषा के रूप में अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ़ा है। बोलचाल की शब्दावली में अंग्रेज़ी बहुत भर गई है और लेखन में उसका असर बहुतायत में दिख रहा है। इसका अनुपात तय करना होगा अन्यथा 'हिंग्लिश' नामक ऐसा 'क्रियोल' बना लिया जायेगा जो हिंदी भाषा और नागरी लिपि के अस्तित्व के लिए बहुत बड़ा ख़तरा होगा। आज इस बात का चिंतन करने की आवश्कता है कि देवनागरी में लिखित हिंदी, ज्ञान की भाषा क्यों नहीं बनी, उसे अनुवाद की भाषा बना कर ही क्यों रख दिया गया है। इसके लिए शिक्षकों को मानक हिंदी शिक्षण के लिए प्रयोगशालाएं बनानी होंगी, भाषाओं के प्रशिक्षण केंद्र खोलने होंगे, हमें संस्थाबद्ध होकर वर्तनी, उच्चारण, लिपि तथा व्याकरण पर ज़ोर देना होगा।

'समय सरगम' का शेष

की जा रही है, वहां 'समय सरगम' के पात्र दूसरों के लिए एक सीख और प्रेरणा स्रोत समझे जा सकते हैं। साहित्यिक इतिहास में यदि नज़र डाली जाए तो वैदिक काल से आधुनिक काल तक बड़ों व वृद्धों को सम्मान की दृष्टि से देखा गया है। उनके प्रति आदर और सेवा भाव झलकते हैं। वृद्धों की एक-एक झुर्री उनके अनुभव को बयाँ करती है जो हमारे देश की उन्नति के लिए अति आवश्यक है। आज की पीढ़ी को इस ओर ध्यान देने की जरुरत है। व्यक्ति यदि अपने से बड़ों की वृद्धावस्था को सुधारता है तो एक प्रकार से वह अपनी वृद्धावस्था सुधारने का काम करता है। यदि हम अपने से बड़ों को सताते हैं तो उसी दिन यह तय हो जाता है कि कल हमें भी ऐसे ही हमारे बाद वाली पीढ़ी सताएगी। हमारी संस्कृति हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' का ज्ञान देती है। हमारे समाज में संयुक्त परिवार का चलन था और उसका मुखिया एक वृद्ध ही होता था। घर में वृद्ध का होना सम्मान की बात मानी जाती थी। इसी धारणा को हमें दोहराने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति अपने बुजुर्गों का सम्मान करने की प्रेरणा देती है और यही हमारा पूर्ण आचरण है।

सन्दर्भ

1. समय सरगम, कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2000
2. कृष्णा सोबती एक मूल्यांकन, छबिल कुमार मेहेर, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खिड़की के पिछवाड़े से

पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'
डॉ. राहुल मिश्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी प्रचार प्रसार सोसायटी अमृतसर लुधियाना में आयोजित हिन्दी शिक्षक संघ पंजाब के प्रान्तीय सम्मेलन में पंजाब सरकार के प्रतिनिधियों को सौंपे गये मांग पत्र का पूर्ण रूप से समर्थन करती है ।

मांग-पत्र

1) सरकार प्रदेश में पंजाब हिन्दी अकादेमी की संस्थापना करे !

क] ताकि पंजाब के हिन्दी साहित्यकारों, शिक्षकों, शोधकर्तृताओं और संस्कृतिकर्मियों की सर्जनात्मक प्रतिभा एवं रिसर्च सम्बन्धी गतिविधियों को सुचारु रूप से जारी किया जा सके । इस कार्य के फलस्वरूप हिन्दी और पंजाबी भाषासाहित्य एवं सांस्कृतिक अनुसन्धान को बढ़ावा मिल सकेगा ।

ख] पंजाब प्रदेश की नवोदित प्रतिभाओं को प्रफुल्लित करने के लिए सर्जनात्मक साहित्य व तुलनात्मक अध्ययन सम्बन्धी कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का का आयोजन किया जा सकेगा ।

ग] हमारे राज्य के हिन्दी साहित्यकारों, शोधार्थियों तथा नागरिकों के अध्ययन हेतु लाइब्रेरी की व्यवस्था की जा सकेगी ।

घ] अकादेमी द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका के माध्यम से भाषा, साहित्य, कला एवं संस्कृति सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों को प्रचारितप्रसारित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य सम्भव हो पाएगा ।

ड़] प्रदेश के साहित्य, संस्कृति, कला, भाषा और अन्यान्य विषयों से सम्बन्धित दुर्लभ पाण्डुलिपियों का सम्पादन, अनुवाद, प्रकाशन व डिजिटलाइजेशन सम्भव हो सकेगा ।

निश्चित ही उपर्युक्त कार्य हमारे पंजाब प्रान्त के विकास की गति को बहुगुणित करने में सहायक सिद्ध होंगे। इस लक्ष्य को पंजाब हिन्दी अकादेमी की संस्थापना करके प्राप्त किया जा सकता है ।

2) पंजाब के सभी सरकारी स्कूलों में हिन्दी लेक्चरर के पद दिए जाएं ।
ताकि विद्यार्थी दसवीं के बाद 10+1 और 10+2 में भी हिन्दी विषय पढ़ सकें ।

3) सभी सरकारी स्कूलों में अध्यापकों की समयबद्ध पदोन्नतियां की जाएं ।

4) पंजाब सरकार पहल के आधार पर विभिन्न कक्षाओं के हिन्दी पाठ्यक्रम (सिलेबस) का रिव्यू करते हुए उसका नवीनीकरण करवाए ।

5) हिन्दी शिक्षक संघ पंजाब सरकार से यह अपेक्षा रखता है कि सरकार उसे लुधियाना में ज़मीन अलॉट करे 7 ताकि प्रदेश में शैक्षणिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में सुविधा हो सके।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13 मई 1941 को जन्में पांडेय शशि भूषण शीतांशु वाद मुक्त आलोचना के शिखर पुरुष, सैद्धांतिक और सर्जनात्मक आलोचक हैं। अब तक 36 पुस्तकें और 300 से ज्यादा शोधालेख प्रकाशित, सौ से अधिक को पीएचडी और एमफिल, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर से सेवानिवृत।

साई कृपा, 58 लाल एवेन्यू, छेहर्टा, अमृतसर पंजाब
मो. 9878647468

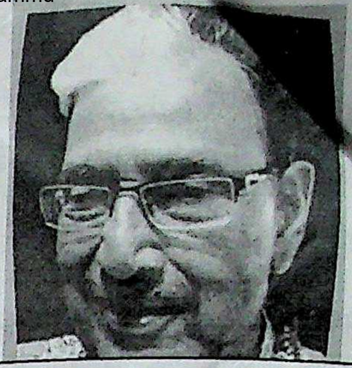

पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'

हरिवंशराय बच्चन : विषाद और आह्लाद का कटु-मधु गुंजन !

छायावादोत्तर कवियों में हरिवंशराय बच्चन और रामधरी सिंह दिनकर मेरे प्रिय कवि रहे हैं। कहना न होगा कि उस आंदोलन के यह दोनों श्रेष्ठ और प्रतिनिधि कवि भी हैं। बच्चन जी और दिन कर जी दोनों की कविताओं से मेरा परिचय स्कूली जीवन में ही हो गया था। दोनों की कविताएं मैंने पाठ्य पुस्तकों में कहीं-न-कहीं पढ़ ली थीं। पुस्तकालय से पुस्तक निर्गमित कराकर दिनकर की रेणुका, रसवंती और हुंकार पुस्तकें पढ़ी थीं तथा बच्चन की मधुशाला और निशानिमंत्राण-ये दो पुस्तकों पढ़ी थीं। बाद में विश्वविद्यालय के आरंभिक छात्रा-जीवन में दिनकर का 'चक्रवाल' संकलन खरीदा और पढ़ा था और बच्चन की मिलन-यामिनी पुस्तक पढ़ी थी। उसके बाद स्नातकोत्तर कक्षा तक आते-आते पाठ्यक्रमों में और उनके अतिरिक्त भी इनकी लगभग तब तक प्रकाशित सारी रचनाएं मैंने पढ़ डाली थीं।

इन दोनों की कविताओं में संवदेना, भावनामयी अभिव्यक्ति और सम्प्रेषणीयता की अद्भुत पारदर्शिता थी। इनकी कविताओं का आयाम व्यापक था। हरिवंशराय बच्चन अपने जीवन के राग-विराग का गान करने वाले कवि थे। उनकी कविताओं में प्रेम की उत्कटता थी, आह्लाद और विषाद भी था। पर पाठक को अपने काव्य-प्रवाह में बहा ले जाने की उनमें अद्भुत तन्मयता थी। वे मस्ती और मौज के भी कवि थे। 'मधुशाला' उनकी सर्वाधिक लोकप्रिय रचना थी। वे जिस किसी कवि-सम्मेलन में जाते थे, उनकी अन्य कविताओं को सुनने के बावजूद सारा श्रोता-समूह उन्हें एक स्वर से 'मधुशाला' सुनाने का आग्रह करता रहता था और वे मधुशाला सुनाने को विवश हो जाया करते थे। दिन कर में प्रभावी काव्यपाठ की ओजस्विता, तेजस्विता था। उनका उच्चारण, ठहराव और प्रवाह श्रोता को आकर्षित करता था। पर बच्चन गायक थे, उन्हें कंठ की अद्भुत माधुरी मिली थी। वे कविता और संगीत दोनों से जुड़े थे और दोनों पर उनका गजब का अधिकार था। अपनी मुक्तछन्दीय कविताओं का पाठ भी वे बहुत प्रभावी रूप में करते थे।

मैंने 1962-1963 के संधिकाल में उन्हें पहली बार देखा था और उनके काव्य-संगीत का रसास्वादन किया था। हमारे प्रोपफेसर और अध्यक्ष आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा अपने प्रवास-काल में लंदन में जिस छात्रावास में रहते थे उसके ठीक बगल वाले कमरे में हरिवंशराय बच्चन रह रहे थे। हरिवंशराय बच्चन W.B. YEATS की कविता पर पीएच. डी. का शोधकार्य कर रहे थे और देवेन्द्रनाथ शर्मा वहां भाषाविज्ञान विभाग में भाषा-विज्ञान का तब तक जो अद्यतन ज्ञान था उसे ग्रहण कर रहे थे। साथ ही फ्रांसीसी, जर्मन, इटेलियन, ग्रीक और लैटिन जैसे भाषा-शिक्षण का पाठ्यक्रम पूरा कर रहे थे। एक दिन स्नातकोत्तर कक्षा में उन्होंने हम सबसे पूछा था कि मैं इस बार विभाग में किसी विशिष्ट साहित्यकार के रूप में हरिवंशराय बच्चन को बुलाना चाहता हूँ। क्या आप लोग उन्हें पसंद करेंगे और मेरे इस प्रस्ताव को समर्थित करेंगे? इस पर, हम सभी छात्रों ने एक स्वर से 'हाँ' कहा था और यह भी कहा था कि आपके इस प्रस्ताव से हम सभी सहमत हैं और इसको समर्थित कर रहे हैं। अचानक एक दिन हमें सूचना मिली कि हरिवंशराय बच्चन आज पधर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गए हैं, पर वे सिर्फ और सिर्फ अपने काव्यपाठ का हम सबको रसास्वादन कराने के लिए आए हैं। उनका कोई व्याख्यान नहीं होगा। उनके लिए खुले आसमान के नीचे जो एक विशाल चत्वर पहले से बना हुआ था, उसे मंच बनाकर सजाया गया। विशाल पंडाल बना, शामियाने लगाए गए। प्रकाश की प्रोज्ज्वल-समुज्जवल व्यवस्था की गई। दोनों किनारे कुर्सियां लगाई गई और बीच में दरियां, गद्दे और चादर बिछा दी गईं। शुरू की पंक्तियों में कुछ मसनदों की भी व्यवस्था कर दी गई। जाड़ों की रात थी। लगभग साढ़े छह बजे बच्चन जी पधरे और उनका काव्यपाठ आरंभ हुआ। इसके पहले महाविद्यालय-विश्वविद्यालय के कुछ चुने हुए कवि-विद्यार्थियों और कवि-अध्यापकों की कविताएं भी सुनने को मिलीं, जो संख्या में 10 से अधिक नहीं थीं। इसे उनके आने के पहले अंतकाल को भरने के लिए मंच-संचालक ने अपनी ओर से कार्यान्वित कर दिया था। यह बच्चन ही का एकल काव्यपाठ था। कोई भी अन्य कवि कहीं से भी नहीं बुलाया गया था।

बच्चन जी के मंच पर अवतरित होने के साथ ही मैंने उन्हें अच्छी तरह देखा। मैं अगली पंक्ति में मंच के नीचे बैठा हुआ था। इसलिए मुझे किसी प्रकार की असुविध नहीं हुई। गौर वर्ण, लम्बा छरहरा शरीर, पर दिनकर की तुलना में लंबाई कम, आँखों पर काले फ्रेम का चश्मा, करीने से सजे ऊपर उठे घूँघराले बाल, थ्री पीस बन्द सूट और उसके ऊपर खुले ओवरकोट में सजे हरिवंशराय बच्चन ! यह उनका बाह्य व्यक्तित्व था जो वहाँ सब को आकर्षित कर रहा था। मंच-संचालक के तत्काल बाद देवेन्द्रनाथ शर्मा डैश के पीछे आए और उन्होंने श्रोताओं को बच्चन जी के विषय में बताया और वे किस मुश्किल से बच्चन जी को मना कर मुजफ्फरपुर ले आए, यह बात भी उन्होंने हम सबको बताई। मैं जब नवीं कक्षा का विद्यार्थी था तब मेरे घर पर पिता की स्नेहिल अनुकम्पा के कारण हर सप्ताह 'हॉकर' 'धर्मयुग' साप्ताहिक दे जाया करता था और मुझे उसमें बच्चन की रचनाएं पढ़ने को मिल जाती थीं। धर्मयुग के एक पूरे पृष्ठ पर सजीला चित्रा अंकित होता था और उसी रंगीन पृष्ठ पर काले टाइप में उनकी कविता मुद्रित रहती थी। अगर कविता लम्बी हुई, तो इस पत्रिका के दोनों बीच के पृष्ठों पर भी वह छपी रहती थी। धर्मयुग के आने के साथ ही मैं विषय-सूची देखता था और यदि उसमें बच्चन की कविता हुई, तो सीधे उन पृष्ठों को ही निकालकर पढ़ने लगता था। सद्य : मुद्रित प्रकाशित पत्रिाका को पहली बार खोलते हुए उसमें एक विशिष्ट प्रकार की आकर्षक गंध का अनुभव मुझे उन दिनों हुआ करता था और उस पृष्ठ तक पहुँचते-पहुँचते चित्रांकन, रंग की भास्वरता-मलिनता और चित्रा से मिलती-जुलती भावात्मक कविता की संवेदना मेरे किशोर मन पर अद्भुत प्रभाव डालती थी और मैं जीवन-जगत का सब कुछ भूलकर मुग्ध हो जाया करता था। उनकी कविता के बोल मेरी जिह्वा पर न केवल चढ़ते, बल्कि बस जाया करते थे। ऐसा ही एक गीत उन दिनों धर्मयुग में प्रकाशित हुआ था, जो मुझे अब तक याद है- ''अब हेमंत अंत नियराया, लौट न आ, तू गगन-बिहारी।'' और बड़ी भास्वरता के साथ नीचे अपेक्षया धूमिल पड़ते रंगों के बीच गगन-बिहारी विहग के कई उड़ते चित्र होते थे। कहना न होगा कि मैं उनके गीतों और कविताओं का रसलोलूप पाठक था। यह सब उनके लंदन के प्रवासकाल की कविताएं थीं, जो प्रमुखत : 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुआ करती थीं। इसी में गिरिजा कुमार माथुर का गीत 'छाया मत छूना मन' भी मैंने पढ़ा था। हमारे विभागाध्यक्ष देवेन्द्रनाथ शर्मा ने हमें बताया था कि ''बच्चन जी अपने लंदन के एकाकी जीवन में प्रति रात्रि सोने के पूर्व या जगने के बाद कविताएं लिखते थे। वे अपनी सारी कविताएं तो नहीं सुनाते थे। पर एक दिन उन्होंने चाय पीते हुए मुझे अपनी एक कविता सुनाई थी, जिसकी एक पंक्ति थी – ''याद तुम्हारी लेकर सोया, याद तुम्हारी लेकर जगा।''

हाँ, उस दिन आयोजित काव्यसंध्या में बच्चन ने अपना काव्यपाठ आरंभ किया। सबसे पहले उन्होंने उत्तरप्रदेश की लोकधुन पर अपने द्वारा हाल में ही लिखा हुआ अपना एक गीत गाकर सुनाया। कवितां बहुत छोटी थी, पर बहुत प्रभावी थी। यह कविता 'सोनमछली' पर लिखी गई थी। सोनमछली पर अंग्रेजी की 'गोल्डपिफश' कविता प्रसि(है और हिन्दी में अज्ञेय की लिखी कविता 'सोनमछली' से भी लोग परिचित हैं। पर बच्चन की कविता में जो एक लोकधुन थी और एक प्रेमपूर्ण आग्रह था, वह हृदय-स्पर्शी था-''जाओ लाओ पिया/नदिया से सोनमछरी।'' बच्चन ने स्वयं इसे बड़े मुग्ध स्वर में आवर्तक रूप में गाया। पूरी कविता सुनाने के बाद जब श्रोता समूह ने उनसे इसे एक बार और सुनाने का आग्रह किया, तब उन्होंने एक शर्त रखी कि मैं सुनाऊँगा अवश्य, पर आपको पूरी कविता मेरे साथ दोहरानी होगी। सारे श्रोता-समूह ने उनका अनुगमन किया। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने उत्तरप्रदेश की लोक-धुनों पर लिखी लगभग एक दर्जन कविताएं हमें सुनाईं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरा पंडाल मौन, निस्तब्ध उन्हें सुन रहा था। हर कविता के बाद तालियों की जोरदार गड़गड़ाहट हो जाया करती थी। जब वे इससे आगे बढ़कर दूसरे प्रकार की कविताएं सुनाने जा रहे थे, तब श्रोता-समूह न उनसे फरमाइश की कि- ''इस पार प्रिये, तुम हो, मधु है/ उस पार न जाने क्या होगा ?'' सुनाइए हम लोगों ने, उन्हें पहले ही तालियों की गड़गड़ाहट से यह गीत सुनाने की विवश कर दिया। इसमें बच्चन ने मृत्यु के पश्चात् के परिणामों की आशंका को और नियति-चक्र की व्यवस्था को अवसाद के जिन स्वरों में अभिव्यक्त किया था, वह अत्यंत कारुणिक था और उसमें अपनी प्रियतमा के साथ जिस सघन राग-तत्त्व की अनन्यता और विश्वासपूर्ण निकटता विद्यमान थी, उस की अनुभूति, हृदय को छू जाती थी। मृत्यु के पश्चात् के जीवन से तब तक अनजाने और आशंकित कवि के मृत्युबोध का स्वर इसमें गहरा उठा था। बच्चन ने बड़ी करुणा के साथ गाया- ''इस पार प्रिये, तुम हो, मधु है/उस पार न जाने क्या होगा?'' मैं कविता सुन रहा था और सोच रहा था कि यहाँ 'मधु' क्या है? जीवन में बसंत का आकर्षण है? जीवन की तिकटता या प्रियतमा से मिलने वाली जिजीविषा की मिठास है या प्याले में भरी हुई सुरा है और उनकी प्रियतमा उनकी साकी है? तभी मेरा ध्यान उनके द्वारा शुरू किए जाने वाले दूसरे गान पर अटक गया। कुछ देर के बाद मैंने भी उनसे खड़े होकर आग्रह किया- यदि आपको स्मरण हो, तो मेरे आग्रह पर मेरी पसंद की ये दो कविताएं भी सुना दें- 1. ''आज न मैं खुद सोऊँगा औ' सोने दूँगा हे मनवीणे'' तथा 2. ''रात आधी, खींच कर मेरी हथेली, एक उँगली से लिखा था 'प्यार' तुमने !'' बच्चन ने तत्काल इनमें से दूसरी कविता सुना दी और पहली भी कुछ अन्य काव्य-पाठों के बाद सुना दी। रात के बारह से अधिक बज चुके थे। उनका काव्यपाठ निरंतर चल रहा था। बीच-बीच में वह कभी पास में रखे पानी के गिलास को अपने होठों से लगा कर एक-दो घूँट लेते थे और रख देते थे। रात को एक बजे मंच के संयोजक ने खुद उनके लिए गर्म केतली से चाय उड़ेली और उनसे पीने का आग्रह किया। पर बच्चन रुके नहीं। बिस्किट उन्होंने नहीं ली। चाय की चुस्की बीच-बीच में लेते रहे। पर सभा-कक्ष में माँग-भरी आवाजें निरंतर गूँज रही थीं- 'मधुशाला', 'मधुशाला'। पर बच्चन मुक्त छंद, में लिखी अपनी कविताओं का पाठ करने लगे। उनकी एक कविता थी- ''जीवन की आपाधापी में कब वक्त मिला, कुछ सोच सकूँ... ''इसके बाद उन्होंने अपनी 'अग्निपथ' कविता भी सुनाई। 'ताजमहल पर लिखी, बापू पर लिखी उनकी कविताएं भी हमें सुनने को मिलीं। अंत में 4 बजे रात में उन्होंने मधुशाला सुनानी प्रारंभ की। सुनाने के पहले उस पंडाल में तालियों की गड़गड़ाहट से जो गर्माहट पैदा हुई वह अद्भुत थी। इसने अनतिवस्त्राधरी श्रोतओं को भी ठंड का अहसास नहीं होने दिया। बच्चन ने मधुशाला सुनानी शुरू की। उनमें कुछ पंक्तियाँ आज भी मुझे याद हैं- ''मन्दिर-मस्जिद वैर कराती, मेल कराती मधुशाला', फिर दूसरी रुबाई- ''दुनिया वालो, किन्तु किसी दिन/ आ मदिरालय में देखो/दिन की होली, रात दीवाली/रोज मनाती मधुशाला।'' इसी में एक रुबाई यह भी थी- ''प्राणप्रिये यदि करना ही हो/श्राद्ध हमारा यूँ करना/ पीने वालो की खातिर/तुम खुलवा देना मधुशाला।'' अंत में उनकी सुनाई गई दो कविताएं इस प्रकार थीं- 1. ''मैंने जीवन देखा, जीवन का गान किया'' और ''प्यार, जवानी, यौवन इनका जादू मैंने सब दिन माना।'' साढ़े चार और पाँच के बीच का प्रत्यूष काल रहा होगा। इस ब्रह्मवेला में ही बच्चन का काव्यपाठ समाप्त हुआ। हम लोग कृतकृत्य हुए कि अपने मित्र और हमारे अध्यक्ष के आग्रह पर वे हमारे लिए दिल्ली से मुजफ्फरपुर पधारे। बच्चन जी ने मंच पर आने के साथ ही हमें बताया था कि ''मुझे आने में विलम्ब हुआ है। इसलिए हमारा कोई व्याख्यान कल आयोजित नहीं किया जा सकता, जिसका मुझे खेद है। मैंने इस आशंका और संभावना से पहले ही शर्मा जी को अवगत करा दिया था। कल ही गोवा पुर्तगालियों से मुक्त होकर भारत का अभिन्न अंग और हमारा राज्य बन गया है। इस संदर्भ में विदेश मंत्रालय में मेरी उपस्थिति कल संध्या तक अपेक्षित थी।'' कहना न होगा कि यह प्रधनमंत्री नेहरू का कार्यकाल था।

हरिवंशराय बच्चन की सुमित्रानंदन पंत से अच्छी मित्रता थी। 'अभिनव सोपान' नाम से प्रकाशित इनके श्रेष्ठ कविताओं के संकलन की भूमिका सुमित्रानंदन पंत ने लिखी है। उसमें बच्चन को उन्होंने 'मधुकाव्य का सर्जक' कहा है। उन्होंने माना है कि बच्चन की कविताएं, उनकी पंक्तियाँ कौंध कर पाठक के मन में प्रवेश कर जाती हैं और फिर अपने ही प्राणोन्मत्त प्रकाश के चांचल्य में स्मृति-पट पर छाई रह जाती हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के प्रसाद को मधुशब्द के प्रयोक्ता कवि के रूप में स्मरण किया है। उनके काव्य में 'मधु' शब्द के अनेकशः प्रयोग हुए हैं। पर मधुकाव्य की मादकता तो बच्चन की काव्य-कृतियों में ही देखने को मिलती है। बच्चन जीवन के विभिन्न आयामों के विभिन्न

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूपों के कवि रहे हैं। उनकी पूर्ववर्ती कविताओं में उनका अनुभूति-पक्ष प्रबल और प्रगाढ़ है, तो प्रायः उनकी उत्तरवर्ती कविताओं में उनका विचारपक्ष प्रमुख रूप में उभरा है।

बच्चन का गद्य-साहित्य भी पठनीय और प्रभावी है। उनकी गद्य-कृतियों में उनकी आत्मकथा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बच्चन ने डायरी-लेखन भी किया है। विदेश में रहते हुए उन्होंने डायरी के रूप में जो अभिव्यक्तियाँ की हैं वही 'प्रवास की डायरी' नाम से प्रकाशित है। उनकी कविताएं जहाँ कलाकरण (Monumentalization) का प्रमाण हैं, वहीं उनकी गद्य-कृतियां-आत्मकथा और 'डायरी' उनके दस्तावेजीकरण (Documentization) की साक्ष्य उपस्थित करती हैं। उनकी आत्मकथाओं के शीर्षक काव्यात्मक हैं। पहला खण्ड जहाँ 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' नाम से लिखा गया है, वहीं दूसरा खण्ड 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर' है। 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ, में बच्चन ने अपने परिवार का परिचय दिया है। उन्होंने उस तूफानी दिन और बरसात को याद किया है, जब अपने दादा के साथ वह बाहर निकले हुए थें इसी खंड में उन्होंने अपने श्रीवासतव कायस्य कुल का वह अनोखा उल्लेख किया है, जिसमें उनके किसी पूर्वज ने किसी ब्राहमण राजा की पुत्री को अपहरण से मुक्ति दिलायी। अपहृत कर ले जा रहा था। उस समय उस राजा ने इनके युवा पूर्वज राजा का जो कायस्थ राज्य था, उनके पास संदेश भेजकर उन्होंने उनसे मदद की मांग की थी कि उनकी सेना भी अपहरण कर ले जाने वाले दृष्ट राजा की सेना से मोर्चा लेने आये और उनकी कन्या को छुड़ा दे। बच्चन ने स्वीकार किया है कि उनके उस पूर्वज राजा ने ऐसा ही किया और उस कन्या का अपहरण करने वाले राजा के चंगुल से उसे छुड़ाकर ब्राह्मण पिता राजा को सौंप दिया।

इनके पूर्वजों में जिस राजा या राजकुमार ने यह युद्ध किया था वह अविवाहित था। फलत : उनसे उम्र से बड़े ब्राह्मण राजा ने अपनी कन्या उन्हें सौंपते हुए कहा कि "मैं इसके साथ आप का विवाह सम्पन्न करना चाहता हूँ। मैं अपना 'पाण्डये' आस्पद और यज्ञोपवीत दोनों को ही अग्नि के सामने उन्हें साक्षी मानकर आपको सौपूँगा और अपनी कन्या का विवाह आपके साथ सम्पन्न करूँगा।" युवक राजा ने इसे स्वीकार कर लिया। तब से अब तक उस परिवार के लोग पाण्डेय आस्पद को लिखते आए हैं। पर इन्हें मुगल शासनकाल में 'राय' की उपाधि भी सौंपी गई थी। सो हरिवंशराय बच्चन के परिवार में उनके पिता के जमाने से ही 'पाण्डेय' को हटाकर 'राय' उपाधि को ग्रहण कर लिया गया। पहला खंड उनकी एक प्रसिद्ध कविता के शीर्षक पर आधारित है। आत्मकथा का सबसे बड़ा गुण यह होता है कि जीवन में लेखक के द्वारा जो गलत या अनैतिक कर्म भी संपादित होते हैं, उनको वह स्वीकार कर लेता है। अपनी आत्मकथा में बच्चन ने सहज रूप में यह स्वीकार कर लिया है कि उनका एक मित्रा था, जिसकी पत्नी बहुत सुन्दर थी। उसके घर आते-जाते उन्हें उससे प्यार हो गया और वह भी इनके प्यार में डूब गई। बाद में इस अनैतिकता पर मन में उठे ग्लानि-भाव को भी उन्होंने स्वीकार कर लिया है।

इसी आत्मकथा में उन्होंने अपनी पहली पत्नी श्यामा का उल्लेख किया है। बच्चन को क्षय-रोग हो गया था। उस जमाने में क्षय-रोग का उपचार बहुत कठिन था। पर श्यामा की सेवा और परिचर्चा और दवा ने उन्हें पूरी तरह स्वस्थ कर दिया। पर श्यामा स्वयं क्षय-रोग से ग्रस्त हो गई और उसे उतनी परिचर्चा और सेवा सुलभ नहीं होने के कारण उसका असामयिक निधन हो गया। बच्चन उस वियोग-पीड़ा से एक लम्बी अवधि तक दग्ध रहे। प्रफुल्ल चन्द्र ओझा 'मुक्त' ने श्यामा का और उसके निधन के पश्चात् बच्चन के दुःख का उल्लेख किया है। उनके जीवन में घोर निराशा घर कर गई थी। बाद में बरेली कॉलेज की कवि-गोष्ठियों में आमंत्रित होने के क्रम में इनका परिचय वहाँ की एक प्रोफेसर ज्ञान प्रकाश जौहरी से हुआ, जो अंग्रेजी विषय के प्रोफेसर थे। बच्चन उन दिनों किसी स्कूल में हिन्दी-अध्यापक के पद पर काम कर रहे थे। पर इनकी कविताओं से इन्हें इतनी प्रसिद्धि मिली कि इन्हें बहुत से उच्चपदस्थ लोगों का प्यार और सम्मान प्राप्त हुआ। बेरली के इनके प्रोफेसर-मित्र विवाहित थे। उनकी पत्नी प्रेमा थी, जो इलाहाबाद में पीएच.डी कर रही थी। पर अपने वैवाहिक जीवन के बावजूद वह प्रो. बहुत अवसादग्रस्त रहा करते थे। विधुर बच्चन के जीवन की अवसाद-ग्रस्तता और करुणा ने उन्हें प्रभावित किया और उन्होंने लाहौर में मनोविज्ञान पढ़ा रही तेजी सूरी को अपने घर बरेली बुलाया। उसी अवसर पर बच्चन भी बुलाए गए। तेजी ने बच्चन की कविताएं सुनी और कुछ ऐसा हुआ कि एक-दूसरे से विदा लेते समय तेजी ने उन्हें आश्वस्त कर दिया कि हमारा जो परिचय और मिलन यहाँ हुआ है, उसे भविष्य में अब मृत्यु के अतिरिक्त और कोई नहीं तोड़ सकता। बाद में इसी तेजी सूरी के साथ बच्चन का विवाहोत्सव सम्पन्न हुआ और दोनों पति-पत्नी बन गए। बच्चन ने अपना नया दाम्पत्य-जीवन आरंभ किया, अपनी गृहस्थी बसाई। अपने दूसरे वैवाहिक जीवन में प्रवेश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने के लिए उन्होंने अपनी कविताओं में कई तर्क भी उपस्थित किए। चिड़िया बार-बार घोंसला बनाती है। तूफान और आँधियों में उसके घोंसले के तिनके-तिनके उड़ जाते हैं। पर वह हार नहीं मानती। फिर से अपने घोंसले के रूप में अपने आश्रय-स्थल का निर्माण कर लेती है। वस्तु-जगत का पर्यवेक्षण आत्मजगत की संवेदनाओं को सम्पुष्ट करता है। इसी की अभिव्यक्ति 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर जैसी कविता में हुई है। इसी तरह का तर्क उन्होंने अपनी एक और कविता 'है अंधेरी रात, तो दीवा जलाना क्या मना है?' में प्रस्तुत किया है। इस तरह बच्चन के दूसरे दाम्पत्य और गृहस्थ जीवन का आरंभ हुआ, जो खूब फला-फूला और विकसित हुआ।

बच्चन जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रवक्ता (Lecturer) बने। साथ ही वे विश्वविद्यालय के NCC ऑफिसर भी बने। अपने इस जीवन-तथ्य को उन्होंने अपनी एक कविता-पंक्ति में स्वीकार किया है- "मैं कलम और बन्दूक चलाता हूँ दोनों।" इलाहाबाद विश्वविद्यालय में तब डा. अमरनाथ झा कुलपति थे। उन्हीं के समय बच्चन जी येट्स (Yeats) की कविताओं पर पीएच.डी. शोधकार्य करने के लिए लंदन गए। तब तक बच्चन की गृहस्थी बस चुकी थी। अमिताभ और अजिताभ दोनों का जन्म ही चुका था। उन्हें अपनी पत्नी तेजी, अमिताभ और अजिताभ-तीनों को छोड़कर विदेश जाना पड़ा। लौट कर आने के बाद वे भारत सरकार की सेवा में हिन्दी परामर्शदाता पदाधिकारी के रूप मे नियुक्त हो गए और सीधे विदेश मंत्रालय में पदस्थापित हुए।

बच्चन का हस्ताक्षर मुझे सदैव लुभाता रहा। उसमें एक शैलीपरक आकर्षण था। वह केवल बच्चन लिखा करते थे। पढ़ने वाले को ऐसा लग सकता था कि बच्चन ने 'G' और '00' लिखा है और Good शब्द के अंतिम वर्ण D की रेखा को उपर की ओर नहीं उठाकर नीचे की ओर गिरा दिया है। इस हस्ताक्षर में पहला 'H' 'ब' बन जाता था और दोनों '00' हिन्दी के अर्द्ध 'च' और पूर्ण 'च' का आभास देने लगते थे और अंतिम वर्ण 'न' बन जाता था। बच्चन जी अपने नाम आए किसी भी पत्र का उत्तर अवश्य दिया करते थे। हिन्दी साहित्य में ऐसे अनेक लोग हैं, जिनके पास बच्चन के पत्रों का संग्रह प्राप्त होता है। विहार के गोड्डा कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता रहे स्व. श्याम सुन्दर घोष ने बच्चन के काव्य पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। उनके यहाँ बच्चन जी के पत्रों का संग्रह मिलता है।

एक जमाने में बरेली शहर के मित्रों ने उनसे बार-बार आग्रह किया था कि अवकाश ग्रहण करने के बाद वह बरेली मे ही आ बसें। पर ऐसा हो नहीं पाया। बच्चन ने अपना आवास दिल्ली में बनाया और वहीं रहने लगे बाद में अधिक उम्रदराज होने पर वह अपने बड़े पुत्र अमिताभ बच्चन के यहाँ मुंबई में रहने चले गए। उनका छोटा पुत्र अजिताभ स्वीट्जरलैंड का उद्यमी बन चुका था। बच्चन जी को लम्बी उम्र मिली। पर उनके अंतिम समय तक उनका जीवन सर्जनात्मक रूप में सक्रिय नहीं रह पाया। दिनकर का निधन जहाँ 66 वर्षो की उम्र में हुआ था वहाँ बच्चन को 96 वर्षो का जीवन मिला। उनके अंतिम वर्षों में उनके मुखमण्डल पर बहुत सारी ट्यूमर की तरह की सख्त मांसपेशियाँ आ गई थीं, जिससे उनका मुखमण्डल जितना आकर्षक और प्रभावी था उतना ही वह कुरूप बन गया था। यह कोई ऐसा असाध्य रोग था, जिससे उनको मुक्ति नहीं मिल पाई। पर उन्हें अपने बड़े बेटे का अनन्य प्यार और सम्मान मिला था जो विरले पिता को नसीब हो पाता है। इसके विपरीत दिनकर और उनके बड़े पुत्र का सम्बन्ध बराबर कोपपरक और वैमनस्यपूर्ण बना रहा, जिससे आहत होने के कारण उनके बड़े पुत्र का निधन भी दिनकर के जीवन में ही हुआ। एक बार पिता के घर में अमिताभ जया को लेकर रात में आ गए थे और रात भर जया उनके ही घर में रही। इस पर बच्चन ने अमिताभ से कहा था-तुमने पराई पुत्री को रात भर अपने घर में रखा है। इसलिए तुम्हें इसके साथ विवाह करना होगा और अमिताभ ने पिता की बात मानकर जया के साथ विवाह कर लिया था। माना यही जाता है कि इस वैवाहिक संबंध को अमिताभ ने पिता के आदेश के कारण ही चरितार्थता दी, जिससे लोकमत में जया को रात में अपने घर में रखने के कारण कोई प्रवाद उत्पन्न न हो सके।

हिन्दी काव्यधारा में बच्चन को 'हालावाद' के प्रवर्तक के रूप में देखा जाता है। पर बच्चन ने अपनी आत्मकथा में स्वीकार किया है कि दोनों पुत्रों के गंभीर ढंग से अस्वस्थ हो जाने और उनकी निरोगिता की कामना की सार्थकता के कारण उन्होंने परमात्मा-प्रभु के सामने यह संकल्प किया था कि वह कभी सुरापान नहीं करेंगे और इस संकल्प का उन्होंने आजीवन निर्वाह भी किया।

बच्चन के परवर्ती जीवन में नैतिक दृष्टि का आग्रह बना रहा। जो भूलें उनसे आरंभिक जीवन में हुई थीं उन्होंने उन्हें फिर नहीं दोहराया। बच्चन की मधुशाला पर फारसी शायर उमर खैयाम की रुबाइयों का प्रभाव माना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाता है। मैथिलीशरण गुप्त ने इन रुबाइयों का हिन्दी में अनुवाद किया है। यदि उनसे मिलाकर देखें तो बच्चन की मधुशाला में उनकी मौलिकता के दर्शन होते हैं। हिन्दी काव्यधारा में छायावादोत्तर काल के जिन दो कवियों को उसका प्रतिनिधि कवि माना जा सकता है, बच्चन उनमें से एक हैं। उनके काव्य में उनके प्रेम और उनकी सौन्दर्य-दृष्टि के अतिरिक्त श्रम का भी गान प्राप्त होता है। बच्चन एक श्रेष्ठ अनुवादक भी रहे हैं। शेक्सपियर की नाट्यकृतियों के उन्होंने सुन्दर अनुवाद किए हैं, जो रांगेय राघव के द्वारा किए गए अनुवादों से श्रेष्ठ हैं। येट्स की कुछ कविताओं के भी उनके द्वारा किये गये अनुवाद बहुत सुन्दर बन पड़े हैं। येट्स की कविता When you are old? का उन्होंने बहुत सुन्दर सर्जनात्मक अनुवाद किया है, ज़ो पाठक के मन पर मूल की तरह ही अपनी छाप छोड़ता है। बच्चन की आरंभिक कविता का सबसे बड़ा गुण है उसकी गेयता और उनके स्वरकंठ के कारण श्रोताओं में उनकी कविताओं की लोकप्रियता। इस अर्थ में बच्चन आधुनिक हिन्दी काव्यधारा के अप्रतिम और अद्वितीय कवि थे उनकी दूसरी बड़ी विशेषता उनका विषय वैविध्य, शिल्प-वैविध्य और अपने कवि-कर्म तथा अपनी कविताओं के विकास क्रम को रुग्न, आत्मघाती, रूदनशील, करुण (Morbid) मनोवृत्ति से आशा, उत्साह, कर्म और आह्लाद की ओर मोड़ना और जीवन्त, प्राणमय करना रहा है।

> ''उस देश के विनाश को कोई नहीं रोक सकता जिस देश की सरकार में बैठे लोग ही अपनी जनता को सिर्फ़ वोट की खातिर डराना शुरु कर दें''।
>
> अल्बर्ट आइंस्टीन (1879 - 1955)

हिन्दी प्रचार प्रसार सोसायटी इसके (हिन्दी) के विरुद्ध नियोजित ढंग से हो रही साजिशों के खिलाफ प्रयासरत है। इस महती कार्य में सहयोग दें।

सोसायटी के सदस्य बनें और एक वर्ष तक इसकी त्रैमासिक पत्रिका 'बरोह' मुफ्त प्राप्त करें।

हृदिक बधाई

इस वर्ष चित्रा मुद्गल जी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

हिन्दी प्रचार प्रसार सोसायटी और बरोह परिवार की ओर से हृदिक बधाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आठवें दशक के बाद हिंदी कथासाहित्य, दस्तकार का अट्टहास, लद्दाख के सांस्कृतिक गौरव (प्रकाशनाधीन) के मालिक डॉ. मिश्र के सौ से अधिक आलेख विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। लद्दाख अंचल की ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विशिष्टताओं को रेखांकित करने वाले पांच वृत चित्रों की पटकथाएं लेह दूरदर्शन से प्रसारित हो चुकी है।

प्राध्यापक, हिंदी
केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान (मानद विश्वविद्यालय)
लेहलदाख 194101 (जम्मू व कश्मीर)
संपर्क 09452 031190 / 09419 973362 rahul.mishra378@gmail.com
http://bundela-desa-ke.blogspot.com

डॉ. राहुल मिश्र

बलखंग चौक से दीवानों की गली तक

आज जाने क्यों धरती के उस निहायत छोटे से टुकड़े पर लिखने के लिए कलम उठ गई। धरती का वह टुकड़ा जो इतना छोटा-सा है कि कुल जमा दो सवा दो सौ कदमों से नापा जा सकता है। अगर कोई यह समझ बैठे, कि इन दो सौ सवा दो सौ कदमों को वह ज्यादा से ज्यादा एक घंटे में तय कर लेगा, तो ऐसा भी संभव नहीं है। यह सफ़र सैकड़ों वर्षों के इस सफ़र को सैकड़ों बार तय किया होगा, मगर आज तक यह सफ़र पूरा हो पाया, कहना कठिन है। शायद इसी कारण बलखंग चौक से दीवानों की गली तक के दो सौ कदमों के सफ़र को शब्दों में नापने की प्रबल इच्छा मुखर हो उठी, फिर पन्नों में बिखर पड़ी।

मध्य एशिया के चौराहे पर स्थित वह बड़ा बाजार, जो आकार में बहुत छोटा है, उसे अगर अपनी आत्मीय निकटता के कारण हमारे जैसे सिरफिरे लोग दुनिया की छत पर स्थित सबसे पुराना बाजार भी कह दें, तो कोई अचरज नहीं होना चाहिए। इतना ही नहीं, यह पुराना बाजार केवल उत्पादों या वस्तुओं के व्यापार के लिए ही नहीं, वरन् संस्कृतियों, तहजीबों, जीवन जीने के रंगढंग की अदला-बदली के लिए भी अपनी अनूठी पहचान रखता है, फलतः इसे बाजार की परंपरागत परिभाषा तोड़ने वाला अनूठा बाजार भी कहा जा सकता है। अगर इस अनूठे अतुलनीय बाजार को समूचे लदाख की जीवन धारा कह दिया जाए तो शायद शब्दों की बेमानी हो जाएगी। लदाख अंचल का धड़कता हुआ दिल अगर है, तो वह लेह बाजार ही है। इसीलिए सुदूर अतीत से लगाकर आंखों के सामने नजर आते वर्तमान तक लदाख अंचल की हर हरारत को लेह बाजार अपने में गिनता है, गुनता है, बुनता है। इसीलिए बलखंग चौक से लगाकर दीवानों की गली तक का एक फेरा लगाए बिना किसी भी पर्यटक की, किसी भी यात्री की लदाख यात्रा पूरी नहीं मानी जा सकती। इतना ही नहीं, लेह के आस पास के गांवों में रहने वाला कोई व्यक्ति अगर लेह आया है, तो लेह बाजार का एक फेरा लगाए बिना उसकी यात्रा भी पूर्णता को प्राप्त नहीं होती। लब्बोलुबाब यह, कि बड़े-बड़े राजाओं-वजीरों से लगाकर जेब में हाथ डाले फोकट टहलने वाले अदने से लोगों तक के लिए धरती का यह सुंदर-सा, छोटा-सा टुकड़ा आकर्षण का केंद्र रहा है। बलखंग चौक कहने के लिए तो चौक है, मगर चौक जैसा कुछ नजर आता नहीं है। यहाँ दो तिराहों का मिलन है, और चारों दिशाओं की ओर जाते रास्तों को केवल महसूस किया जा सकता है। वैसे बलखंग चौक में एक बात और भी महसूस होती है, जो इस चौक के अपने नाम के साथ जुड़ी पहचान को खूबसूरत तरीके से सामने लाती है। बलखंग चौक से पूरब की ओर थोड़ा नीचे उतरने पर दाहिनी ओर एक संकरी सी गली अंदर जाती दिखती है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो एकदम से बाजार की शकल अख्तियार कर लेती है। पुराने ढर्रे की छोटी-बड़ी कई दुकानें, जिनमें बर्तनों के साथ ही फटिंग (सूखी खूबानियां), छुरपे (याक के दूध का सूखा पनीर), पाबू (चमड़े के देशी जूते) जैसी लदाखी वस्तुएँ बिकती दिखाई देती हैं। इनके साथ ही देशी होटल, या कहें कि 'चाय पर चर्चा' और अड्डेबाजी के लिए मुफीद कुछ दुकानें भी है, जो सुबह से शाम तक गुलज़ार रहती हैं। इनमें थुक्पा (लदाखी नमकीन सेवईयां), पाबा (जौ के आटे में खड़ी मसूर दाल मिलाकर बनाया गया लदाखी व्यंजन), मोमोस, सोलज़ा (मीठी दूध वाली चाय), गुरगुर (नमकीन मक्खन वाली चाय), तागी (नानवाई की तंदूरी रोटियां) और समोसा जैसे व्यंजनों की उपलब्धता रहती है। महँगे होटलों जैसी परंपरा यहाँ पर नहीं मिलती। एक गुरगुर चाय के साथ आप घंटों बैठकर यहां गप्पें मार सकते है। ये दुकानें नुबरा, पुरिग और शम आदि इलाकों के बल्तियों की हैं। लदाख की प्रजातिगत व्यवस्था में मोन, दरद और बल्ती प्रजातियों का प्रभुत्व रहा है। आठवीं शताब्दी के बाद तिब्बत की तरफ से आने वाले भोट प्रजाति का वर्चस्व स्थापित होने के बाद दरद और मोन प्रजातियां हाशिये पर सिमटती गई। बल्ती समुदाय की स्थिति अपेक्षाकृत सुदृढ़ रही।

बल्ती समुदाय को आर्यो की भारतीय-ईरानी शाखा और मंगोलों की मिश्रित प्रजाति का कहा जाना उचित प्रतीत नहीं होता है। वैसे तो रेशम मार्ग में होने वाले व्यापार के साथ बल्तियों का वजूद बलखंग में स्थापित हो गया होगा, मगर लदाख में हुई राजनीतिक उथल-पुथल ने बड़े रोचक और रोमांचकारी तरीके से बल्तिस्तान के साथ लदाख को जोड़ दिया। यह घटना है, सन् 1600 ई. के आस पास की, जब बल्तिस्तान में खर्चे के सुलतान और चिगतन के सुलतान के बीच वर्चस्व की जंग छिड़ी हुई थी : उसी समय लदाख के शासक राजा जमयड नमग्यल अपने राजनीतिक लाभ के लिए दोनों के बीच कूद पड़े। अंत में हुआ यह, कि सारे बल्ती शासक इकट्ठे हो गए और स्करदों के बल्ती सुल्तान अली मीर के नेतृत्व में राजा जमयंग नमग्यल को फोतोला दर्रे के पास ही घेर लिया। राजा जमयड नमग्यल को सुल्तान अली मीर ने कैद कर लिया और बल्ती सेना ने लदाख की अनेक धार्मिक सांस्कृतिक धरोहरों को तहस-नहस कर डाला। बाद में सुलतान अली मीर ने राजा जमयड नमग्यल के सामने शर्त रखी, कि अगर वे इस्लाम कबूल कर लें, सुलतान की पुत्री ग्यल खातून से शादी कर लें और उससे उत्पन्न पहली संतान को राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दें, तो उन्हें आजाद कर दिया जाएगा। राजा ने अपनी जान बचाने के लिए इन शर्तो को स्वीकार कर लिया। कहा जा सकता है, कि ये शर्ते निहायत अपमानजनक थीं, किंतु रानी ग्यल खातून की सूझबूझ और महासिद्ध स्तगछ्ज़ रसपा के प्रभाव के कारण यह शर्त आने वाले समय में लदाख के लिए बदलाव की बयांर लेकर आई।

बल्ती राज परिवार से आई रानी ग्यल खातून अत्यंत कलाप्रेमी थी। इस कारण उसके साथ कई बल्ती संगीतकार, चित्रकार आदि भी लदाख पहुँचे। राजा जमयंग नमग्यल के वंशज और रानी ग्यल खातून के पुत्र राजा सेडगे ही राजकीय कार्यो को संचालित करती थीं। ऐसा माना जा सकता हैं कि इस समय बलखंग के आसपास बल्ती व्यापारियों और कलाकारों की बस्ती विधिवत स्थापित हुई होगी। आवास को लदाखी भाषा में 'खंग' कहा जाता है। इस तरह बल्तियों के आवास के कारण कहलाएं बलखंग से जुड़ कर बलखंग चौक प्रसिद्ध हुआ होगा, ऐसा कहा जा सकता है। बलखंग चौक के दूसरी ओर बने एक बगीचेनुमा खाली मैदान की दीवार के किनारे-किनारे तमाम विक्रेता अपनी परंपरागत वेशभूषा धारण किए हुए फटिंग, काजू, बादाम और देसी मक्खन आदि बेचते दिखाई देते है। इनमें से अधिकांश डोगपा समुदाय से ताल्लुक रखने वाले हैं। डोगपा समुदाय को आर्य प्रजाति के भारतीय-ईरानी समूह का माना जाता है। इन्हें दाहुन के दरद के रूप में जाना जाता है। 'दरद' के रूप में इन्हें पहचानना भी अपने आप में एक रोमांचकारी कल्पना है। श्री राम कथावाचक कैलास के अधिपति शिवजी के रूप-सौंदर्य का वर्णन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते हुए गोस्वामी तुलसीदास श्रीरामचरितमानस में लिखते हैं :

कुंद इंदु दर गौर सरीरा। भुज प्रलंब परिधन मुनि चीरा।। (०१/१०६/०६)

वे शिवजी की देह को दर, अर्थात् शंख के समान वर्ण वाला बताते हैं। संभव है, कि दरकिनार के दरदों के लिए यह पहचान उनकी 'दर देह', उनके गौरवर्ण, सुगठित-स्वस्थ शरीर, शंख समान सुंदर ग्रीवा आदि के कारण मिली हो। भले ही यह कल्पना मात्र हों, किंतु इस कल्पना के माध्यम से पुरातन सांस्कृतिक सूत्रों को जोड़ने वाले ये दरद बलखंग चौक में अपनी उपस्थिति से एक सुंदर-सुखद अनुभूति को सहसा उपजा देते है। डोगपा समुदाय को आभूषणों और पुष्पों से बहुत प्रेम है, ऐसा सहज ही दिखाई दे जाता है। स्थानीय 'टूरस्टि गाईड' इनका परिचय भी बड़े रोचक तरीके से 'गमला पार्टी' के रूप में कराते हैं। बड़ी लंबी लटकनों वाले आभूषणों के साथ ही रंग-बिरंगी टोपी में कई तरह के फूलों को सजाए डोगपा समुदाय के लोग रास्ते चलते किसी भी व्यक्ति को सहज ही आकर्षित कर लेते हैं। इनके चेहरे पर खिली मुसकान, सर्दी के दिनों में रूखी-सूखी धरती पर सुगंधित पुष्पों की अनुभूति को साझा करती गमलेनुमा टोपी और इनकी सहजता-सरलता हर समय देखी जा सकती है। आप इनके साथ खड़े होकर आसानी से फोटो खिंचवा सकते हैं। किसी 'गमला पार्टी' के दुकान के साथ खड़े होकर पश्चिम की ओर देखें, तो सामने जामा मस्जिद अह्ली सुन्नती दिखाई देती है। कहा जाता है कि सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लदाख में तिब्बत की सेना ने हमला कर दिया था। उस समय मुगल सेना ने तिब्बती आक्रांताओं का डटकर मुकाबला किया था और लदाख को बचाया था। इस घटना के बाद दिल्ली के मुगल दरबार की शर्तों के अधीन लेह के मुख्य बाजार में इस जामा मसजिद का निर्माण राजा देलेग नमग्यल के शासनकाल में हुआ। वैसे मुगल दरबार का प्रत्यक्ष और बड़ा हस्तक्षेप लदाख अंचल में नहीं रहा, किंतु मसजिद के माध्यम से मुगल साम्राज्य की यादें लदाख अंचल के साथ जुड़ी हुई है।

बलखंग चौक के जामा मसजिद तक बिखरी रंग-बिरंगी रौशनियों और चहल-पहल की गवाहियों को दर्ज करती लेह बाजार की मुख्य सड़क है। अतीत से वर्तमान तक अनेक बदलाव इसने देखे हैं। आज का लेह बाजार जितनी गगनचुंबी इमारतों और रंग-बिरंगी रौशनियों से जगमग करता दिखाई देता है, उतना इक्कीसवीं सदी के शुरुआती दशक से पहले नहीं था। इसका मतलब यह भी नहीं, कि लेह बाजार में रौनक नहीं होती थी। अंतर केवल इतना था, कि उस समय पक्की दुकानें गिनी-चुनी ही थीं, और दो-तीन मंजिला दुकानें तो थी हीं नहीं। इसके विपरीत आज पुरानी आदा वाली कच्ची ईंटों से बनी दुकानें एक या दो ही बची हैं, जो गुजरे अतीत की थोड़ी-सी झलक दिखा जाती हैं। लेह बाजार के सौंदर्यीकरण ने एक नई मादकता को अजीबो-गरीब ढंग से बिखेर दिया है। लेह बाजार में घुसते ही एक ऊँचा सा मंचनुमा प्लेटफार्म बन गया है, जिसका असल काम तो वाहनों के प्रवेश को रोकना, मगर यह कभी-कभी दूसरी, भूमिका भी निभा लेता है। 'म्यूजिकल कंसर्ट' और 'ओपन एयर डांस शो' जैसे आयातित आयोजनों के लिए यह एक अच्छा मंच बन गया है। लेह घूमने आने वालों के लिए ऐसे आयोजन रोचक हो जाते हैं।

यह बदलाव भले ही इक्कीसवीं सदी के आधुनिक लेह बाजार को पेश करता हो, मगर बहुत कुछ अब भी नहीं बदला है। आसपास के गांवों से ताजी हरी सब्जियां लेकर आने वाली लदाखी महिलाओं की 'फुटपाथिया दुकानें' दोपहर के चढ़ते ही सज जाती हैं। शायद घर के सारे कामकाज निबटा कर, खेतों से सब्जियां निकाल कर ये महिलाएं पूरी मुस्तैदी और तरो-ताजगी के साथ उपस्थित होती होंगी। भली बात यह है कि लदाख में अब भी पुराने देशी बीज उपलब्ध हैं, इस कारण देशी टमाटर, महकती धनिया, मेथी, मिठास से भरी मटर और लदाख की अपनी पहचान में शामिल ताजी खूबानियों से सजी दुकानें अपनी तरफ बरबस ही आकृष्ट कर लेती हैं। [illegible] दुकानदार को 'आमाले जूले' अभिवादन करके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आप तसल्ली से बैठकर खरीददारी कर सकते हैं। थोड़ा बहुत हंसी-मजाक इस खरीददारी को रोचक बना देता है। अपने खेत का ही उत्पाद है, सो 'आमाले' आप को एक -दो खूबानियाँ या मटर की कुछ फलियाँ यूँ ही खाने के लिए दे सकती हैं। कम से कम इन 'फुटपाथिया दुकानों' में व्यावसायिक प्रतिबद्धता की जटिलता देखने को नहीं मिलेगी। वैसे पहाड़ी संस्कृति ऐसी मानी जाती है, जहाँ महिलाएँ ही सबसे ज्यादा खपती हैं, और अपने बूते परिवार की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की ताकत रखती हैं। इससे कहीं आगे मगर महिला सशक्तिकरण के सच्चे-सटीक उदाहरण को खोजना हो, तो इसके लिए लदाख की महिलाओं से बेहतर उदाहरण मिलना कठिन ही लगता है।

बदलाव तो लेह बाजार में स्थित हिंदू धर्मशाला की इमारत में भी देखने को नहीं मिलता है। आसपास की गगनचुंबी इमारतों और आलीशान दुकानों के बीच अपने कच्चे.और पुराने ढर्रे के अटारीनुमा भवन के साथ आज भी कायम हिंदू धर्मशाला गौरवपूर्ण अतीत की साक्ष्य प्रतीत होती है। लेह से यारकंद तक का रास्ता रेशम मार्ग या सिल्क रूट का सहायक मार्ग माना जाता था। लेह में होशियारपुर और कुल्लू आदि के व्यापारी भी बड़ी संख्या में आते थे। व्यापारियों के लिए लेह में कई सराय और धर्मशालाएँ रही होंगी, मगर आज लेह में धर्मशाला के नाम पर यही एक धर्मशाला दिखाई पड़ती है। हिंदू धर्मशाला की पुरातनता का बोध इसमें लगे टीन के बोर्ड से भी हो जाता है। बोर्ड के मुताबिक धर्मशाला का अस्तित्व 23 भाद्रों, संवत् 1994 से है। हो सकता है, कि बोर्ड जीर्णोद्धार के बाद लगाया गया हो। अगर बोर्ड में उल्लिखित तिथि को ही आधार मान लें, तो अस्सी हिमपात और लदाखी बसंत हिंदू धर्मशाला ने भी देखे हैं। डोगरा शासकों के शासन को, रेशम मार्ग में होने वाली व्यापारिक गतिविधियों के अवसान को, देश की आजादी को, और फिर आज की आधुनिकता में बदलते अपने आस-पास के परिवेश को, परिस्थितियों को हिंदू धर्मशाला ने देखा है, सुना है। यह अलग बात है, कि आज इसकी देखरेख करने वाले लोगों में से बहुत कम ही इसके गौरवपूर्ण अतीत पर कुछ बता पाएँ। प्रसिद्ध घुमक्कड़शास्त्री और हिमालयी धर्म-संस्कृति-अध्यात्म दर्शन को यत्नपूर्वक खोजकर सामने लाने वाले महापंडित राहुल सांकृत्यायन अपनी लदाख यात्राओं के दौरान इसी हिंदू धर्मशाला में रुका करते थे, ऐसी मान्यता है। इसी धर्मशाला के किसी एकांत कक्ष में बैठकर उन्होंने लदाख के बारे में अपने अनुभवों को लिपिबद्ध किया होगा। अगर सच में ऐसा है, तो हिंदू धर्मशाला घुमक्कड़ी में रुचि रखने वाले लोगों के लिए तीर्थस्थान से कम नहीं।

वैसे एक अद्भुत और अनूठा तीर्थस्थान जामा मसजिद के ठीक पीछे भी है। यह ऐसा तीर्थस्थान है, जहाँ आज से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व ही पर्यावरण संरक्षण और हरियाली के संवर्धन का संदेश दिया गया था, वह भी लदाख के बर्फीले रेगिस्तान में बैठकर। सन् 1517 ई. में गुरु नानक अपनी दूसरी उदासी के दौरान लदाख पधारे थे, और लेह में भी उन्होंने समय बिताया था। ऐसी मान्यता है कि गुरु नानक ने अपनी दातुन को यहाँ पर जमीन में खोंस दिया था, जिसने कालांतर में एक विशाल वृक्ष का रूप ले लिया। उस विशाल वृक्ष को आज भी देखा जा सकता है। गुरु नानक की दातुन के कारण इस स्थान को गुरुद्वारा दातुन साहिब कहा जाता है। लदाख की धरती भले ही रूखी-सूखी हो, किंतु यहाँ पर क़लम जैसे तनों को धरती में रोप देने पर वे भरे-पूरे वृक्ष का रूप ले लेते हैं। इस विशिष्टता को देखते हुए गुरुद्वारा दातुन साहिब के प्रति आस्था बलवती हो जाती है। अगर देखा जाए, जो गुरुद्वारा दातुन साहिब अन्य गुरुद्वारों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ गुरु नानक की उपस्थिति को अनुभूत किया जा सकता है, विशालकाय वृक्ष के माध्यम से।

गुरुद्वारा दातुन साहिब के आसपास नानवाई की कई दुकाने हैं, जहाँ तंदूरी रोटी बनती है। लदाख के अतिरिक्त देशभर में इस तरह नानवाई की दुकानें मिलना दुर्लभ है, क्योंकि इनका संबंध रेशम मार्ग के व्यापारियों से रहा है। लदाखी में 'तागी' के नाम से अपनी पहचान रखने वाली और आज के हिसाब से तंदूरी रोटी का आगमन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यारकंद से यहाँ पर हुआ। रेशम मार्ग के व्यापारी अपनी यात्रा के लिए इन्हीं रोटियों को ले जाते थे। इस तरह नानवाई का काम भी यहाँ एक व्यवसाय के रूप में विकसित हो गया। रेशम मार्ग बंद हो जाने के बाद ये यहीं पर बस गए। यहीं पर आज का 'सेंट्रल एशियन म्यूज़ियम' भी है, जो रेशम मार्ग के चलन के समय इबातगाह और शरणगाह हुआ करता था। आजादी के बाद के वर्षों में कुछ संस्कृति-प्रेमी जागरूक नागरकिों ने इसे संग्रहालय का रूप दे दिया, जिसमें रेशम मार्ग से जुड़ी अनेक स्मृतियों को संचित करके रखा गया है। ऐसा कहा जाता है, कि आज के 'सेंट्रल एशियन म्यूजियम' के आसपास कहीं डोगरा शासकों की कुल-देवी का छोटा -सा मंदिर भी हुआ करता था, जिसे जोरावर सिंह ने बनवाया था।

इस कथा-यात्रा के घुमावदार मोड़ की तरह जामा मसजिद से दाहिनी ओर, और एक बार फिर दाहिनी ओर मुड़कर मोरावियन मिशन चर्च और स्कूल तक पहुँचा जा सकता है। वैसे तो जामा मसजिद के पीछे नानवाई की दुकानों के बीच से होकर भी एक सँकरी-सी गली मोरावियन चर्च और स्कूल तक पहुँचती है। ऐसा माना जाता है कि लदाख में ईसाई मिशनरियों का आगमन 800 ई. के आस-पास ही हो गया था, किंतु यहाँ की विषम जलवायु और निरंतर प्रतिकूलता के कारण मिशनरी यहाँ प्रभावहीन ही रहे। समूचे भारतवर्ष में ब्रिटिश शासन स्थापित हो जाने के बाद प्रोटेस्टेंट ईसाई मिशनरियों का एक दल 'हिमालयी मिशन' की महत्वाकांक्षी योजना बनाकर लदाख पहुँचा था। उस समय कश्मीर के महाराजा ने इस मिशन को लदाख में चलाने की अनुमति नहीं दी, फलत: 'मिशनरी' हिमाचल प्रदेश के लाहुल स्पीति क्षेत्र के मुख्यालय केलड में बस गए और वहीं से उन्होंने लदाखी लोगों पर अपना प्रभाव जमाना शुरु कर दिया। बाद में ब्रिटिश हुक्मरानों के अनुरोध के बाद महाराजा कश्मीर ने अनुमति प्रदान की और सन् 1885 में मोरावियन मिशन की स्थापना लदाख में हुई। आज के मोरावियन मिशन चर्च व स्कूल का बड़ा योगदान लदाख में शिक्षा, विशेषकर आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में रहा है।

मोरावियन स्कूल के आसपास का इलाका चड्स्पा के नाम से जाना जाता है। अगर बलखंग चौक बल्तियों के नाम से आबाद है, तो चड्स्पा भी चड्थड के लोगों के कारण अपनी पहचान कायम किए हुए हैं। वैसे 'चड्' का अर्थ होता है उत्तर। इस तरह उत्तर की दिशा से आने वाले लोगों को भी चड्स्पा कहा जाता है। चड्सपा, यानि चड्थड के निवासी घुमंतू होते थे, इस कारण उनकी आबादी यहाँ पर नहीं दिखाई देती है। चड्थड के व्यापारी भी लेह बाजार में आते थे। ये मुख्य रूप से नमक और पशमीना, भेड़ की ऊन आदि का व्यापार किया करते थे। चड्थड की छोकर और छोरुल झीलों में बनाए जाने वाले नमक का व्यापार करने वाले चड्स्पा व्यापारियों के तंबुओं से बनने वाली अस्थायी बस्तियाँ शायद रेशम मार्ग के बंद होने के बाद उजड़ गई होंगी, मगर नाम आज भी जिंदा है। आज के चड्स्पा में बिखरती पर्यटकों की रौनक को देखकर इसके सुनहरे अतीत को कल्पना में सँजोया जा सकता है। बलखंग चौक से चलते हुए दीवानों की गली तक का सफर भी यहीं आकर पूरा होता है। देश की आजादी के बाद के वर्षों में लदाख ने बहुत कुछ बदलता हुआ देखा। इस समय तक रेशम मार्ग का व्यापार भी बंद हो चुका था। सीमाएँ खिंच गई थी, जिन्होंने अखंड भारतवर्ष की संततियों को बाँटकर पड़ोसी बना दिया था। जिस समय सारी दुनिया, और विशेषकर भारतीय उपमहाद्वीप तमाम उथल-पुथल और हलचलों में तंग था, उस समय भी चड्स्पा में कैसी रौनक होती थी, उसका बड़ा मोहक वर्णन लदाख में तैनात तत्कालीन सेना-प्रमुख कर्नल पी.एन कौल ने अपनी पुस्तक 'फ्रंटियर कॉलिंग' में किया है।

कर्नल कौल अतीत की स्मृतियों को सँजोते हुए अपनी पुस्तक में बताते हैं कि मोरावियन मिशन स्कूल के बगल में सेना की छावनी होती थी, और छावनी के बगल से एक झरना बहता था। झरना इसलिए विशेष महत्व का था, क्योंकि लेह की आबादी के लिए पीने का पानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपलब्ध कराने वाला इकलौता ठिकाना था। शाम को अपनी-अपनी गगरियाँ लिए पानी भरने की महिलाओं, युवतियों का आगमन यहाँ पर होता था। इसी रंगत और रौनक के कारण कर्नल कौल ने रास्ते को 'लवर्स लेन' नाम दे दिया। अब शायद आप भी समझ ही गए होंगे, कि यहीं वह दीवानों की गली है, जहाँ आज भी अजीब-सी गुलाबी रंगत चढ़ी रहती है।

भारतवर्ष के अनेक गाँवों की अनूठी पहचान उनके पनघट होते हैं। बड़े-बड़े 'कॉफ़ी हाउसेज़' और 'किटी पार्टीज़' जैसी आयातित व्यवस्थाओं से बहुत पहले महिलाओं के लिए पनघट और पुरुषों के लिए अथाईयाँ-चौपालें अपने सुख-दुःखों को बाँटने, कुछ मनोरंजन करने और भविष्य की तमाम कार्य योजनाओं को बनाने का सहज सरल सरस मंच उपलब्ध करा देती थीं। भारतवर्ष के अनेक गाँवों में जीवित-जीवित परंपरा को लेह में देखकर कर्नल कौल इसका जिक्र किए बिना नहीं रह सके, ऐसा सरलता के साथ कहा जा सकता है।

आज दीवानों की गली का वह खूबसूरत झरना सिमट गया है। आसपास उग आए सीमेंट-कंक्रीट के बड़े बड़े होटलों ने यहाँ की नैसर्गिक सुंदरता को सोक लिया है। घरों में चलने वाली 'वाटर सप्लाई' ने पनघट के 'कान्सेप्ट' को पुराना साबित कर दिया है। बदलाव की बयार ने स्वाभाविक सरल और सहज आत्मीय मिलन को व्यावसायिक और बनावटी बना लिया है। सर्दियों की दुपहरी और गर्मियों की साँझ में आज भी 'लवर्स लेन' या दीवानों की गली गुलज़ार होती है, मगर पहले जैसी अब कहाँ?

बलखंग चौक से लगातार दीवानों की गली तक अब सब कुछ बदला-सा दिखाई देता है। लेह बाजार के ऊपर प्रहरी की तरह खड़ा 'लेह पैलेस' अपने निर्माणकर्ता धर्मराज सेङ्गे नमग्यल को आज भी याद करता है। लेह दोसमोछे, यानि लेह का सालाना धर्मानुष्ठान आज भी मनाया जाता है। उस समय की अनूठी घुड़सवारी और घुड़सवारों के स्वागत में लेह बाजार में छङ् (लदाखी सोमरस) लेकर कतारबद्ध खड़ी होने वाली महिलाओं को अपने वीर योद्धाओं का उत्साहवर्धन करते हुए देखने वाला लेह बाजार आज पर्यटकों के स्वागत में सजा दिखाई देता है। बलखंग चौक से दीवानों की गली, यानि पूरब से चलते हुए पश्चिम तक पहुँचते-पहुँचते लगभग दौ सौ कदमों में हम बदलती भौगौलिक स्थितियों, सामाजिक संरचनाओं से ही नहीं गुज़र जाते, वरन् तहजीबों-संस्कृतियों के कई पड़ावों को भी पार कर जाते हैं। कई बार बलखंग की अड्डेबाजी से किसी बड़े और महँगे 'कॉफ़ी हाउस' में भी पहुँच जाते हैं, खुद को आधुनिक दिखाने के फेरे में।

(साभार 'मुक्तिचक्र')

''किसी देश को बर्बाद करना हो तो वहां के लोगों को धर्म के नाम पर आपस में लड़ा दो, देश अपने आप बर्बाद हो जाएगा''।

लियो टॉल्स्टॉय (1828 - 1910)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कृति

डॉ. विनोद तनेजा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूचना

कश्फ़ शोध जर्नल

का दिसम्बर 2018 के लिए केंद्रीय विषय **इल्म और फ़िल्म** है। इसके अंतर्गत भारतीय चल-चित्रों में प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक पक्ष, रीति-रिवाज (हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, अन्य जनजातीय), पौराणिक संदर्भ, धार्मिक मान्यता, संतो नेताओं के जीवन से संबंधित, भारत -विभाजन, स्वातंत्र्योत्तर विशिष्ट घटनाओं से संबंधित, विशिष्ट साहित्यिक रचनाओं पर आधारित, फ़िल्मी पत्रकारिता, सामाजिक समस्या आदि विषयों से सबंधित भारतीय भाषाई फिल्मों से सबंधित शोधालेख मांगे गये थे। यह अंक किन्हीं कारणों से विलम्ब से आ रहा है। यह लेखकों-पाठकों की जानकारी के लिए है। सहयोग बनाए रखें।

विनोद तनेजा

5016, जोशी पुरा, पो. ख़ालसा कॉलेज, अमृतसर143002.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मध्यकालीन साहित्य पर करीब आठ पुस्तकों के रचियता डॉ. विनोद कुमार तनेजा गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर के हिंदी विभाग में अध्यक्ष रहे। सेवानिवृति के बाद उल्लिखित शोध पत्रिका (कश्फ) अर्द्ध वार्षिकी का 2017 से निरंतर संपादन कर रहे हैं।

5016, जोशी पुरा,
सामने खालसा कालेज
अमृतसर, पिन143002

प्रो. विनोद तनेजा

लोक धर्म में वृक्षों संबंधी आस्था

धर्म से अभिप्राय 'जो स्थापित हो' के सन्दर्भ में रीति, विधि या कर्तव्य निकलता है। यह भी मान्यता है कि किसी वस्तु की विधायक आन्तरिक वृति को उसका धर्म कहा जाता है। शास्त्रानुसार ''यतोऽम्युदयनि: श्रेयस सिद्धिः सधर्म :'' इस संदर्भ में जीवन के अभ्युदय का भाव स्पष्ट होता है। धर्म के स्वरूप को मनुस्मृति में स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि इसके द्वारा आत्मिक संतोष की प्राप्ति होती है:

''वेद: स्मृति: सदाचार: स्वस्थ च प्रियमात्मन:।
एतच्वतुर्विध प्राहु: साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।''

इस शास्त्रीय पद्धति में लोकाचार की विशिष्टिता जो जन सामान्य में प्रचलित होती है उसे 'लोक धर्म ' के रूप में मान्यता मिलती है। लोक धर्म शास्त्रीय रूढ़ियों की जकड़न से कुछ मुक्त होता है। यह ऐसे सिद्धांत होते हैं जो लोक कल्याण से प्रेरित होकर व्यवहार में आते हैं ''लोक या जनसमुदाय में धर्म के रूप में प्रचलित विचार, विश्वास या कृत्य जो किसी शास्त्र या सम्प्रदाय से प्रेरित नहीं होते''। इस रूप में लोक से प्रसिद्ध या संबद्ध धारणाएं लोक धर्म के अन्तर्गत आते हैं, इसमें कर्म, ज्ञान और उपासना तीन अवयव जन समाज की स्थिति के लिए उपयोगी मान्य होते हैं। लोक धर्म में वास्तविक शास्त्रोक्त धर्म से भिन्न वे बातें आती हैं जो जन साधारण में प्राय: धर्मरीतिरिवाज के रूप में प्रचलित हैं। इनकी विशिष्टता [illegible] में प्रचलित लोक विश्वासों में विशेष रूप से दिखाई देती है। यह लोक मान्यताएं पीढ़ीदरपीढ़ी सांस्कृतिक प्रथाओं के रूप में जातीय या क्षेत्रीय परम्पराओं के रूप में समाज में प्रचलित रहती हैं।

लोक विश्वास को भले ही आज जीवन में अंधविश्वास या यूढ ग्राह कह कर उनकी सत्यता व सार्थकता पर प्रश्न चिह्न लगाकर देखा जाता है, क्योंकि उनकी सत्यता और स्थिति पर विचार न करते हुए उन्हें परम्परागत रूप में मान्यता दी जाती है। यह लोक विश्वास /मान्यताएं मानव में आत्म सुरक्षा की भावना के कारण देवी शक्ति के प्रति आस्था के रूप में जागृत व समाज में मान्य होती हैं। यह मान्यताएं किसी न किसी रूप में प्रत्येक समाज में युग परिवर्तन के साथ परिवर्तित तो होती हैं पर उनकी जीवन्तता निरंतर बनी रहती है। अपनी जीवन्तता के कारण ऐसे लोक विश्वास लोक मानस में आस्था के रूप में मान्य होते हैं।

ऐसी लोक धर्म मान्यताएं/आस्थाएं प्रकृति के विभिन्न रुपों के साथ विशेकर पर्यावरण से जुड़कर समाज में प्रचलित रहती है। पर्यावरण का परिचारों ओर, आवरण घेरे हुए सेअर्थ निकलता है। ऐसा परिवेश जो किसी जीवधारी के रूप, जीवन और जीविता को प्रभावित करता है। यह ऐसा परिवेश है जो सामाजिकों के जीवन को पूर्णतया प्रभावित करने में सक्षम रहता है। इसी कारण प्रकृति का प्रत्येक पक्ष किसी ने किसी रूप में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

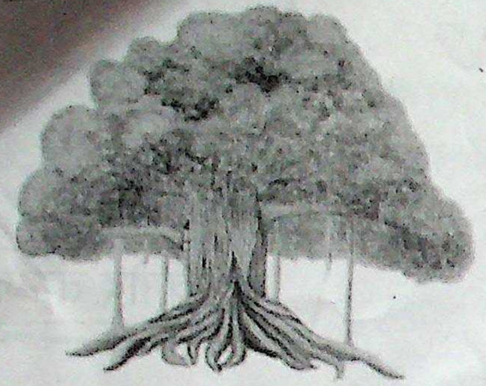

मानवीय चेतना को प्रभावित करता है। आज जब ''पर्यावरण संभालिए जीना हुआ हराम। बढ़ प्रदूषण यूहीं तो, बिगड़ेंगे सब काम।।'' का बोल बाला है। जबकि प्रकृति अपने प्राकृतिक रूप में ऐसा शिक्षण स्थान है जिसे ''व्यवहार जगत में जितना महान् योगदान प्रकृति का होता है, उतना और किसी का नहीं'' के रूप में माना जाता है। यह माना जाता है कि ''जीवन के विभिन्न खट्टे मीठे अनुभवों एवं साथ में घटित होने वाले उतारचढ़ाव के पीछे भी प्रकृति के प्रशिक्षण से संबंधित उच्च उद्देश्य ही निहित होता है, जिसके द्वारा वह जीव के जीवन के विभिन्न आयामों को प्रकाशित करती, उसकी पूर्णता का मार्ग प्रशस्त करती है।, ऐसी प्रकृति के प्रति मानव मन में आस्था भरी मान्यताओं का लोक जीवन में प्रचलन ही लोकधर्म की आदार भूमि बनता है। ऐसी आदार भूमि जिसमें प्रकृति के विविध पृक्ष, पौधे, पुष्प,ऋतुएं, वर्षा, ताप, शीतलता, वायु आदि सभी के प्रति आस्थाएं व मान्यताएं निहित रहती हैं। इन्ही की रक्षा व उन्नति के निमित लोक मानस की आस्थाएं पीढ़ी दर पीढ़ी लोक विश्वासों के रूप में लोकधर्म बन समाज में प्रचलित रहती है।

इसी संदर्भ में लोक धर्म का वृक्षों में गहरा नाता रहा है। वृक्षों की उपयोगिता देखते हुए ये प्रत्येक समाज में क्षेत्रानुसार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अपनी उपयोगिता के आधार पर जन मानस में संरक्षित हुए। यहां तक कि लोक मानस में इनकी उपयोगिता को देखते हुए कई संप्रदायों शास्त्रों में भी इनको मान्यता दी गई है। भारतीय परम्परा में तो पीपल, नीम, आम, तुलसी, वट बरगद आदि को विशेष महत्व दिया जाता है। इन वृक्षों संबंधी मान्यताएं शास्त्रीय एवं लोकजीवन में समान रूप से मान्य होती हैं। इन वृक्षों की पूजन विधि तथा उनके प्रति आदर भाव के संकेत ज्योतिष और वास्तु शास्त्र में भी मिलते हैं। यह माना जाता है कि ''इनके पूजन करने से जीवन में आ रही बहुतसी बाधाओं से मुक्ति पाई जा सकती है।'' इनमें से कुछ पेड़पौधों को तो घर में रोपित करने का उल्लेख मिलता है। साथ ही यह भी कहा जाता है कि यदि घर में पर्याप्त स्थान न हो तो आसपास जहां भी यह दिखें तो इनका पूजन अवश्य करें। ऐसे पौधों में 'तुलसी' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

परंपरा से भारतीय संस्कृति में वृक्षों की सुरक्षा से पर्यावरण की शुद्धता को दृष्टि में रखते हुए भारतीय लोक विश्वासों में पेड़ों में विभिन्न देवताओं के वास की किवंदंतियां प्रसिद्ध हैं। ''वृक्ष मानवजीवन और पृथ्वी के पर्यावरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं '' इनकी इसी भूमिका के महत्व को आंकते हुए और इनके औषधीय गुणों को देखते हुए इनकी सुरक्षा को दृष्टि में रखते हुए इनके पूजन की प्रथाएं व इनके प्रति आस्था के भावों को लोक जीवन में लोक धर्म के रूप में मान्यता देकर पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह व जनमानस को जागरुक किया। इसी जागरुकता का संदेश पीढ़ीदरपीढ़ी लोक मानस की मान्यताओं में समाज में प्रचलन के रूप में आस्था का आधार बनता है।

इन सभी प्राकृतिक वृक्षोंपौधों में तुलसी के पौधे का विशेष महत्व भारतीय समाज में स्वीकृत है। तुलसी का शाब्दिक अर्थ ''अतुलनीय पौधा'' माना जाता है। भारतीय वैष्णव परंपरा में इस पौधे का विशेष स्थान है। इस पौधे के आसपास का वातावरण कीटाणु रहित शुद्ध हो जाता है। परंपरा से इसे घर के आंगन (ब्रह्म स्थान) में लगाने का विधान है। इसे विष्णु या 'हरि प्रिया' भी कहा जाता है। लोक जीवन में इसे 'भूत छनी' भूतप्रेत (भय) विनाशनी भी कहा जाता है। पौराणिक कथाओं में इसे जालंधर पत्नी वृंदा की कथाओं के साथ जोड़ कर देखा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाता है। वैसे तो इसकी पूजा वर्ष भर होती है। पर कार्तिक मास (अक्तूबरनवंबर) में इसकी पूजा का विशेष महत्व है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की देवोत्थान एकादशी के दिन परंपरा से तुलसी का विवाह शालिग्राम (विष्णु) के साथ विधिवत किया जाता है।

तुलसी का सारा पौधा किसी न किसी रूप में औषधीय गुणों से युक्त माना जाता है। इसकी पत्तियां, जड़, सूखी डंडी सभी का उपयोग किसी न किसी रूप में होता है। इसके साथ लोक जीवन की कई गाथाओं का प्रचलन विविध क्षेत्रों में प्रचलित है। लोक गीतों में भी तुलसी के प्रति श्रद्धा मिलती है:

''तुलसी माता तै सुख दाता
बिड़ला सींजू तेरा
तैं कर निस्तारा मेरा
किरसन जी को कांधा दइओ
पीताम्बर की धोती दइओ
बैकुंठ का बासा दइओ
हो ज्या निस्तारा मेरा
बिडला सींजू तेरा।।

तुलसी दल पत्ते का विशेष महत्व माना जाता है। सूर्योदय से पूर्व तथा सूर्यास्त के समय तुलसी के पत्ते तोड़ना मना है। धार्मिक दृष्टि से जहां तुलसी की पूजा कार्तिक मास में प्रसिद्ध है वहीं वैशाख (अप्रैलमई) मास में भी इसका महत्व माना जाता है: तुलसी दल वैशाख में अर्पहि तीनों काल।
जनम मरन सों मुक्त तेहि करत नंद के लाल।।
वृक्ष पूजन के उदाहरण भारतीय ही नहीं अपितु विश्व लोक धर्म में भी मिलते हैं। पीपल, बरगद (बट) और नीम आदि की पूजा के दृष्टांत सभी कहीं किसी न किसी रूप में मिलते हैं। वृक्षों में 'पीपल' को उसकी विशिष्टताओं के कारण सभी श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं।

पीपल का सांस्कृतिक महत्व सर्वविदित है। इसे संस्कृत में 'अश्वत्थ' कहा जाता है। लोकमान्यता के

अनुसार इसमें सभी देवताओं का निवास माना जाता है। इसकी लकड़ी का उपयोग यज्ञों में होता है। मोनियर के अनुसार the pipal tree is another divine tree... all the ceremonies of upanayans are then performed over it. सामाजिक आस्था के अनुसार पीपल पर जल चढ़ाने से सुखसमृद्धि की प्राप्ति होती है। इसकी मुख्य विशेषता 24 घंटे निरंतर ऑक्सीजन छोड़ने की है। यद्यपि यह वृक्ष घर में नहीं लगाया जाता पर इसकी छाया उपयोगी मानी जाती है। गीता में कृष्ण ने 'अश्वत्थ सर्ववृक्षाणाम्' कहकर इसे सर्वश्रेष्ठ वृक्ष के रूप में स्वीकार किया है। अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद में पीपल के नाना असाध्य रोगों में उपयोगों का वर्णन मिलता है। इसके मूल से लेकर पत्तियों तक विभिन्न देवताओं का वास माना जाता है। इसी कारण इसको प्रातः पूजनीय माना जाता है। स्कन्द पुराण में भी इस वृक्ष के औषधीय गुणों का विस्तार से संकेत मिलता है। इस वृक्ष की शनिवार की अमावस्या को इसके पूजन का विशेष विधान मान्य है। लोकजीवन में भी इस वृक्ष की विशेषताओं के संकेत लोक गीतों में मिलते हैं: ''पिप्लां वे मेरे पिंड दियां
तेरीयां ठंडीयां छावां
ढाब तेरी दा गंदला पानी
उत्तों बूर हटावां।।''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी प्रकार ग्रामीण युवतियां कहती हैं:
''तैं चौड़ा तैं चीकणा,
तैं बिरया का पूत।
तेरी डाली सींज कै,
सदा पावैं हम सुख।
जोआं की क्यारी चणे भरी,
उसने सीजें राधा प्यारी। पीपल सींजण मैं चली,
कुल अपणे की लाज।
पीपल सींज्या हर मिलै,
एक पंथ दो काज।।''

ग्रामीण युवतियां तीज के अवसर पर समवेत रूप में गाती हैं: ''सुन पीपल मेरे पिंड दे,
पींगां तेरे ते पाइयां।
दिन तीयां दे आ गए नेड़े, उठ पेकियां नूं आइयां। हाड़ महीना छावैं बैठन,
पिंड दीयां मझियां गावां। पिप्लां सौंह तेरी, झल्लियां न जान जुदाइयां।।''

लोक जीवन की आस्थाओं में पीपल की अनुराधा युक्त शनिवार को पूजा शनि की पीड़ा से मुक्त कराती है। साथ ही श्रावण मास में अमावस्या की समाप्ति पर पीपल वृक्ष के नीचे शनिवार के दिन हनुमान की पूजा करने से सभी तरह के संकटों से मुक्ति मिलती है। लोक जीवन में बरगद या वट वृक्ष के प्रति भी अटूट आस्था मिलती है। यह वट वृक्ष अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध है। इसकी आयु बहुत लंबी होती है। विशालता के साथ ही इसकी घनी छाया के नीचे विश्राम स्थली का रूप बहुत प्रसिद्ध है। इसकी शाखाओं से फूट कर जो जड़ें नीचे की ओर झूलती हैं उन्हें 'बरोहि' कहा जाता है। प्राचीन ग्रंथों में वट वृक्ष के महत्व का बारबार उल्लेख आता है। भारतीय संस्कृति में अक्षय वट, पंचवट, वंशीवट, गयावट, और सिद्धवट का उल्लेख पवित्र वृक्ष के रूप में मिलता है। प्रयाग में अक्षयवट, नासिक में पंचवट, वृंदावन में वंशीवट, गया में गयावट और उज्जैन में सिद्दवट प्रसिद्ध है। ज्येष्ठ मास की अमावस्या को सुहागिनें वट सावित्री का व्रत रख कर इस वृक्ष की पूजा करती हैं। परपंरा से इसके मूल में बह्म, छाल में विष्णु तथा शाखाओं में शिव का निवास माना जाता है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति के त्रिदेव के रूप में इस वृक्ष की पूजा का विधान किया जाता है। यह भी मान्यता है कि रविवार के दिन श्री लक्ष्मी इस वृक्ष की छाया में आती हैं। इस कारण इसकी पूजा व्यापारी वर्ग विशेष रूप से करता है। बरगद का उपयोग दस्त, पेचिश व दांतों के विभिन्न रोगों में भी सहायक होता है। इसकी छाया के महत्व को लोक गीतों में इस प्रकार कहा जाता है:
''मां बोहड़ दी छां
ते रब्बदा ना नां
सहारे इक्को जेहैं।।''

इन्हीं वृक्षों की भांति नीम भी अपने औषधीय गुणों के कारण लोक आस्था का विषय है। इसकी पत्तियों का बंदनवार नवजात शिशु के कक्ष के द्वार पर बांधना शुभ माना जाता है। आयुर्वेद में विभिन्न प्रकार की औषधियों में प्रयुक्त होता है। इसकी लकड़ी को दीमक भी नहीं लगती। दातुन के रूप में इसका प्रयोग सर्व प्रसिद्ध है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोक परंपरा में देवी और शक्ति की उपासना में नीम का प्रयोग अधिक किया जाता है। मां शीतला और मां काली की पूजा में प्रयुक्त नीम का संबंध शनि और केतु जैसे ग्रहों से भी जोड़ा जाता है। शनि की शांति के लिए नीम की लकड़ी का हवन में प्रयोग किया जाता है। केतु की शांति के लिए नीम के पत्तों को जल में डालकर स्नान किया जाता है। नीम अपनी उपयोगिता के साथसाथ देवी (शीतला व काली)का निवास स्थान होने के कारण पवित्र माना जाता है।

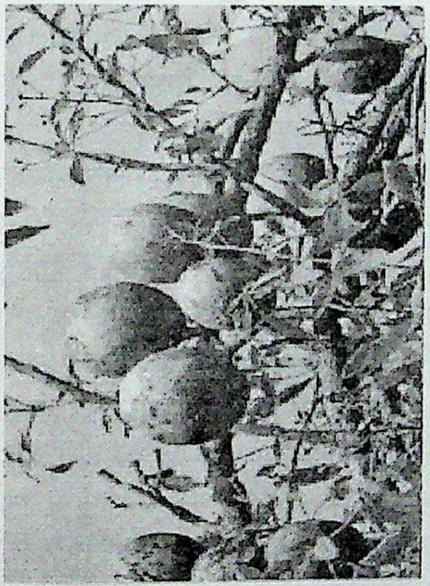

भारतीय परंपरा में विल्व पत्र (बेल) वृक्ष का फल और पत्ते शैव मत में अधिक प्रभावी हैं। प्राय: यह शिव पूजा स्थल के समीप लगाया जाता है। सांस्कृतिक दृष्टि से इस वृक्ष की जड़ों में गिरिजा, तने में माहेश्वरी, शाखाओं में दक्षयायनी, पत्तियों में पार्वती, फूलों में गौरी तथा फलों में कात्यायनी का वास माना जाता है। कहीं कहीं देवी महालक्ष्मी का वास भी इस वृक्ष में स्वीकार किया जाता है।शिव पुराण में इस वृक्ष की महिमा व इसके प्रति लोक आस्था का विस्तार में वर्णन मिलता है। यह माना जाता है कि विल्व पत्र के अभाव में शिव पुजा अधूरी रहती है। दु:खों से निजात पाने के लिए भी इस वृक्ष की पूजा के प्रेरति लोक विश्वास प्रचलित है। फलों के राजा आम का पेड़ भी भारतीय आस्था में विशेष स्थान का अधिकारी है। मांगलिक कार्यों में आम के पत्तों के बंदनवार प्रमुख द्वार पर लगाने का विधान लोक जीवन में प्रचलित है। धार्मिक पंडाल और मंडपों की सजावट भी आम के पत्तों से ही की जाती है। स्वप्न में भी आम के फल का दर्शन शुभ सूचक माना जाता है। मांगलिक कार्यो के कलश पूजन में भी आम की पत्तियों का महत्व होता है।

इन वृक्षों के अतिरिक्त शमी, अशोक,नारियल, बांस, अनार, केला, चंदन, बबूल, ताड़, कदम्ब, बेर आदि वृक्षों के साथ भी लोक आस्थाएं जुड़ी हुई हैं। श्री कृष्ण से संबंधित होने के कारण 'कदम्ब' के पेड़ का महत्व लोक मानस में है।इसी प्रकार अनार का 'दाड़िम' अमंगलकारी रूप में प्रसिद्ध है।'चंदन' का महत्व पूजा में विशेष रूप से होता है। इसे उत्तम प्रकृति का माना जाता है। कविवर रहीम का दोहा इस संदर्भ में प्रसिद्ध है: ''जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।। ''

चंदन की लकड़ी शीतलता व सुंगध के कारण बड़ी पवित्र मानी जाती है।'नारियल' को नारि केल भी कहा जाता है।इसका फल बड़ा पवित्र माना जाता है।कई क्षेत्रों मं इसकी पूजा गृह देवता के रूप में होती है। 'पलाश' का वृक्ष भी पवित्र माना जाता है इसक प्रयोग यज्ञीय अग्नि प्रज्वलन के लिए किया जाता है। अपनी उपयोगिता के कारण 'बांस' को भी पवित्र माना जाता है। इस प्रकार विविध वृक्ष अपनी उपयोगिता के आधार पर लोक जीवन में आस्था के प्रतीक के रूप में मान्य हुए और उनके प्रेरति लोक विश्वास पीढ़ीदरपीढ़ी परंपरा से आज भी किसी न किसी रूप से समाज में मान्य हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोक मनीषा ... मैनासतवंती का शेष

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1 दक्खिनी हिंदी के कवि गवासी कृत मैनासतवन्ती संपादक डॉ. सुनीता शर्मा।
2 दक्खिनी हिंदी का साहित्य-श्री राम शर्मा।
3 हिंदी साहित्य का बृहद इतिहास -परशुराम चतुर्वेदी।
4 हिंदी और पंजाबी प्रेमाख्यान -ओम प्रकाश।
5 हिंदी के मध्यकालीन खंडकाव्य -सियाराम तिवारी।
6 सूफी काव्य की भूमिका- रामपूजन तिवारी।
7 मधुमालती वार्ता -माता प्रसाद गुप्त
8 मध्ययुगीन प्रेमाख्यान- श्याम मनोहर पाण्डेय
9 हिंदी सूफी काव्य का समग्र अनुशीलन -शिवसहाय पाठक।
10 प्रेमाख्यानों की काव्य परंपरा और मूल्यांकन - अशोक कुमार मिश्र।

"किसी भी देश का शासक अगर अपनी जनता से ज़्यादा अपने वस्त्रों पर ध्यान दे तो समझ लीजिए कि उस देश की बागडोर एक बेहद कमज़ोर, सनकी और डरे हुए इंसान के हाथों में है"। आज के वक्त में भी इन विचारकों की टिप्पणियां बेहद सटीक बैठती हैं।

माइकल नोस्टरैडैम्स (1503 - 1566)

उड़े कहानी... का शेष

बेबसी घुट-घुट कर रह जाती है-हाय मेरी इतनी औकात नहीं कि मैं अपनी औलाद के लिए मेले से एक मिट्टी का खिलौना भी ख़रीद सकूँ। यहाँ पर यह उल्लेख करना अनुपयुक्त नहीं होगा कि भारत पर The credit Sui रिपोर्ट दर्शाता है कि मुल्क की कुल सम्पत्ति की 53 फीसदी है एक प्रतिशत की मुट्ठिओं में। 76.3 फीसदी लक्ष्मी कैद है दस प्रतिशत के वर्चस्व में (पीपुल्स डेमोक्रेसी 8-14 अगस्त 2016)

शायद आपके मन को भी यह सवाल झकझोरता है-आख़िर ऐसा क्यों है ? यह विभाजन कब तक चलेगा ?
औरउ कथा अनेक प्रसंगा।
तेइ सुक पिक बहुबनन बिहंगा।। (मानस बालकांड)
तो मेरे सपनों के भारत में मन को छू लेने वाली सुख-दुख और जीवन संघर्ष की कहानी, कवितायें अपने पंखों को फैलाकर बच्चों के मन-गगन में उड़ सकें। चाहे उनमें वाल्मीकि के राम और शबरी हों, या व्यास के एकलव्य और अर्जुन, या प्रेमचंद के होरी और शंकर, या रवीन्द्रनाथ के काबुली वाला, या सत्यजीत के गगन बाबू जो उस लोक से आकर मानो इस लोक के लोगों से कहते हैं- मैं ही नहीं मर गया, बल्कि तुम्हारी इंसानियत मर गयी है। आम आदमी की कथा से परी कथा तक, विज्ञान कथा से लेकर भूत कथा तक-जो जीवन के क्षितिज पर सूर्य को सातों घोड़ों को हांक सके। तुलसी बाबा ने ठीक ही कहा है
-पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारू/
माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारू।।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पैमाना

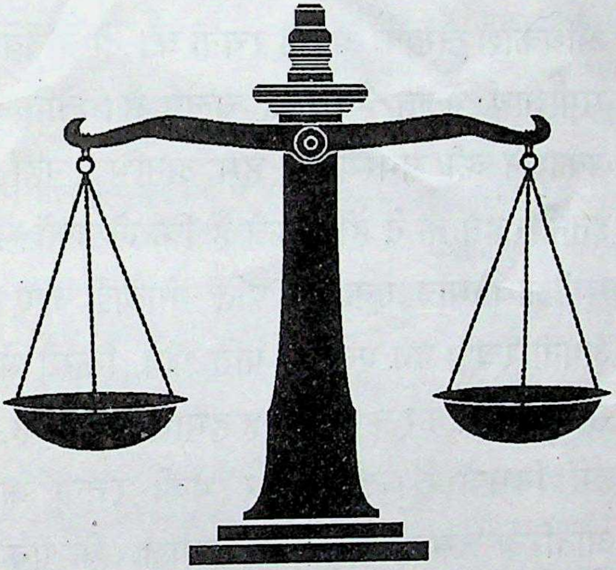

रमेश दवे

संजय चौहान

डॉ. सपना शर्मा

डॉ0 सरोज बाला

डॉ. किरण खन्ना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखकों से अनुरोध

अधिकांश लेखक अपनी रचना की दो प्रतियां समीक्षार्थ भेजते हैं। यही चलन है। लेकिन प्रकाशन की समस्या से हम अनभिज्ञ नहीं। इतनी राहत तो दे ही सकते हैं कि लेखकों से समीक्षार्थ मात्र एक ही प्रति मंगवाई जाए। अपनी रचना की एक ही प्रति भेंजे, किसी से समीक्षा करा कर न भेजें। यह हमारा दायित्व है, हमें निभाने दें। ईमेल पर भेजी रचना के अतिरिक्त उसकी एक प्रति कागज़ के एक ओर साफ़ शब्दों में लिख या टाइप करा कर भी भेजें। अपनी फोटो, पता, संक्षिप्त परिचय रचना के साथ जरूर भेजें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

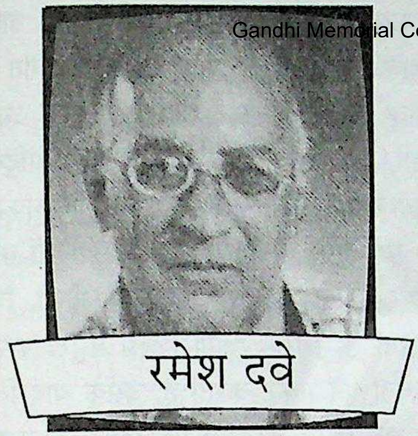

कथा कहो उर्वशी :

राजी सेठ का कथाकर्म

पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु मुख्य रूप से एक भाषा-वैज्ञानिक एवं शैली-वैज्ञानिक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने शैली विज्ञान के आधार पर हिन्दी की अनेक कालजयी कृतियों का जो विवेचन किया है वह हिन्दी समालोचना की उपलब्धि है। उनकी एक विशेषता यह भी है कि वे आलोचना के अद्यतन आधुनिक एवं उत्तर आधुनिक या उत्तर-उत्तर-आधुनिक विकास-क्रम से जुड़कर भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य की समालोचना के नव-विकसित मानदंडों के अध्येता और विश्लेषक भी हैं। ऐसा भाषा-संवेदी, शैली-विशेषक और समालोचक जब किसी सर्जनात्मक व्यक्तित्व के सृजन का आकलन करता है तो लगता है, पारम्परिक आलोचना-प्रणाली से विचलन कर साहित्यिक-समालोचन की नई दृष्टि प्रत्यक्ष हुई है और इस प्रत्यक्षीकरण के उद्गाता पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु हैं। उत्तर-आधुनिक विमर्श को लेकर स्व. कृष्णदत्त पालीवाल ने भी समालोचन किया था लेकिन उनकी कृति आधारित समालोचना के मूल आधार भारतीय काव्यशस्त्र के ही थे और उत्तर-आधुनिक मानदण्डों का वे प्रयोग केवल भारतीय वाड्मय का पश्चिम के समक्ष सामर्थ्य सिद्ध करने में ही करते थे। शीतांशु जी यहाँ राजी सेठ का विवेचन दो प्रकार से कर रहे हैं-एक पारंपरिक समालोचना मूल्यों पर और दूसरा पाश्चात्य हस्तक्षेपों के आश्रय सह। ''कथा कहो उर्वशी बनाम राजी सेठ का कथा-कर्म'' यह पुस्तक हिन्दी की वरिष्ठ एवं पाठक प्रिय कथाकार राजी सेठ पर संपादित पुस्तक है।'उर्वशी' शब्द पर कुछ पाठकों ने आपत्ति प्रकट इसलिए की है कि उर्वशी एक अप्सरा थी जो श्रेष्ठ स्त्रीत्व का प्रतीक नहीं मानी जाती है। इसके विपरीत एक तथ्य यह भी है कि ऋग्वेद की ऋचा रचने की ऋषिकाओं में से एक उर्वशी भी है जिसका नाम घोषा, जुहू, इन्द्राणी, लोपामुद्रा आदि के साथ जुड़ा हुआ है। दूसरा तर्क यह भी है कि उर्वशी अप्सरा भी है तो क्या हुआ, भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास चित्रलेखा की नायिका और आचार्य चतुरसेन शास्त्री की वैशाली की नगरवधू आदि क्या उस भारतीय नारीत्व के शील की प्रतिनिधि थी जिनमें हम सीता, तारा, अहिल्या, कुन्ती आदि की प्रतिष्ठा कर चुके हैं? खैर यह यहाँ विवाद का विषय न होकर संवाद को आमंत्रित करता है।

पुस्तक को प्रथम दृष्टया देखने पर इतना तो स्पष्ट है कि शीतांशु जी ने राजी सेठ जैसी कथाकार को केवल अपने ही अभिमत से प्रस्तुत नहीं किया है बल्कि सम्पादकीय आकलन में यह भी स्पष्ट कर दिया है कि राजी सेठ के कथाकार स्वरूप की विवेचना किन-किन तरीकों से अभी तक की गई है और उनमें शैली वैज्ञानिक विवेचना की भूमिका क्या है। पहला भाग है'समेकित

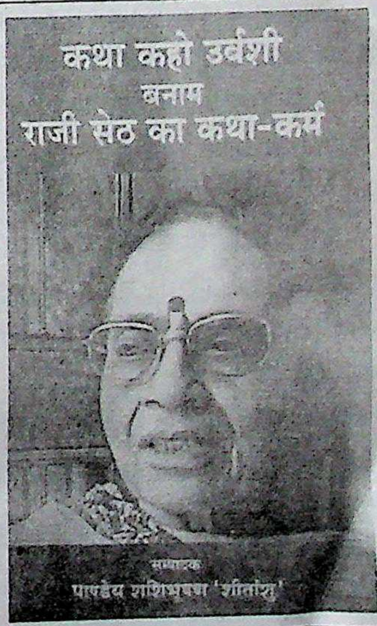

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूल्यांकन' का जिसमें वे प्रभाकर श्रोत्रिय, अर्चना वर्मा, गोविन्द मिश्र, अनीता नरेन्द्र, नीति शर्मा और स्वाति श्वेता के साथ राजी सेठ पर केन्द्रित पुस्तक ''राजी सेठ संवेदना का कथा दर्शन के दो आलेखों का भी उल्लेख करते हैं। इन लेखकों ने राजी सेठ के समग्र कथा-संवेदन, कथा-शिल्प और कथा-मानस को जिस प्रकार प्रस्तुत किया है, उसे शीतांशु जी ने प्रस्तुत कर यह भी बताने का प्रयत्न किया है कि राजी सेठ के कथाकर्म की आलोचनात्मक रेन्ज कितनी बड़ी और कितनी पाठक-उन्मुखी है।

राजी सेठ के कथा-फलक को दो दृष्टियों से देखना जरूरी है, एक उनकी संवेदना का मनोविज्ञान और दूसरा उनका भाषा-संवेदी शिल्प। वे उस प्रकार की प्रतिबद्ध यथार्थ की कथाकार नहीं हैं जो विचार धाराग्रस्त होकर संकीर्ण हो जाता है। उनके कथा-मानस का लोकतंत्र जिस यथार्थ की सृष्टि करता है वह संवेदना का लोकतंत्र है न कि संकीर्ण विचारधारागत प्रतिबद्धता का। शीतांशु ने पुस्तक के प्राक्कथन में यह कह दिया है कि राजी ''अपनी कहानियों में अपने देशकाल के प्रति बहुत सजग हैं''। ''कथा कहो उर्वशी बनाम राजी सेठ का कथा-कर्म'' के इस प्राक्कथन पुरोवाक या भूमिका में विशेषता यह है कि शीतांशु ने राजी सेठ की कहानियों को अपने विचार का केन्द्र बनाकर उनकी अनेक महत्वपूर्ण कहानियों के विवेचन के साथ उन्हें रेखांकित किया है। वे मानते हैं कि राजी अपने समय से टकराती उसे पहचानती -परखती हुई उसके दो स्पेसगत आयामों को एकत्रित करने में समर्थ हैं। राजी सेठ के उपन्यास 'तत-सम' (तत्सम नहीं और न तत्सम) को राजी का लिखने का आग्रह यह बताता है कि वे तत्सम शब्द के अर्थ में न जाकर 'तत' को पूर्ण आकार देती हुई 'सम' का अर्थ सम्पन्न करती हैं। अपनी उन कथा पात्रों में जो 'अतत' होकर भी अंत में उस 'तत' को रचती हैं जो स्त्री के प्रेम के संवेदन की ऐसी पहचान है जिससे हमारा 'तत-बोध' भी विचलित हो जाता है।

शीतांशु ने बड़े मनोयोग से 'तत-सम' और 'निष्कवच' जैसी उपन्यास-कृतियों के तार्किक एवं तात्विक विवेचन के बाद उनका कथागत मूल्यांकन व्यापक ढंग से किया है। अन्धे मोड़ से आगे, तीसरी हथेली, यात्रा मुक्त, दूसरे देश काल में, सदियों से, यह कहानी नहीं, किसका इतिहास, खाली लिफ़ाफ़ा, मार्था का देश, यहीं तक, जैसी महत्वपूर्ण कहानियों को केन्द्र में रखकर रचना-आधारित विवेचन शैली विज्ञान की विशेषता है, जिसमें भाषा-शिल्प प्रमुख रूप से कथा -संरचना को प्रकट करता है, उसके बाद विषय-वस्तु और अंत में विचार-वस्तु पर आलोचक कहानियों की अन्त: प्रकृति को स्पष्ट करता है। एक बात यह अच्छी है कि राजी की कहानियों को शीतांशु ने शैली-विज्ञान की जटिलताओं के आग्रह से मुक्त रखा है जिसमें शब्द-शब्द के एक-एक हिस्से यहाँ तक कि उनकी ध्वन्यात्मकता, उनका वाक्यगत निवेश, संरचनागत संश्लिष्टता और व्याकरणिक-विचलन आदि तत्व होते हैं जिन्हें सामान्य आलोचना-पाठक को समझने में उलझन होती है। शैली -वैज्ञानिक आकलन है तो अवश्य मगर उसे शीतांशु जी ने पाठ की प्रकृति और पाठक की प्रवृत्ति से जोड़ कर रचा है।

राजी सेठ की यादगार कहानियाँ में 'रूको इंतजार हुसैन' पर रजनी गुप्ता, संजय चौहान, उमा कुमारी साह के आलेख हैं। दस प्रतिनिधि् कहानियाँ-इस पर सपना शर्मा, सोनिया शर्मा और विशेष समीक्षित कहानियाँ पर शुकदेव सिंह, नीलम कुमारी के आलेख देकर राजी सेठ की कहानियों के आलोचनात्मकता प्रभाव को स्पष्ट किया गया है। अंत में राजी सेठ का आत्मने-पद उनके उपन्यास 'तत-सम' और निष्कवच को लेकर उपसंहार की तरह है तो अवश्य जिसकी विशेषता यह भी है कि कथाकार स्वयं अपनी रचना को किस प्रकार देखता, आंकता और उसकी पृष्ठभूमि में निहित विचार को कैसे कहानी-रूप देती है।

पुस्तक को अनेक लेखकों के संदर्भ के साथ पढ़ने पर यह लगता है कि एक सम्पादित-पुस्तक किस प्रकार अपने प्रकार के विश्लेषणों, विचारों, प्रभावों और पूर्वग्रहों से परिचालित होती है। अगर यही पुस्तक शीतांशु के एकल लेखन से बनी होती तो संभवतया और अधिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गहन और आलोचनीय-संभावनाएँ प्रकट कर सकती थी। संपादन में संपादक केवल अपनी भूमिका या पुरोवाक में प्रकट विचारों, मान्यताओं पर सीमित होकर रह जाता है, शेष उन लेखकों पर छोड़ देता है जो राजी की कहानियों के समालोचक रहे हैं। इस प्रकार संपादक एक प्रकार से भूमिका लिख कर शेष के प्रति उत्तर दायित्व-मुक्त हो जाता है।

शीतांशु की प्रवृत्ति आलोचना में विश्लेषणात्मक रही है। यहाँ उन्होंने ऐसे ही लेखकों को शामिल किया है जिन्होंने राजी को उनके कथाकार के रूप में व्यक्ति-निरपेक्ष होकर और कथा-सापेक्ष होकर लिखा है। यह पुस्तक इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसमें जो लेखक हैं वे पाठकों और शोधकर्त्ताओं के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ सुलभ हो। इसलिए अधिकांश संपादित-पुस्तकें संदर्भ-सामग्री का काम करती हैं और पाठक या शोधार्थी एक-निष्ठ विचार-सम्पन्न नहीं हो पाता।

कथा कहो उर्वशी के साथ 'बनाम' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया यह स्पष्ट इसलिए नहीं है कि क्या इससे शीतांशु जी 'उर्वशी' को उसके भौतिक-व्यक्तित्व के विवाद से मुक्त कर उसमें एक विचार-रूपक रचना चाहते थे? 'उर्वशी' का कथा कहना एक प्रकार से रोनेंटिक रूपक है। लेकिन राजी सेठ न तो अप्सरा उर्वशी हैं न ऋग्वेद की ऋषिका उर्वशी। वे तो उनके 'डर' से 'वशीभूत' कथाकार हैं। राजी सेठ को शीतांशु जी ने जिस प्रकृति, प्रवृति, परिवेश और परम्परा में देखा है उसी के अनुसार कहानियों का चयन भी किया है और उनके लेखकों को समेकित किया है। इससे एक बात यह प्रकट होती है कि शीतांशु जी ने अत्यन्त व्यक्ति या विचार -निरपेक्ष होकर कथाओं और उन पर लिखे गए आलेखों के साथ आलेखकों का चयन किया है। सम्पादन-कला की विशेषता ही यह है कि व्यक्ति हो या विचार या रचना, उन्हें उनकी गुणवत्ता के आधार पर ही चुना जाए और इसके लिए निर्मम निर्भावुकता आवश्यक है जिसका निर्वाह शीतांशु जी ने किया है।

पुस्तक के आद्योपान्त स्वरूप को देखकर लगता है हिन्दी में ऐसा काम अन्य लेखक, कथाकार, कवि आदि पर भी होना चाहिए ताकि एक समेकित पुस्तक में अनेक लेखक समवेत रूप में एक साथ उपलब्ध हो सकें। शीतांशु जी ने अपनी क्षमता से अधिक श्रम कर यह संपादन-संयोजन किया है जो राजी सेठ के कथा-संसार तक पहुंच कर कथाकार के कथा-संवेदन, कथा-दर्शन और कथा-वस्तु से, ठीक से पाठक को उद्वेलित कर सके और पाठक के आस्वादात्मक गुण को अधिक व्यापक एवं विचार-शील बना सके। राजी सेठ को पढ़वाने में शीतांशु का यह 'उर्वशी' रूपक एक प्रकार से पाठक के आकर्षण का भी कथा-मंच बन सकेगा और इससे हिन्दी का विमर्शात्मक व्यवहार अधिक वस्तुनिष्ठ और संश्लिष्ठ दोनों ही होगा।

एस.एच. 19 ब्लॉक 8, सहसाद्रि रोड, भोपाल एम.पी.

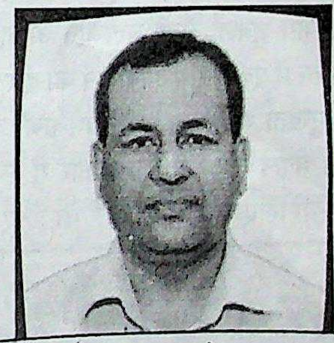

संजय चौहान

अनछुए पहलुओं का उजागर है 'यादों की धरोहर'

सुप्रसिद्ध साहित्यकार कमलेश भारतीय ने अपनी रचना धर्मिता से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। अनेक कहानी संग्रहों के सर्जक कमलेश भारतीय अपनी नवीन सृजन एवं सक्रियता के लिए हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध हैं। अध्यापन के अतिरिक्त पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने वाले भारतीय जी का सद्य प्रकाशित 'यादों की धरोहर' साक्षात्कार की प्रथम पुस्तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। यह पुस्तक बहुत पहले लिए साक्षात्कारों का संग्रह है, जिसका प्रकाशन अलग-अलग समय पर विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं में हुआ है। साक्षात्कार के माध्यम से इन्होंने कई अनछुए पहलुओं का उद्‌घाटन किया, जो हिन्दी साहित्य के लिए अतीव महत्वपूर्ण एवं साहित्योपयोगी है। संग्रह में संकलित अनेक श्रेष्ठ रचनाकारों के साक्षात्कार अत्यंत उपयोगी हैं। 'यादों की धरोहर' में लेखक ने अपने द्वारा लिए गए अनेक हिन्दी साहित्यकारों के साक्षात्कार को संकलित किया है। संग्रह में जिन महत्वपूर्ण व्यक्तियों का साक्षात्कार है, उनमें: इंद्रनाथ मदान, भीष्म साहनी, नरेन्द्र कोहली, रामदरश मिश्र, निर्मल वर्मा, विष्णु प्रभाकर, हरिशंकर परसाई, राजेन्द्र यादव, गिरिराज किशोर, अनीता राकेश, राकेश वत्स, यश गुलाटी, वीरेन्द्र मेंहदीरता, नरेन्द्र मोहन, लीलाधर मंडलोई, प्रयाग शुक्ल, सैली बलजीत आदि प्रमुख हैं। हिन्दी साहित्य में एक समय आंदोलन का दौर था। विचार धारा की प्रमुखता थी। परंतु अब खेमेबाजी का दौर है। डॉ. इंद्रनाथ मदान ने अपने साक्षात्कार में स्पष्ट कहा है ''खेमे-शेमें मेरे लिए कोई चीज नहीं, मेरे लिए

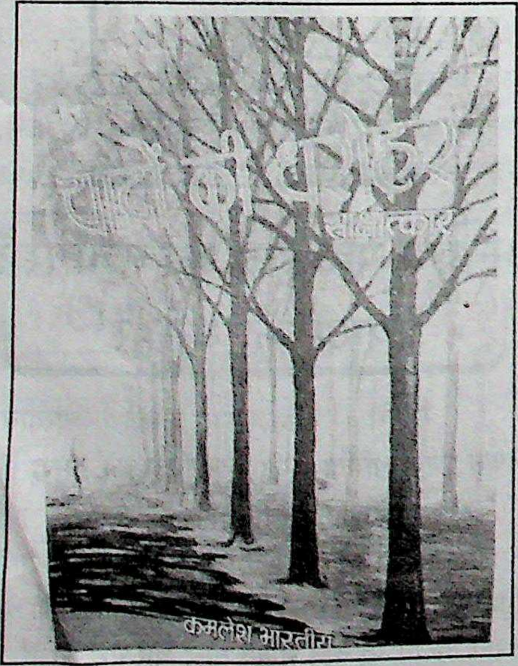

रचनात्मक लेखन महत्वपूर्ण है। खेमों में साहित्य नहीं पनपता, साहित्य हर खेमे में महत्व पाता है।' वरिष्ठ साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने अपने साक्षात्कार में नए लेखकों के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। वह कहते हैं- 'यदि नये लेखक अच्छा लिख रहे हैं तो इसका श्रेय हमें ही तो जाता है और पुत्र आगे नहीं बढ़ेंगे तो हमें श्रेय किस बात का और परंपरा किसे कहते हैं ?' भीष्म साहनी का मानना है कि लेखक का काम लोगों को सचेत करना है। वह अपने प्रभाव एवं लेखन से मानवीय मूल्यों की रक्षा करता है।

साहित्य और साहित्यकार की दशा-दिशा पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए रामदरश मिश्र ने स्पष्ट किया कि आज के दौर में साहित्यकारों का यह विशेष दायित्व है कि वे साहित्य को आम जन से जोड़ने की कोशिश करें, लेकिन वे तरह-तरह के प्रयोगों के नाम पर अपने लेखन को इतना दुरुह बना रहे हैं कि आमजन तो क्या, पढ़े-लिखे लोग भी उससे सहचर्य स्थापित नहीं कर पा रहे। साहित्यकारों का काम संवेदनाओं को छूना और पाठक के मन में सौंदर्यबोध जगाकर धीरे-धीरे से उसे बदलना है। कवि नरेन्द्र मोहन अपने साक्षात्कार में साहित्यिक आंदोलनों का समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि काल-चेतना के कारण धारणा भी बदलती है। आज साहित्य के लिए चुनौतियां अत्यधिक हैं। ऐसे में रचनाकार को दृश्य और गति वाली नई भाषा के जरिए स्वाधीन होने के अर्थ को, सपने को बचाए रखना होगा। लीलाधर मंडलोई का मानना है कि समसामयिक संदर्भ में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श और आदिवासी-विमर्श तो आवश्यक हैं ही, साथ ही सृष्टि के संतुलन का मुद्दा सबसे शीर्ष पर है। धरती, जल, वायु, अग्नि और आकाश को बचाना आवश्यक है ताकि सृष्टि बची रहे।

अनीता राकेश ने अपने साक्षात्कार में मोहन राकेश के जीवन की कई घटनाओं और उनकी वैचारिक्ता को उद्‌घाटित किया है। मोहन राकेश को जूते कसके दफ्तर जाना गुलामी लगती थी। देवीशंकर प्रभाकर को लोक-संस्कृति के प्रति असीम आस्था है। अपने साक्षात्कार में वे स्वीकार करते हैं कि मेरे लिए लोक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-संस्कृति गंगा के समान पावन है। कवि राकेश वत्स संघर्ष को ही जीवन का आधार मानते हैं। विपरीत परिस्थिति में भी उन्होंने शब्द के प्रति अपनी आस्था को जीवंत रखा। 'यादों की धरोहर' हिन्दी साक्षात्कार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कृति है। संग्रह में अनेक विद्वानों के साक्षात्कार अतीव महत्वपूर्ण हैं। कई विद्वानों के संदर्भ में परिचयात्मकता अधिक दिखती है। रचनाकार को इससे बचना चाहिए। भाषा और अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह पुस्तक उपयोगी एवं सार्थक है।

हिन्दी विभाग
सरकारी गुरु नानक कॉलेज
काला अफगाना, गुरदासपुर
(पंजाब) 9478440472

डॉ. सपना शर्मा

जीवन की विभिन्न छटाओं से परिपूर्ण 'कतरा-कतरा सागर'

सागर पंडित का काव्य-संग्रह 'क़तरा-क़तरा सागर' हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर से प्रकाशित 104 कविताओं का संकलन है। इन कविताओं में राजनीति, समाज, परिवार, धर्म, प्रेम, समकालीन परिवेश, सामाजिक समस्याओं एवं व्यक्तिगत अनुभवों से संबंधित विविध विषयों को प्रभावोत्पादकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। राजनीति को कविता का विषय बनाते हुए उन्होंने तत्कालीन राजनीतिक परिवेश को व्यंग्यात्मक रूप में उकेरा है। 'पद भैय्या' कविता में राजनीति में पद के महत्व पर प्रकाश डाला है कि कैसे सत्ता में आने से पहले नेता दर-दर जाकर वोट की भीख मांगते हैं और पद पर आने पर उसका नशा इन पर चढ़ जाता है। 'गीत नया अब गाता हूं' में अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री रहने के बाद चुनाव में हार जाने के अवसर उनके मन में उठ रहे विचारों का वर्णन है। तो 'विधायक' कविता में विधायक पर व्यंग्य करते हुए सागर पंडित लिखते हैं:

''समय की है बात भैय्या
विधि का विधान देखो
विधि को जो तोड़े
वह विधायक कहाएं हैं'' पृ(13)

'भाई भतीजावाद' कविता में नेताओं पर व्यंग्य किया गया है। नेता जी सत्ता में आते ही अपने भाई और भतीजों को, कहने का तात्पर्य अपने रिश्तेदारों को सत्ता में लाते हैं। इनके पारिवारिक सदस्यों को रोज़गार भी मिल जाता है और वे सत्ता में भी आ जाते हैं। सागर पंडित 'भाई भतीजावाद' कविता में इन्हीं विचारों को प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं:

''नेता जी ने
व्यवस्था में से
भाई भतीजावाद
हटा दिया है
भाइयों को
परमिट दिए हैं
भतीजों को
रोजगार लगा दिया है।'' (पृ161)

सामाजिक विसंगतियों तथा सामाजिक कुरीतियों से संबंधित कई कविताएं 'क़तरा-कतरा सागर' संग्रह में संकलित हैं। समाज में उन्हीं लोगों का बोल बाला है जो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चम्मचागिरी करते हैं। यह चम्मचे कोई और नहीं, बल्कि उनके परिवार के ही सदस्य हैं। कवि लिखता है:

मद भरे मतवाले चमचे
चाचे, मामे, फूफे, जीजे
भाई, भतीजे, नाती, साले
नेता जी ने चमचे पाले (पृ31)

कवि समाज में सभी को समान देखना चाहता है। 'परिचय' कविता में कवि इसी ओर संकेत कर रहा है कि हम सब अच्छे हैं या बुरे हैं जैसे भी हैं उस एक परमात्मा की ही संतान हैं। इसलिए हम सभी समान हैं। कोई ऊंचा या नीचा नहीं है।

''उस एक की ही संतान हैं
इसलिए सब एक समान हैं।''

समाज में पनपे भेदभाव पर कवि सागर पंडित कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि मनुष्य एक ही तरह से संसार में आता है और जाता भी एक ही तरीके से है। इसलिए हम सारे एक ही ईश्वर की संतान हैं। हम में से कोई बड़ा या छोटा नहीं है। 'एकस के बालक' कविता में वह लिखते हैं:

''ऐको राशी बंदे सारे
काहे काटे, काहे मारे...
एक तरह से आते सारे
एक तरह से जाते सारे।'' (पृ 77)

कवि का मानना है कि सभी उस ईश्वर की संतान हैं फिर क्यों राम और रहीम के नाम पर, मंदिर या मस्जिद के नाम पर एक दूसरे को मारते-काटते हैं।

पारिवारिक कविताओं में कहीं तो पत्नियों की व्यथा को प्रस्तुत किया गया है तो कहीं परिवार के बेटों के विवाह पर आए मन में विचारों को विवेचित किया गया है। 'बेगमों की कव्वाली' कविता में पत्नियों की दशा का मार्मिक चित्रण करते हुए सागर पंडित लिखते हैं कि पत्नियां बेगमें यही मांगती हैं कि अगले जन्म उन्हें औरत न बनाना, पुरुष बनाना ताकि वे अपने इस जन्म के सारे बदले शौहरों से ले सकें।

''अगले जन्म में मौला
हम पे करम फ़रमाना
हमको मरद बनाना
औरत इन्हें बनाना
सारे के सारे पिछले
बदले हमें दिलाना।'' (पृ 41)

कवि सभी धर्मो का बराबर सम्मान करता है। सागर पंडित की कविता 'ब्राह्मण आवाहन' में ब्राह्मणों को संबोधित करते हुए तत्कालीन परिवेश को बदलने के लिए संबोधित किया गया है, तो वहीं दूसरी ओर सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब को ज्ञान एवं अध्यात्म का भंडार कहा गया है। ब्राह्मणों को संबोधित करते कवि लिखता है:

जागो और जगाओ ब्राह्मण
नव उपदेश सुनाओ ब्राह्मण
तुम हो ब्रह्मा के जाये ब्राह्मण
देव धरा पर लाओ ब्राह्मण (पृ 72)

वहीं कवि 'गुरु ग्रंथ साहिब' में गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते लिखते हैं:

''अध्यात्म, योग, उपासना, भक्ति, शक्ति वेदांत मानस का उपदेश है गुरु ग्रंथ साहिब'' (पृ 73)

'क़तरा-क़तरा सागर' काव्य-संग्रह में सागर पंडित की प्रेमपरक कविताएं भी संकलित हैं। इन कविताओं में प्रेम में मिली रुसवाई को उकेरा गया है। कवि यह भी कहता है कि यदि प्रेम में रुसवाई नहीं मिली तो प्रेम का मजा ही क्या है :-

माना कि राहे इश्क बड़ी दुश्वार है सागर
मिली नहीं जो रुसवाई तो मज़ा क्या आया (पृ 49)

कवि ने देश-विदेश घूमने के विभिन्न अनुभवों को अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया है। किसी कविता में शिमला को तो किसी कविता में हैदराबाद को प्रस्तुत किया है। 'शिमला' शहर कवि को विशेष रूप से पसंद है। शिमला से संबंधित चार कविताएं उनके इस संकलन में संकलित हैं। कवि ने अपनी कैनेडा यात्रा का वर्णन भी किया है। अपने कैनेडा के अनुभव बताते हुए कवि कहता है कि इस शहर में सभी को अजब-सी जल्दी मची होती है। शहर में भागम-भाग का माहौल रहता है। कवि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

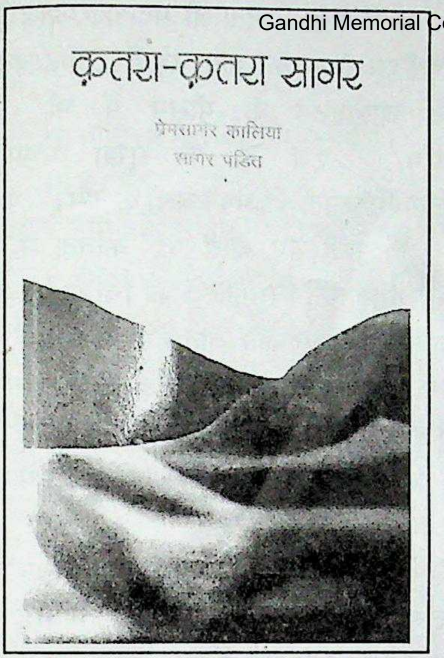

लिखता है:-

यहां इस अजब-सी जल्दी मची है,
भागा हुआ है शहर देखता हूं। (पृ 123)

कवि ने कहीं होली के त्यौहार को उकेरा तो कहीं गंगा के पावन जल का उल्लेख किया है। उनकी एक कविता ओलम्पिक से संबंधित है तो कई कविताओं में अपने देश भारत के प्रति श्रद्धा व्यक्त की गई है। ''गुरुओं का गुरु भारत'' कविता में भारत के प्रति कवि का देशप्रेम द्रष्टव्य है:

''सभ्यता पनपी इसी धरती से
प्रत्येक शुरू का शुरू है भारत
समर्थ, समृद्ध, सम्पन्न है भारत
सब गुरुओं का गुरु है भारत'' (पृ 81)

सागर पंडित कहीं तो औद्योगिक प्रगति के खतरे को दर्शाते हैं, तो कहीं इससे फैल रहे प्रदूषण की समस्या पर गहनता से विचार करते हैं। अपनी कविता 'दौड़ सके तो दौड़' में वह लिखते हैं:

''कितनी दुर्गंध उठाती है और
कितना धुआं-सा उड़ता है
कोई नाला कहीं बहता है
कोई नाला आ जुड़ता है
अपने औद्योगिक कचरे को
तू कहां किधर को मोड़ेगा
दौड़ सके तो दौड़।'' (पृ 28)

पीढ़ी के अन्तराल को कवि ने 'पुराना रूप' एवं 'नया रूप' कविताओं में दर्शाया है। पेड़ क्यों लगाए जाएं, इस पर बूढ़ा किसान हंस कर उत्तर देता है कि उसके बच्चे इसके फल खाएंगे। दूसरी ओर वन ठेकेदार से यह प्रश्न किया गया तो उसने उत्तर दिया कि उसके बच्चे इन्हें कटवाएंगे, धन कमाएंगे।

पुराना रूप
बूढ़ा किसान
हंसकर बोला
माना यह मेरे
काम नहीं आएंगे
मेरे बच्चों के बच्चे
इनके फल खाएंगे। (पृ 75)

बूढ़ा ठेकेदार जिसे यह सवाल किया गया कि वन लगा कर वह व्यर्थ धन गवा रहा है तो उसने उत्तर दिया कि उसके बच्चे के बच्चे उसे कटवाएंगे और इसका लाभ उठाएंगे।

वन ठेकेदार बोला
तो क्या
मेरे बच्चों के बच्चे
इनको
कटवाएंगे। (पृ 175)

प्रस्तुत काव्य-संग्रह कला-पक्ष की दृष्टि से भी सशक्त एवं प्रभावोत्पादक है। भाषा सांकेतिकता, संवेदनात्मकता एवं सम्प्रेषणीयता से परिपूर्ण है। कवि ने चित्रात्मक शैली के प्रयोग से अनुभूति को अर्थवत्ता प्रदान की है। कवि ने अंग्रेजी एवं उर्दू के शब्दों का प्रयोग कर भावों में नवीनता का समावेश किया है। अन्तरपाठीय शिल्प के माध्यम से अनुभूति को सार्थकता प्रदान की गई है। कवि ने जीवन की विसंगतियों को सहज व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गहन अनुभूति का दस्तावेजः 'साजिश के चलते'

'साजिश के चलते' सुविख्यात रचनाकार सदाशिव कौतुक का नवीनतम काव्य-संग्रह है। 144 पृष्ठों का यह काव्य-संकलन अयन प्रकाशन नयी दिल्ली से 2018में प्रकाशित हुआ है। इस काव्य-संग्रह में सदाशिव कौतुक की 101 चुनिंदा कविताएँ संकलित हैं। सदाशिव कौतुक समकालीन संवेदना एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति सजग कवि हैं। इनकी अनुभूतियाँ तीव्र हैं तथा विस्तृत फ्लक को समेटती हैं।

सदाशिव कौतुक की कविताएँ समाज की विसंगतियों पर कटाक्ष करती हैं, तो समाज में फैल रही गरीबी तथा भूख का दस्तावेज भी हैं। 'कुछ बच्चे' कविता में बच्चों की स्थिति ऐसी बतायी गई है कि वे होटलों के दरवाजों के बाहर खड़े होकर पेट भरने के लिए जूठन का इन्तजार करते हैं। ताकि अपने पेट की भूख शान्त कर सकें झोपड़ों से निकल कर/होटलों के द्वारों पर/खाली पेट कर रहे थे/देर रात तक/ जूठन का इंतजार/कुछ बच्चे। ; पृ: 32 'प्रतीक्षा' कविता में मजदूरनी की दयनीय दशा का वर्णन है। मजदूरनी बच्चे को पीठ पर उठाए धरती खोदती है। अनाज बोती है इस आशा में कि जब सुनहरी बालियाँ उगेंगी तो उसके बच्चे की भूख भी शान्त होगी:

''पीठ पर झोली/झोली में बच्चा/और.....बच्चे में है आशा/सुखद भविष्य की/इसीलिए वह औरत..../गोड़ती है/ तपती धरती/बोती है दाना/..../उगाने फ्सल।'' ;पृ 22

कवि 'सदा बहार' कविता में राजनेताओं पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं कि आज ये राजनेता जनता के सामने वोट लेने के लिए हाथ जोड़कर खड़े हैं और कल जीतने पर ये अपनी सारी समस्याओं का हल ढूँढ लेंगे। जनता से कई प्रलोभन युक्त वादे करेंगे जो शायद भविष्य में पूरे कभी नहीं होगें।

''ये हैं......नेता जी सदाबहार/आज ये.....हाथ जोड़/ठिठुर-ठिठुर कर/बटोर रहे हैं.....वोट/जब/नेता जी जीत जाएँगे/ठंड के मौसम में भी/ ये गरमा जाएँगे/...../ऐसे ही ये सूखा भगाएँगे/राहत दिलवाएँगे/जनता को अपने/वादों के नाम I// ;पृ23

'सदी तुम चली गई' कविता में सामयिक परिस्थितियों की विसंगतियों को चित्रित किया गया है। एक सदी चली पर जाते-जाते हिंसा के दरवाजें खोल गई। रिश्वत का विष जिन्दगी में भर गई। बीती हुई सदी शोषक वर्ग के हाथ में शोषण करने का हथियार दे गई। राजनीति को गहन कुएँ में डाल गई और एक बार फ्रि मासूम बच्चों की आशों पर पानी फेर गई:

''सदी/तुम चली गई/रिश्वत का विष जिन्दगी में घोलकर/नैतिकता को दुनिया से निचोड़ कर/..... राजनीति को अंधे कुएँ में डालकर...... क्यों मासूमों की आशा भरी नजरें एक बार फ्रि छली गई।'' ;पृ.30

'चोर' कविता में ऐसे समसामयिक परिवेश का चित्रण है जहाँ हर कोई भ्रष्टाचारी है, हर कोई दूसरे की जेब में हाथ डाले है, जो स्वयं भ्रष्टाचारी है, चोर है वह दूसरे पर भ्रष्टाचारी का, चोरी का आरोप कैसे लगा सकता है। आज के परिवेश का सारा तंत्र ही भ्रष्टाचार से भरा पड़ा है इसीलिए कोई एक कोई दूसरे को चोर नहीं कह सकता है

''तुमने उसकी जेब में/मैंने तुम्हारी जेब में/मेरी जेब में एक और ने/डाल रखा है हाथ/भला तुम्हीं बताओ/ इस लूट के दौर में/ कौन मचाए शोर/चोर.....चोर.....चोर।'' ;पृ 72

इस संग्रह में संकलित 'आज भी' कविता में दलित संवेदना को भी चित्रित किया गया है। कविता में दलितों की स्थिति जैसे पहले विडम्बनापूर्ण थी उसमें आज भी कोई बदलाव नहीं आया है। आज भी दलितों को मन्दिर प्रवेश की मनाही है। मन्दिर में उनके प्रवेश करने पर उन्हें बुरी तरह से मारा-पीटा जाता है। भगवान पर चढ़ा दूध, दही, प्रसाद कुत्ता तो चाट सकता है पर दलित के लिए ये सब वर्जित हैं :

''आज भी/वह अछूत है/और/मन्दिर की सीढ़ी चढ़ने के जुर्म में/पीटा जाता बुरी तरह/भले ही कुत्ता चाट जाय/भगवान पर चढ़ा हुआ/दूध, दही और प्रसाद/मगर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह दलित उस मन्दिर में नहीं कर सकता प्रवेश।'' ;पृ 54

'आज भी' कविता तथा 'जुर्म-दर-जुर्म' कविताओं में नारी की दयनीय स्थिति को उकेरा गया है। आज भी उसे बाज़ार की वस्तु समझा जाता है, तोड़ा जाता है और घर से बेघर कर दिया जाता है। नारी को सबसे अधिक भरोसा ईश्वर पर है पर नारी की ऐसी जर्जर स्थिति देखकर ईश्वर का मन क्यों नहीं पिघलता ''सबसे अधिक भरोसा करती है/औरत ईश्वर पर/यदि, यह सच है, तो अपनी आस्था की दुर्दशा पर/अभी तक रोया क्यों नहीं ईश्वर ?'' ;पृ 94

'सदाशिव कौतुक की कविताओं 'आखिर कब तक' तथा 'तड़पते ही रहोगे ?' में शोषकों के प्रति विद्रोह के भाव भी झलकते हैं। जिन्होंने आम आदमी का जीना दूभर कर दिया है। कब तक मनुष्य उनको एहमियत देता रहेगा और उनके पांव सहलाता रहेगा। कवि शोषित को विद्रोह करने के लिए प्रेरित करता है। उसका मानना है कि शोषक के हाथ पकड़ने ही होंगे, नहीं तो ताउम्र उसकी छुरी की नोक को झेलना पड़ेगा।

''उनके शोषक हाथ नहीं पकड़ोगे/तो तड़पते ही रहोगे/कसाई की छुरी के नीचे/बेजुबान बनकर कब तक कटते रहोगे ?'' ;पृ 81

कवि ने अपनी कविताओं में पारिवारिक त्रासदी के शाश्वत रूप को प्रस्तुत किया है। 'तार-तार सुबह' कविता में पत्नी दिन भर पति का इन्तजार करती है और जब पति लौटता है तो देखती है उसने अपनी सारी कमाई शराब में उड़ा दी है। उसे परिवार की चिन्ता नहीं है। पत्नी चुपचाप तार-तार साड़ी में देखती है रोज यह तमाशा

''पति के लौटने पर पाती है/पी डाली है उसने शराब/गाढ़ी कमाई की/ तब वह देखती है/कभी अपने धुत्त पति को/और..../कभी अपनी/ साड़ी-सा तार-तार होती/सुबह की जुगाड़ को।'' ;पृ 19

पिता से सम्बन्धित कविताओं में जहाँ पिता से जुड़ी अनमोल स्मृतियाँ है, तो पिता का बेटियों की सुरक्षा के प्रति गहरी चिन्ता एवं भय भी है। 'भरपाई' कविता में पिता की विवशता का वर्णन किया गया जहाँ बेटा, बेटा न रहकर पिता का पिता बन जाता है। जरूरत पड़ने पर ही पिता की राय ली जाती है। पिता को बेटे की कई बातें भी सुननी पड़ती हैं। पिता की विडम्बना एवं विवशता यह है कि वह न तो बेटे को अपने से दूर कर सकता है और न ही उससे दूर रह सकता है :

''सुन भी लेता हूँ दो बातें/क्योंकि मैं पिता बना रहना चाहता हूँ/ उम्र के इस चौराहे पर/न बेटों को दूर कर सकता हूँ/न दूर रह सकता हूँ कभी उनसे।'' ;पृ119

'खज़ाना' कविता में माँ की डायरी का वह खज़ाना है, जहाँ माँ के राज़ों का अनमोल खज़ाना दबा पड़ा है। कहीं तो उसके सपनों की हत्या के किस्से हैं, तो कहीं बेटी के जाने की उदासी तथा बेटी के लौटने या आने की खुशी भी है। यह ऐसी डायरी है जिसमें जीवन के अनुभवों का खज़ाना है:

''माँ के सिरहाने मिली डायरी/......डायरी नहीं/जिन्दगी के अनुभवों का खज़ाना था/उस डायरी में सचाई का आइना था।'' ;पृ 100

कवि की कविताएँ प्रकृति पर मंडरा रहे भयंकर संकट की ओर भी संकेत करती हैं। पेड़ों को लगातार काटने से आज पृथ्वी का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। पेड़ों के काटे जाने से पृथ्वी को भारी आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है। पृथ्वी पर जल का स्तर कम हो रहा है। उसे भूकम्पों का सामना करना पड़ रहा है। कवि ने 'दरख्त', 'वृक्ष की मृत्यु पर,' 'मत काटो मेरे हाथ', 'धरती की व्यथा' तथा 'भूकम्प' आदि कविताओं में वन एवं जल संरक्षण के सामयिक ज्वलन्त मुद्दों का विवेचन किया है। 'धरती की व्यथा' कविता में धरती अपने मरूस्थल हो जाने का कारण बताती है। संवेदना शून्य लोग अपनी सुविधओं के लिए पृथ्वी को मरूस्थल बनाने में सफल होते जा रहे हैं :

''आकाश गवाह है/मेरे मरूस्थल हो जाने का/मेरे अन्दर से चीखें निकलती रही बार-बार/संवेदना शून्य हो गए थे लोग/और वे दरिंदे/मुझे मरूस्थल बनाने की साजिश में सफल होते जा रहे थे।'' ;पृ 131

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कवि ने अपनी कविता 'बच्चे और युद्ध' में युद्ध की त्रासदी को उभरा है तो गैस त्रासदी: एक, दो, तीन, चार में भोपाल में हुई गैस त्रासदी को चित्रित किया है। भोपाल शहर का सारा वातावरण गैस से दूषित हो गया। वृक्ष पीले पड़ गए। लोगों की देखने और सुनने की शक्ति चली गई। शहर चीखो- पुकार से गूंज उठा:

''तमाम दरख़्त/पीले होते हुए/थरथराते हुए/ और.../ आवाज़ें बहरी दीवारों पर/सर पटक-पटक कर/चीखती रहीं शहर भोपाल में।'' ;पृ 136

अंत में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत काव्य -संकलन 'साजिश के चलते' में कवि सदाशिव कौतुक की गहन अनुभूति, दूर-दृष्टि, संवेदनशीलता, परिपक्व -अन्तर्दृष्टि का परचिय मिलता है। भाषा पर उनका पूरा अधिकार है। खड़ी बोली के माध्यम से कवि ने ज्वलन्त सामयिक मुद्दों को उद्घाटित किया है। अपने विचारों एवं अनुभवों के माध्यम से उन्होंने व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र पर भविष्य में आने वाले संकटों का संकेत बड़े भावपूर्ण एवं ओजस्विता से दिया है। प्रस्तुत काव्य-संकलन समसामयिक जीवन की प्रासंगिकता का दस्तावेज है।

असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय,अमृतसर
17बी मजीठा रोड, अमृतसर, पंजाब

''हिंदुस्तान एक बेहद प्रतिभाशाली देश है लेकिन जनता उतनी ही मूर्ख भी, वहां के लोग जातिधर्म के नाम पर आपस में लड़कर अपने ही देश का नुक़सान कर रहे हैं''

हर्बर्ट वेल्स (1846 : 1946)

डॉ0 सरोज बाला

चन्द्रसेन विराट का गजल-संग्रह

'इस जिन्दगी की जय'

विविध साहित्यिक संस्थाओं से सम्मानित एवं पुरस्कृत गज़लकार चन्द्रसेन विराट अनुभवी एवं संवदेनशील समकालीन गज़लकार थे। 'इस जिंदगी की जय' हिन्दी गज़ल-संग्रह उनका तेरहवाँ गज़ल-संग्रह है जिसका प्रकाशन 2017 में हुआ। इस संग्रह में उनकी 90 गज़लें संकलित हैं। इन गज़लों को पढ़ने और समझने के पश्चात् ज्ञात होता है कि उनकी अभिव्यक्तियों का समुद्र अत्यंत गहरा है। इन गज़लों में गज़लकार ने आधुनिक युग की वास्तविकता, कृषक-वर्ग की विडम्बना, भौतिकवादी चकाचौंध में लुप्त होता अपनत्व, मनुष्य-जीवन का महत्व, बेटी का अस्तित्व, भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग, पर्यावरण की शुद्धता एवं स्वच्छता पर बल, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति आग्रह, जीवन में सुख-दुख का सामंजस्य, बेटी-बेटा एक समान, प्रेम और सद्भावना की महत्ती, आज के अख़बारों की सच्चाई, प्रतिकूल परिस्थितियों से समझौता, सकारात्मक दृष्टिकोण, भ्रष्टाचार का पर्दाफ़ाश, सुकर्मों से यश की प्राप्ति, आधुनिक मानव का द्वन्द्व, नैतिक-मूल्यों का विघटन, कालजयी साहित्य से प्रेम, साहित्य-रचना से प्रेम, संगीत का जीवन में बहुमूल्य स्थान, अध्यात्मिकता, पाप-पुण्य की परिभाषा, अकेलापन, मनुष्य के दोहरे व्यक्तित्व का प्रदर्शन आदि विविध अनुभूतियों का चित्रण पूर्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संवेदनशीलता और गहनता से किया है। प्रस्तुत संकलन की प्रथम गज़ल 'अन्तर बना रहा' पृष्ठ 13-14 में गज़लकार ने समाज और जीवन में जिन दो विचारों, व्यक्तियों, वस्तुओं, परिस्थितियों, स्तरों, भावनाओं के अन्तर को बखूबी उद्घाटित किया है : उससे गज़लकार भावुक, अनुभवी, सहृदय व्यक्तित्व का धनी सिद्ध होता है। इस गज़ल में रचनाकार द्वारा विविध अन्तरों को दिखाया गया है। पहला, जीवन में दुख-सुख का उतार -चढ़ाव सदा बना रहता है। इसकी मात्रा में अन्तर बना रहता है। कहीं सुख, दुखों से अधिक रहता है तो कहीं दुख, सुख से अधिक रहते हैं। दोनों ही स्थिर नहीं हैं। इसलिए दोनों का भोग करते हुए अपने व्यक्तित्व में संतुलन बनाए रखना अतिआवश्यक है। दूसरा ईमान बेचकर भ्रष्ट ढंग से कमाया धन सदैव डर का, अपयश का कारण बनता है और दूसरी तरफ एक ईमानदार व्यक्ति गौरव से सिर ऊंचा करके जीवन व्यतीत करता है। तीसरा अन्तर हीरो और जोकर का है। गज़लकार बताता है कि अगर हीरे की परख करने वाला उसे जौहरी न मिले तो वह केवल काँच के समान है, उसी प्रकार अगर किसी व्यक्ति की प्रतिभा को परखने वाला आचार्य न मिले तो वह नायक के रूप में कभी न उभर कर केवल जोकर ही बना रहता है। चौथा अन्तर किसान के जीवन का है जो सारे संसार का पेट पालता है और स्वयं उसे अधपेट खाना प्राप्त होता है। सबसे बड़ी त्रासदी तो यह है कि कर्जे के बोझ तले उसे आत्महत्या तक करनी पड़ती है। जीवन दाता स्वयं को मृत्यु देता है। पाँचवां अन्तर इस मनुष्य-देह और सांसारिकता के झूठ एवं आत्मा के सत्य होने का है। मनुष्य जिस सांसारिक ऐश्वर्य को सत्य समझकर इसके भोग में अपने असूलों का उल्लंघन करता है। यह सब झूठ है। केवल आत्मा ही सत्य है जिसने एक दिन किसी और शरीर का पोषक बन जाना है। इसके अतिरिक्त गज़लकार ने इस गज़ल में भावनाओं, संवेदनाओं एवं करुणा से विहीन और इनसे परिपूर्णव्यक्तियों के अन्तर पर भी प्रकाश डाला है कि भावुक व संवेदनशील व्यक्ति सदैव दुखी रहता है क्योंकि उस पर जीवन की अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ प्रभाव डालती हैं। इसके विपरीत इनसे शून्य व्यक्ति पत्थर के समान है जिस पर किसी परिस्थिति का कोई असर नहीं होता है। अतः वह सदैव सुखी रहता है। इससे गज़लकार एक व्यंग्यकार के रूप में भी उभरा है। इसी तरह 'नहीं है सिर्फ़ यह कविता' गज़ल में गज़लकार ने अपने समकालीन रचनाकारों को लोकहित से 'ओतप्रोत एवं कालजयी साहित्य की रचना करने का संदेश दिया है। गज़लकार कहता है:

अगर खोलो तो खुलती हैं, बहुत परते हैं कविता की अगर सूरत जमीनी है तो सीरत आसमानी है, न मैली हो न बासी हो, सुसंस्कृत और सारस्वत रहेगी, पीढ़ियों के हित सुरक्षित वह निशानी है। (पृष्ठ 21)

इसके अतिरिक्त गज़लकार ने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम और समय की मेहरबानी पर भी प्रकाश डाला है। मनुष्यों से आग्रह किया है कि अपनी धरती माँ का श्रृंगार करो क्योकि इसे हम ने बहुत दूषित कर दिया है। इसकी स्वच्छता में ही सर्वस्व मनुष्यता की भलाई निहित है। 'दोष दर्शन कर रहे' गज़ल में आज के लेखकों को रचना करते समय नकारात्मक दृष्टिकोण छोड़कर सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया गया है। यह भी आग्रह किया गया है कि वे रुढ़िगत कुरीतियों का त्याग कर अपनी रचनाओं में नयी व मौलिक संभावनाओं को स्थान दें जिससे समाज का कल्याण हो सके। ऐसे में गज़लकार कहता है :

यों अकारण क्रूरता का कर प्रदर्शन
आप कुंठा का विरेचन कर रहे हैं
नव्य की संभावनाएं रख अलक्षित
फिर पुरातन का समर्थन कर रहे हैं (पृष्ठ 23)

'माथे पे धूल मल के' गज़ल में गज़लकार ने जीवन में संभल कर चलने, कठिन परिश्रम द्वारा अपनी मंजिल प्राप्त करने, अतीत का दुःख भूलकर वर्तमान में जीने और भविष्य के सपने देखने का आग्रह किया है। इसके अतिरिक्त रचनाकार ने अपने निजी अनुभव जीवन की विविध परिस्थितियों का भी चित्रण किया है। रचनाकार कहता है बीते पे रो न इतना, हो आज का अनादर। जो

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्तमान पूरा, सपने भी देख कल में। (पृष्ठ 28)

इस प्रकार गज़लकार का कहना है कि प्रत्येक मनुष्य को अपना वर्तमान सुधारने का भरसक प्रयास करना चाहिए। 'सुनो सब लोगों' गज़ल में समय के सद्पयोग पर बल देते हुए प्रत्येक कार्य को समय पर करने, देश को उन्नति एवं प्रगति के पथ पर ले जाने, अन्याय का डटकर मुकाबला करने, अपने मजबूत इरादों से सकारात्मक क्रांतियां लाने का आह्वान किया है। इसके लिए सब को यह सत्य बताने की चेष्टा भी की है कि जिसका कोई आश्रय नहीं होता उसे परमात्मा का भरपूर सहारा मिलता है:

जिसका कोई न कहीं भी हो तो
उसका होता है यहाँ रब लोगो। (पृष्ठ 30)

'अकेल-अकेले' गज़ल आधुनिक मनुष्य जो भौतिकवाद की चकाचौंध में फंसकर अकेलेपन का शिकार होता जा रहा है, उसे अपनों के साथ मन के भाव साँझे कर और साथ चलने को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती है। इसमें उद्घाटित किया गया है कि अकेलापन विष के समान है जो व्यक्ति को अन्दर ही अन्दर ख़त्म कर देता है। अकेले रहने वाला व्यक्ति भ्रमों में फँसकर अपनी किस्मत को परिवर्तित करवाने हेतु पण्डितों के चक्कर लगाने शुरू कर देता है और कई रोगों का शिकार हो जाता है। ऐसे में 'ये एकाकीपन है जहर धीमा इसको, न खुद को खिलाओ, अकेले-अकेले, कभी भूलकर भी न तुम पंडितों को हथेली दिखाओ, अकेले-अकेले' अंत में गज़लकार ने प्रत्येक मनुष्य को संदेश दिया है कि यह जीवन बहुत सुन्दर बन जाता है जब हम इसे अपनों के साथ मिल-जुल कर, दुख-सुख बाँटकर, हँस-खेल कर व्यतीत करते हैं।

'पानी की लिखावट है' गज़ल में इस वास्तविकता पर प्रकाश डाला गया है कि आज चाहे इस उत्तर आधुनिकता के दौर में जीकर हम अपने-आप को बड़ा समृद्ध ऐश्वर्यवान एवं उच्चस्तरीय अनुभव कर रहे हैं लेकिन हमारे नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। लोगों के तन तो बनावटी प्रसाधन से बहुत सुन्दर दिखाई देते हैं परन्तु मन मलिन हैं। लोगों ने चेहरों पर मुख़ौटे पहन रखे हैं जिसके नीचे उसकी असलियत दिखाई नहीं देती। आत्मिक एवं पवित्र प्रेम का स्थान शारीरिक वासना ने ले लिया है। गज़लकार ने इसमें यह भी आश्वासन दिया है कि बुराई के ऊपर सदैव अच्छाई की जीत होती है और निराश होने की कोई बात नहीं, अच्छे दिन अवश्य आएंगे:

समृद्धि बढ़ी जितनी, उतनी घटी नैतिकता
जीवन तो उठा लेकिन, मूल्यों में गिरावट है।....
कवि हो न निराश अभी, आयेंगे ही अच्छे दिन,
ये दिन ही बुरे उनके रस्ते की रूकावट है। (पृष्ठ 65-66)

'बेटी' गज़ल में गज़लकार ने उन माता-पिता को जागृत करने और अपनी सोच को परिवर्तित करने का अनुरोध किया है, जो अपनी बेटियों को बोझ समझकर उनकी गर्भ में ही हत्या करवा देते हैं। बेटी के सद्गुणों पर प्रकाश डालते हुए विराट जी ने बताया है कि बेटियाँ घर की लक्ष्मी, रौनक और दुख-सुख की साँझेदार बनती हैं। बेटियाँ हर रिश्ते को अपनत्व के सूत्र में बाँधती हैं और कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ वह बेटों के समान कार्यरत न हों। इस गज़ल ने समाज को संदेश दिया है कि वे माता-पिता सौभाग्यशाती होते हैं जिनके घरों में बेटियाँ जन्म लेती हैं।

अंत में गज़लकार चन्द्रसेन विराट का प्रस्तुत गज़ल संग्रह उनकी गहन अन्तर्दृष्टि का परिचय देता है। इस संकलन में गज़लकार विराट जी ने समाज, जीवन, राष्ट्र का कोई ऐसा पहलू नहीं है जिसकी उपेक्षा की हो। उन्होंने अपनी गज़लों के माध्यम से समाज व उसके प्रत्येक मनुष्य को विशेषकर साहित्यकारों को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कई दिशा-निर्देश दिए हैं जिनका अनुसरण करके निश्चित तौर पर लोक-कल्याण होगा।

10, करण विहार,
डायमण्ड एवेन्यू, मजीठा रोड़
अमृतसर। 143001

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. किरण खन्ना

समकालीन कविता का आइना है
'' हिंदी की विश्वयात्रा''

भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती बल्कि यह अपने देश काल की तथा संस्कृति की आत्मा होती है। किसी राष्ट्र विशेष के नागरिक विश्व के किसी कोने में किसी भी स्वेच्छा या विवशता के अन्तर्गत स्थायी या अस्थायी रूप से जा बसें और वहां की भाषा को व्यवसायिक/व्यवहारिक/व्यापारिक/अनुप्रयोगात्मक/स्तर पर अपना ले, अपनी भाषा से ही उनकी आत्मीयता कतई कम नहीं होती। जाने-अनजाने गाहे-बगाहे उनकी अभिव्यक्ति में उनकी संप्रेषणीयता में उनकी सृज़नात्मकता में उनकी भाषा का संचार निर्झर की तरह बह निकलता है। यह अभिव्यक्ति साहित्यिक स्तर पर प्रौढ़ हो या न हो, संवेदनशीलता उसमें कूट-कूट कर भरी रहती है। उनकी छोटी-छोटी तृप्त/संतप्त इच्छाएं/चाहतें, उनकी मानसिकता में दबी कसक, उनके अवचेतन /अचेतन में छुपे अव्यक्त दर्द, उनकी भाषा का स्पर्श पाते ही कविता, कहानी, वृतांत, डायरी, लेख, संस्मरण पत्र लेखन इत्यादि कितनी विधाओं के माध्यम से कागजों के कैनवस पर शब्दों की तूलिका से चित्रित होते चले जाते हैं।

''हिंदी की विश्व यात्रा'' ऐसे ही उन तमाम सहृदयों की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का जीवंत हस्ताक्षर है जिनकी कलम से राष्ट्र एवं राजभाषा वैश्विक स्तर पर प्रचारित व प्रसारित हो रही है। यहां सर्वाधिक उल्लेखनीय एव महत्वपूर्ण तथ्य है कि इन कविताओं के विविध स्वरों में काव्य-संग्रह संपादक डॉ. राजेंद्र परदेसी को एक कृत्रिम 'एन्ट्रापी' का नयी कविता में व्यवहृत एवं अभिव्यक्त होने का अहसास हुआ है जिसके लिए चिंता जाहिर करते हुए भी वह इसे प्रासंगिक एवं सार्थक शुरुआत मान रहे हैं। 'एन्ट्रापी' का शाब्दिक अर्थ अव्यवस्था, विघटन, क्षय, अराजकता, अवसाद, परिवर्तन, चयनात्मक विशेष विशेषण प्रणाली आदि स्वीकृत है तो परिभाषिक स्तर पर इस का अर्थ है 'एक संचार का सिद्धांत। एक परिणाम की अनिश्चितता का संख्यात्मक माप'(HTTP://w.w.w kitkatwords.com)

हिंदी कविता में 'एन्ट्रापी' इन दिनों वास्तव में परिचर्चा का विषय है। नवीन कवि युवा कवि अपनी भड़ास को दबाकर नहीं रखता शब्दों के माध्यम से निकाल रहा है। यह अभिव्यक्ति वैश्विक स्तर पर है और क्योंकि हिंदी आज संपर्क भाषा के रुप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। अनगिणत देशी /विदेशी चैनल्स, प्रिंट मीडिया अत्याधिक कार्यक्रम हिंदी में ही तैयार लगे है और इसी के परिणामस्वरुप 'हिंदी' बाजार की दृष्टि से भी सशक्त भाषा बनकर उभर रही है। ऐसे में भारत के साथ-साथ, नेपाल, श्रीलंका, बल्गारिया, मिस्र, लंदन, यू.के., मारीशस, क्रोशिया, आस्ट्रेलिया, यू.एस.ए, चाड़देश, मास्को, उतर अमेरिका, सूरीनाम, गुयाना इत्यादि अनेक देशों की संवेदनशील अभिव्यक्ति को एक मंच पर लाकर इस संग्रह का प्रस्तुतिकरण वास्तव में डॉ. राजेंद्र परदेसी एवं डॉ. भास्कर शर्मा का स्तुत्य प्रयास है।

संग्रह के कवियों की अभिव्यक्ति नितांत भिन्न एवं अपने अनुभव पर आधारित है। डॉ. अंजना सुधीर : वह लौटना चाहती है-की लड़कियां नास्टले जिपाई वर्ग की प्रतिनिधि है जो संस्कृत व अंग्रेजी के बीच अपनी संस्कृति को बचाए रखना चाहती हैं। ''वह सजाती है -आरती के थाल...पकाती हैं भारतीय खाने'' तथा 'संस्कार' कविता में त्रिनिडाड का युवक हिंदी न समझ पाने की स्थिति में अंग्रेजी प्रकाशित 'दुर्गा सप्तशती' पढ़ता है 'अमेरिका को हड्डियों में न जमने दे' की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चेतावनी देती अंजना की अभिव्यक्ति में कब 'एन्ट्रापी' प्रवेश कर प्रत्येक उस प्रवासी भारतीय की संवेदना बन जाती है जो वतन वापसी को कसमसाता है किंतु अमेरिकी सुखों के हड्डियों में जम जाने की मजबूरी में लौट नहीं पाता युवा कवि अमरजीत के चेहरे बदलने की आधुनिक तकनीक लोगों की अवसरवादिता पर कटाक्ष करती है तो 'पहचान' सामाजिक वैषम्य को धिक्कारती है। 'इतिहास' लिखने वाले का अंजाम सदैव दंड ही है 'इतिहास कविता का अवसाद एक' 'दुखांत 'संवेदना है। डा. राजेंद्र परदेसी की ''परंपरा समाप्त हो जाती है'' में उभरती एन्ट्रापी पूर्ण प्रयोगधर्मिता 'नियम व कानून की आड़ लेकर .. मुंह बंद कर दिया जाता है ... परिणाम ... प्रश्न करने की परंपरा समाप्त हो जाती है' (पृ.14) कविता 'गोलमहल' युवा कवि ऋषभ देव शर्मा की कलम से निकल उन तमाम बुद्धिजीवियों /नेताओं/प्रशंसको की प्रतिभा पर प्रश्नचिन्ह लगाती है जो समय की मांग की न समझ कर मात्र संवैधानिक प्रावधानों को ही सत्ता चलाने का मूल मानते हैं कवि का विक्षोभ पढ़ते ही बनता है नेताओं की संविधान भक्ति 'यह कुर्सी जीवी कीट..' बोझ से... धरती दबा रहे हैं, मोटी एक किताब.. उसी के पन्ने चबा रहे हैं '(पृ. 69)

मुंबई की हेमा चंदानी को इतने दबाए कुचले, मसले, काटे जाने के बाद भी लड़कियों का अस्तित्व सरंक्षण हेतू, संघर्षरत रहना विस्मित करता है ''एक तो बिन बताए कोख में आ जाती हैं... फिर चाहे लाख मारो... फिर भी बच जाती हैं लड़कियां ''पृ.42

हेमा की कविता 'भूख' में भूख का मानवीय प्रतीक पाठक को विस्मित करता है भूख परेशान हैरान व शर्मिन्दा है कि उसकी अमरता/ अनश्वरता की वजह से अनेकों जिंदगियां लाचार होती है, शराफतें बेगैरत होती है और बेबसी यह की 'भूख' कभी आत्महत्या नहीं कर सकती। (पृ.44) संघर्ष के मीत कवि शुभदर्शन का विक्षोभ व्यवस्था से कम व्यवस्थापकों के प्रति अधिक है ''निर्विघ्न जारी है... राजा की यात्राएं... खरीद कर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ... कर दी कलम की नसबंदी ... खुले नाड़े हाथ में लिए.... बेसिर पहरेदार....सत्ता के गलियारे में'' पृ. 59 / शुभदर्शन का तिलिस्म का जंगल, भावनाओं का बवंडर और लोकतान्त्रिक उग्रवाद का शिकार पत्रकार गौरी लंकेश की भटकती आत्मा का विद्रोही स्वर निकालती कविता 'शीशा झूठ नहीं बोलता' वास्तव में पाठक की स्मृति में ताजा कर देती है राष्ट्रकवि दिनकर, केदारनाथ अग्रवाल, सर्वेश्व दयाल सक्सेना, मुक्तिबोध, धुमिल इत्यादि की स्पष्टब्यानी को जो कविताओं के परम्परागत अलकरणों (छन्द, अलंकार, रस आदि) को छोड़कर नवीन रुप से कविता गढ़ती है और कविता को बैंरग व कुरूप होने से बचाती है। महेश चंद्र शर्मा जी का लंदन की रंगीनियों व सुविदायों से परिपूर्ण जिंदगी के सामने अपने 'नेपाल' की भूमी को स्वर्गतुल्य बता कर लन्दन भन्दा राम्रो नेपाल कहना तथा 'भारत-नेपाल मैत्री' में दोनों देशों के लिए जनकल्याण व सम्पुष्टता की कामना नितांत सराहनीय है ''दोनों सनातन देश धरा पर... समृद्ध संस्कृति से भरपूर... शौर्य शक्ति में हैं बलशाली... दुश्मनों को चटाते धूल...''पृ. 92

नेपाल की लक्ष्मी उप्रेती 'प्रसाई' जिंदगी को पारिभाषित कर एक नितांत सरस उम्मीद का संचरण करती है ''जीवन केवल श्वासों प्रश्वासों की निरन्तरता ही नहीं... जीवन बन कर ही जीने का यत्न करना है जीवन,'' (पृ. 98) वहीं युवा कवि रामकुमार पंडित क्षेत्री 'सीमा वालों की जिंदगी के माध्यम से सैनिकों के प्रति व्यवस्था की उदासीनता का वर्णन कर निजाम को झकझोरते प्रतीत होते हैं। ''स्रोत' मुझे उनकी व्यंग्यपूर्ण व वागदिग्तापूर्ण अभिव्यक्ति लगी है जो पिछले पांच दशकों में राष्ट्र निर्माण योजनाओं के कर्णधारों के निरर्थक प्रयत्नों का बहुत सरल भाव से उपहास कर नैराश्य की स्थिति में सताधीशों की अकर्मण्यता के रेगिस्तान में स्वाति बूंद के गिर जाने और बिना मोती बने विलुप्त हो जाने की विवशता को अनायास सशक्त रुप में वर्णित कर जाती है ''एक भी रचना को'' 'बांध बांध कर... क्यूं कि ... मैंने उस देश का पानी पी लिया है...जहां /जिसमें योजना की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

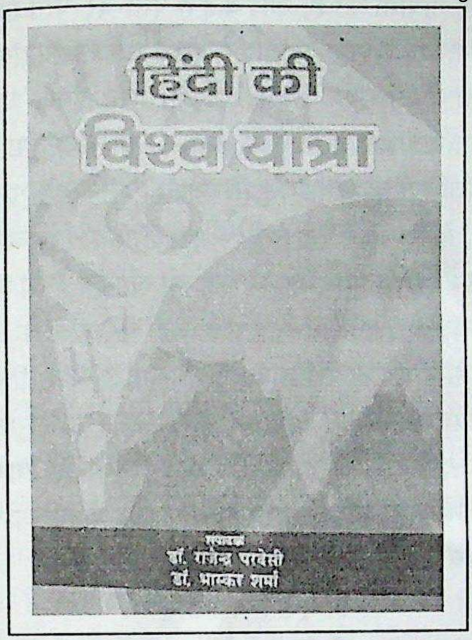

(पृ. 103)नेपाल के ही वासुदेव अधिकारी नैतिक /सामाजिक जीवन मूल्यों के विघटन को राष्ट्रीय अस्तित्व के पर्वत में 'भू-स्खलन' बताते हुए 'मिट्टी के पत्थर' के आपसी सदभाव की कामना करते हैं तो यू. के. की अरूणा सब्बरवाल अपनी कविता में महाकवयित्री महादेवी वर्मा की छाया बनने को प्रयासरत है ''बिना पते की पाति लिखकर ... मुझको चैन न आया... मन पर तेरा पता लिखा था.. किंतु बाहर न आया ...'' (पृ.123) सरहद के पार बैठे प्रियतम की कमी उनके घर को सूना कर गयी है ''मूक पड़ा है चूल्हा चौका... आगन भी है सहमा-सहमा...बर्तन भी अब नहीं झगड़ते... चूहे तक भी नहीं फटकते... बिल्ली ने आना छोड़ दिया है.... यह कैसा अन्याय किया है ?...'' (पृ 124) अरूणा का चांद को सरहदों में बांटना भी उनकी आहत संवेदना का पता दे जाता है। प्रतिष्ठित व पुरस्कृत प्रवासी साहित्यविद तेजेद्र शर्मा (यू.के)की कविता में प्रवास का संत्रास शब्दों की निर्झरी में अनायास बह उठता है ''साथ तेरा अगर मिला होता...जश्न खामोश सा नहीं होता'' (पृ.127) ''आदमी हो तुम कोई पत्थर नहीं... रोने को जब दिल करे, रोया करो '' (पृ. 126) उनकी कविता 'गिलहरी' में भारतीय नारी के सम्पूर्ण जीवन मूल्यों रस्म की मर्यादा, अस्मिता, वाणी, लज्जा इत्यादि को विदेशी नारियों के बिंदास व उन्मुक्त जीवन यापन तथा ध्वस्त मर्यादा चारित्रिक पतन से कहीं बेहतर पर उत्ताम वर्णित किया है। उनकी कविता में समकालीनता की समझ को प्रौढ़ करता है। मास्को की हिंदी के प्राध्यापिका मीनू शर्मा हिन्दी कविता में अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति सम्मानित उद्‌गार व्यक्त करती है तो 'हमारा प्यारा देश' में हिंदोस्तान के लिए उनका प्रेम सर्वत्र लक्षित है। एन्ट्रॉपी की एक सशक्त भावना से परिपूर्ण कविता 'देश बदल रहा है' मॉरीशस के हीरामन राज की प्रस्तुति है ''बच्चे-बच्चे को पता है कि वह... नर्स के डिब्बे से नहीं... सच में कहां से आता है .... देश बदल रहा है '' (पृ.155) कविता के कथ्य में एक सटीक सपाटब्यानी है 'हिंदी की दलाली खूब करता है... हिंदी प्रेमी भी कहलाता है... समाज के टुकड़े-टुकड़े करता है... अपनी बरादरी बटोरता है... देश अब बदल रहा है' (पृ.156) लंदन की अनुमपमा ज्योति निर्भया को हर तरफ उपस्थित पाती है और 'उबर काली सवेर' में 'मानवता पुन: तार-तार हो रही... बेइज्जत मां-बहनें बार -बार हो रही... कब तक आखिर कब तक' (पृ.159)

अपाहिज मौन व्यवस्था से असंतुष्ट है अनुपमा चाड देश का युवा कवि याया तो शब्दों के प्रयोग में बहुत सचेत है 'प्यारी बेटी' का प्रथम वाक्य पाठक की चेतना पर सशक्त प्रहार करता है ''कैसे जानूं मैं..कौन, किसने, कैसे, कहां से भिजवा दिया...अम्मा के पास...'' (पृ. 161) अम्मा का संघर्ष देख कर भी वह स्वयं बेटी जनने की कामना रखती है। सूरीनाम के किशन फिरतू तो स्पष्ट रुप से अपनी उम्र के उन युवाओं को लानत डालते है जो मां की कोख में रहे नौ महीनों का कर्ज न चुका सके और उन्हें रोता छोड़ दिया ''नौ माह के लिए'' (पृ. 186)। यूएसए की पल्लवी तो भारतीय सूती साड़ी में अपना आदर्श ढूढंती है। ''कोई चरखे से काती... सादी साड़ी दे दो... जो सोख सके मेरे पसीने को... जो रंगो की राजनीति से दूर बहस कर सके औपनिवेशिक मानसिकता से... खरीदो फरोख्त के रैंप से दूर... चल सके पगडण्डियों पर...'' (पृ. 184)। पल्लवी दृढ़ निश्चय की स्पष्ट वक्ता है, डरना चाहती है हटना नहीं ''लसलसे गोंद की तरह... पेड़ के तने से चिपकी... फल के साथ बीजों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बांटों... ताकि उग सको कहीं अन्यत्र... कि कल्ले कहीं भी फूट सकते हैं...'' (पृ. 184)। इस काव्य संग्रह को पढ़कर एक बारगी तो हिंदी का पाठक/अगर वह यह न जानता हो कि कविताएं नवोदित व प्रवासी कवियों की हैं। विश्वास नहीं कर पाएगा कि कविताएं प्रौढ़ कलमों से नहीं निकली हैं पर कविताओं में परम्परागत आयामों को छोड़ कर नवीन चिंतन का एक पक्ष उसे कुछ असहज (वह भी कुछ समय के लिए ही) अवश्य कर सकता है पर यह नवीन प्रयोग नहीं 'एन्ट्रापी' उसे नयी कविता की जमीन पुख्ता करती लगती है यही इस विश्व यात्रा की सुखद मंजिल है। सफल परिणति है, नवीन उपलब्धि है। साधुवाद।

डी.ए.वी महाविद्यालय अमृतसर
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

डॉ. रिंपल 'सदा'

'सन्नाटों से संवाद: सन्नाटों के पहरेदार'

काव्य-संग्रह 'सन्नाटों से संवाद: सन्नाटों के पहरेदार' की रचनाकार श्रीमति वीणा विज 'उदित' है 'सन्नाटों के पहरेदार' एक साथ व्यष्टि एवं समष्टि की भावनाओं से ओत प्रोत है काव्य संग्रह है। इस संग्रह में जीवन की बहुआयामी पर्तें हैं, और वे इन्हें परत-दर-परत खोलने में प्रयासरत हैं। एंक कविता से दूसरी कविता का संबंध और विषय निःसंदेह भिन्न रहा है। परंतु इनके पीछे की भावनाएं समाज के जिन रूपों को चरितार्थ करती हैं, वे कवयित्री के अंतरमन में रचे गए मौन को, एक-एक करके आवाज देती नज़र आती हैं, कवयित्री व्यक्ति के अन्तर्गत जहां मन की उन पर्तो को खोलती हैं जो व्यक्तिव के विकास का एक आयाम है, वहीं वे समष्टि के अन्तर्गत समाज में फैली विद्रूपतता, विक्षुप्तता, असमानता को अप्रत्यक्ष रूप में चरितार्थ करती और उसे सुधारने में लालायित नज़र आती हैं। उन्हें मनुष्य के साथ-साथ उससे जुड़ी पीड़ा, लाभ, नुक्सान, असमानता का दर्द भी विचलित करता है। तभी तो वे कह उठती है

''कैसी भूख है गरीबी की
न चूल्हे में लकड़ी
न हाथ में लाठी
न हाड़ी में दाना
न थाली में खाना
सोई तकदीर है गरीब की...''

वह जानती है कि समाज की पीड़ा का एक कारण यह गरीबी है इसलिए वह गरीब की परिस्थिति का चित्रण करते हुए, इस कारण से पीड़ित मनुष्य को न केवल चरितार्थ करती है अपितु अपने अंतर पनपे असमंजस को पाठकों तक पहुंचाना भी चाहती हैं। इसी कड़ी में वे प्रकृति के कई रूपों के प्रति स्वयं को नतमस्तक पाती है। इसकी एक उदाहरण हमें तब दिखाई पड़ती है, जब वे अपनी एक कविता 'बरगद की छैया ' में कहती है

''सदियों से पुरातन की चादर ओढ़े है बरगद
रेंगते सर्पो के बिल, उड़ती चिड़ियों के घर
फुदकते वानरों की शैया, भूत पिशाचों के डर
छांव में चैन पाते हैं, थके-हारे भूले भटके मुसाफिर ''

कवयित्री यहां बरगद की प्रशंसा करती हुई इससे जुड़े जीव जंतुओं के जीवन व मनुष्य के लाभ को दर्शाने के प्रयास में प्रकृति के इस रूप की ओर संकेत करती हैं, जिससे मानव समाज को केवल दिया ही दिया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। वे प्रकृति प्रेम में लिप्त हो, इसी बरगद के पेड़ को, त्रेता -द्वापर युग से लेकर उसे बौद्ध, शांति निकेतन तथा मानव जीवन के कई क्रियाकलापों से जोड़ती हुई इसकी सार्थकता व बड़प्पन की वास्तविक तस्वीर हमारे समक्ष रखती हैं। वे प्रकृति के ऐसे साधनों से भली-भांति परिचित दिखाई पड़ती हैं जो मानव के लिए आशा की किरण लिए हुए हैं। इसलिए अपनी कविता 'छाया की माया' में इसी ओर संकेत करती हुई कहती हैं: 'मन जिस छाया से भयभीत है वह तभी तो पनपी है जब आसपास कोई रोशनी है। कवयित्री का इस तरह कविता कहना यह दर्शाता है कि वह आशावादी विचारों की धारिणी हैं। तभी तो वे छाया की माया से पर्दा उठाते हुए उसके पनपने के वास्तव कारण को पाठक से अवगत कराते हुए रोशनी के रूप में आशा की कहानी बुनती दिखाई देती हैं।'

कवयित्री अपने भीतर पैदा हुए तमाम सवालों को एक-एक कर न केवल समझती हैं अपितु उसके उत्तर भी गढ़ती हुई दिखाई देती हैं। वह समय के महत्व को इसी रूप में प्रयोग में लाती है, जब वे अपनी कविता 'वक्त' में कहती हैं कि जवार भाटे-सी उभरती रुबाईयां मरती नहीं, पुनः नव-प्राण ले वक्त के साथ बढ़ती हैं। वास्तव में वे समय के महत्व को समझती हुई जीने को लालयित हैं। तभी वे कह उठती हैं :-

''आओ वक्त के कुछ लम्हें चुरा ले
आपस में बांट थोड़ा मुस्करा ले...।''

इसी प्रकार कवयित्री प्रेम के वास्तविक रूप से भी परिचित दिखाई पड़ती हैं। इसी लिए वे अपनी कविता 'प्रेम-तुम्हारो' में कहती हैं:

''खिलती मुस्काने तुमसे हैं
जीवन मेरा है प्रेम तुम्हारा
प्रात: सन्ध्या सब सिमट गए हैं
मूंदे नयनों में बसा रूप तुम्हारा
चातक बन स्वाति नक्षत्र निहारूं
चकोर बावरी चंदा को पुकारूं...''

कवयित्री यहां प्रेम का वर्णन करती हैं। वह सीधे-सीधे राधा कृष्ण के प्रेम से जुड़ता दिखाई देता है। जहां एक दूसरे के प्रेम में प्रात: व संध्या सिमट कर एक हो गए हैं अर्थात् हर प्रत्येक क्षण प्रेम का आभास ही रहता है तथा चातक बन स्वाति को निहारने की उमंग जागृत हो गई है और मूंदे नयनों में भी अपने प्रियतम का मुख दिखाई देता है। प्रेम के इस नितांत निर्मल अनुभव को इतने सहज ढंग से चरितार्थ करना दर्शाता है कि कवयित्री के अन्तर्मन में प्रेम की निर्मल धारा बह रही है, जो उसे शेष दुनिया से पृथक करती है।

कवयित्री के अन्तर्मन में बसी सुरंगें, जिनकी गहराई में जाकर वे स्वयं को अंधेरों से बाहर लाती हैं। अपनी कविता 'सन्नाटों के पहरेदार' में वे इसी ओर संकेत करती हुई कहती हैं:-

''भीतर छिपे सन्नाटे
कब तक रहते खामोश
उम्र तमाम होती रही
चुप्पी टूटी आया होश... न रुकेगा वेग यह/स्तब्ध हैं
सन्नाटों के पहरेदार''

कवयित्री स्वयं को इन गहरी सुरंगों से निकाल लाने में न केवल सफल होती हैं अपितु स्वयं की चुप्पी तोड़, होश में आने की बात स्वीकार कर, वे पाठकों को भी एक संदेश देती हैं ''अपदीपो भव:'' अर्थात् अपना दीपक स्वयं बनो। यहां कवयित्री पर अप्रत्यक्ष रूप से बौद्ध धर्म की विचारधारा का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

कवयित्री के जज्बों का एक रंग यह भी दिखाई देता है जिसमें वे समाज में फैली सभ्यता, चीखो पुकार, रक्तिम जल, चीखें, रक्तसने हाथों में निर्दोषों की आहें सुनाई पड़ती हैं। उनकी कविता 'रक्त से सींची धरा' इसका श्रेष्ठ उदाहरण है :-

'रक्त ही रक्त के छींटे बिखरे हैं चहुं ओर
माटी रुग्ण हो गई है,
हरियाली में फूटा है कोढ़......
हवाओं में समा गई है गूंज चीखो-पुकार की
रक्त सने हाथ दे पाएंगे क्या सांत्वना दुलार की
निर्दोषों की आहों से अम्बर तो डिग जाएगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

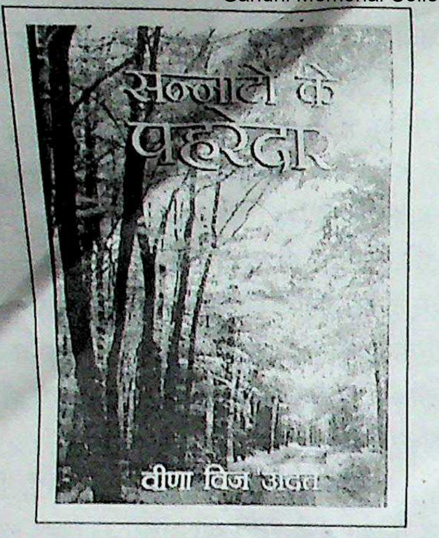

दुर्दान्त अथाह सागर भी व्यथित हो डोल जाएगा....
खून कर इंसानियत का जुल्म डंका बजाएगा
रक्त से सींची धरा पर रक्त का पौधा लहराएगा।'

समस्त काव्य-संग्रह पढ़ने से ज्ञात होता है कि कवयित्री अत्यंत संवेदनशील हैं। वे अपनी कविताओं के अन्तर्मन में वे सन्नाटे समेटे हुए हैं जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि ये हमारे भीतर भी कहीं व्याप्त है, परंतु कवयित्री ने इन्हें चरितार्थ करते हुए जिस सहजता का प्रभाव दिया है उससे ज्ञात होता है कि वे साधारण होते हुए भी साधारयता से भिन्न हैं। कवयित्री के मन में जहां व्यष्टि रूप के अन्तर्गत उथल-पुथल, पीड़ा, विषाद, द्वन्द्व, अवसाद और उनसे जूझने की शिद्दत दिखाई देती है, वहीं समष्टि के अन्तर्गत समाज में फैली गलत धारणाओं, विचारों रीति-रिवाजों के प्रति एक रंज, रोष व शिकायत दिखाई देती है। कवयित्री 'गरीबी', 'तीसरी बेटी',ऐसी ही शिकायतें हैं जो हमारे समाज के उस भयावह रूप का चित्रण करती हैं जिन्हें मनुष्य होने पर सवाल खड़े हो जाना स्वाभाविक है।

'बढ़ते हैं कदम वर्तमान के थपेड़े सहते हुए,
राह में आए रोड़ों की ठोकरों से टकराते हुए
दूर क्षितिज में गिरकर सितारे अस्तित्व खोते हैं
शमां के दामन में जलते पतंगे देख दिल रोते हैं।
अधूरी इच्छाओं के दृश्य चारों ओर दृष्टिगोचर होते हैं
जब मजबूरी के आंसू समुद्रों में तूफान लाते हैं।'

कवयित्री ने इस काव्य-संग्रह में एक गज़ल का शुमार अंगूठी में जड़ित नगीने की तरह भी किया है। 'ख़ता' गज़ल उर्दू जुबान का सुंदर उदाहरण है। शिद्दत, बेखुदी, तसव्वुर, इल्जाम, आरजू, कायनात, लफ्ज, तद्भव शब्दावली के सुंदर उदाहरण हैं।

''तसव्वुर ने उनके चैन हराम कर दिया
किसको दीजे इल्जाम आशिकी में
अपने ही हाथों का काम तमाम कर दिया।''

कवयित्री ने राष्ट्र भाषा हिंदी पर भी चंद कविताएं लिखी हैं। जो हिंदी के स्वरूप, गौरव, विकास व विस्तार को बखूबी अभिव्यक्त करती हैं। वे कहती हैं कि हिंदी की माटी में ही वीरों के शहादत की कथाएं रची गई। साहित्यकारों ने इसी भाषा में हिंदुस्तान के आंगन में ज्ञान की रोशनी जलाई। अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोषों में हिंदी की जय-जय कार है। यह वह भाषा है जो गगन चुम्बी पर्वतों की उंचाईयों पर पनपी है। सतपुड़ा व विन्धयांचल की गोद में मुस्कराई है। भारत की नदियां इसी भाषा में खुशहाली का पैगाम देती हैं। फौजी जवानों के कमांड में यही भाषा सजी है। यथा:

''सर्वव्यापक का स्तुतिगान बसा हिंदी में
दैविक शक्तियां बरसाती मेघ मल्हार
विजयी भव: के आशीर्वाद बरसते हिंदी में
मातृ भाषा में चिंतन का सार्वभौमिक अधिकार।''

इस तरह यह स्पष्ट होता है कि इस काव्य-संग्रह 'सन्नाटों के पहरेदार' में कवयित्री वीणा विज 'उदित' ने अपनी कविताओं द्वारा जो संवाद रचने का प्रयास किया है, वह वास्तव में मानव समाज, विशेषत: भारतीय परिवेश के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है। कवयित्री अपनी बात को सार्थक करते हुए जिस प्रकार सहज भाषा का प्रयोग करती हैं, उससे स्पष्ट होता है कि वे किसी परिपाटी अथवा नियमों में न बंध कर, स्वतंत्रता पूर्वक अपनी बात प्रस्तुत करने में तत्पर व समर्थ हैं। जिसके परिणामस्वरूप उनका यह काव्य-संग्रह एक ताजा हवा के झोंके-सा अनुभव करवाता है।

असि. प्रोफेसर
माता गंगा गर्ल्ज कॉलेज, तरनतारन

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बरोह परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

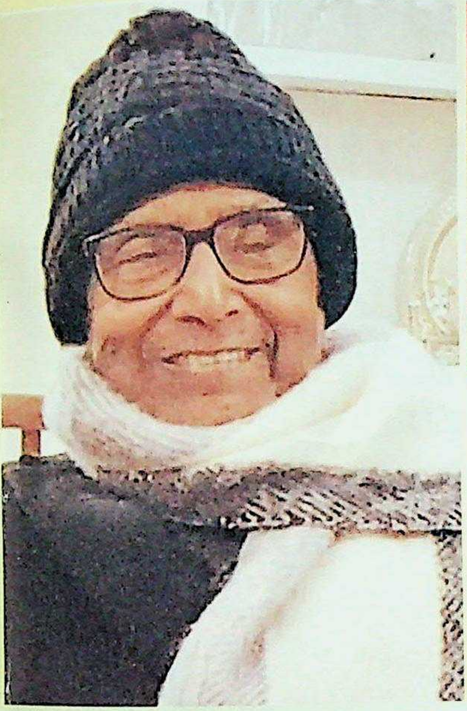

हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक, सर्जक, शिक्षाविद, डॉ. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु जी को हिन्दी आलोचना और साहित्य में अवदान के लिए 14 जनवरी को बनारस में आयोजित कार्यक्रम में विद्याश्री न्यास द्वारा वर्ष 2019 'विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया।

दर्द जाए सुकून लाए

भारत का पहला 7 तेलों से तैयार ट्यूब

PAINKOOL

गुटनों का दर्द | जोड़ों का दर्द | गर्दन का दर्द

पीठ का दर्द | मासपेशियों का दर्द | सर्दी, खांसी

A Formula Researched & Developed by S.P. Singh Chawla, M.Sc. (Chemistry)

9814175205

सभी मैडीकल स्टोर से खरीदें। 15 gm Tube Rs. 62/-, 25 gm Tube Rs. 82/-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

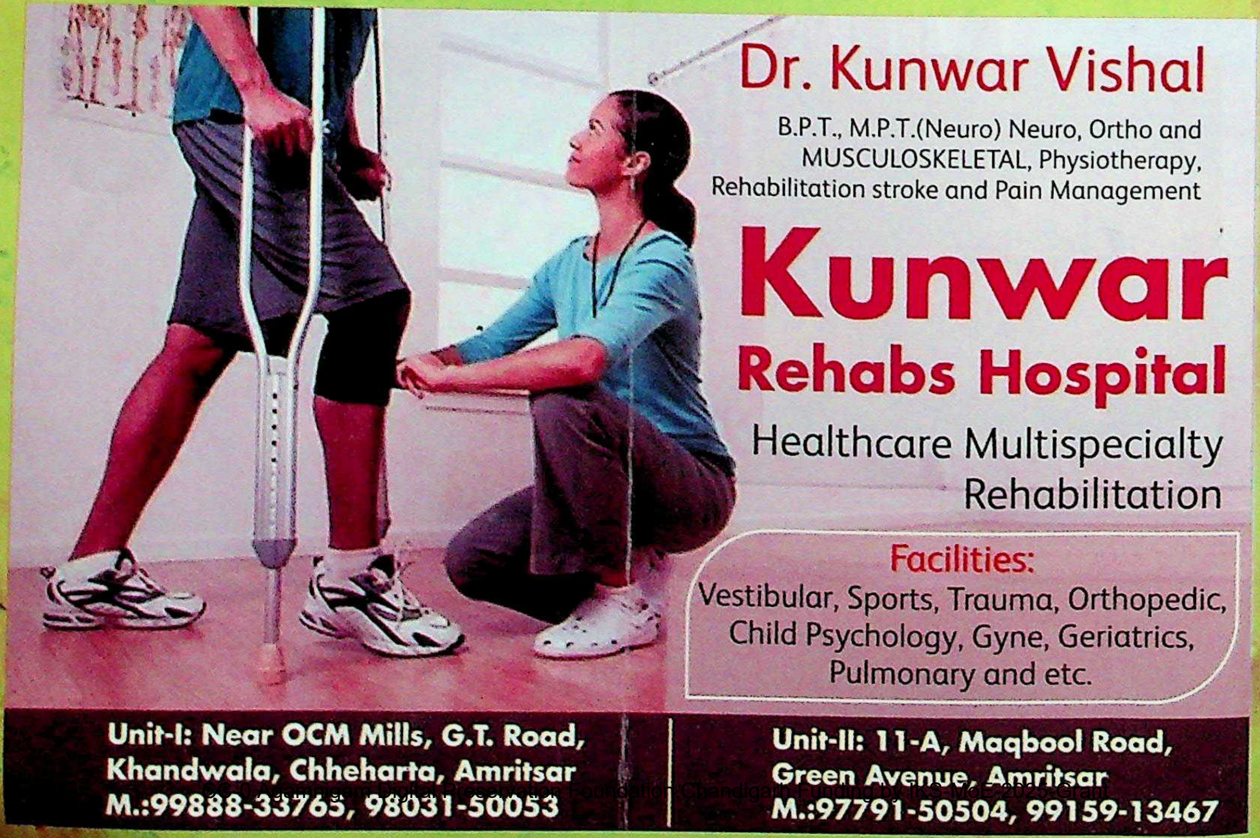

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant